जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

चूरू

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 256906, 256907, फैक्सः- 01562-256908 वर्षः 17 संख्याः 15 प्रभात चूरू, मंगलवार 13 मई, 2025 पो. रजि. न. चूरू/084/2019-21 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

मोदी का देश को संबोधन जोशीला तो था, पर, ट्रंप के दावे के बारे में चुप रहा

दिल्ली अभी वॉशिंगटन को रूष्ट नहीं कर सकती, क्योंकि कई मामले इस वक्त दांव पर हैं, जैसे अडानी उद्योग समूह का मामला

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 मई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्र को अपने 23 मिनट लंबे संबोधन में जहाँ देश की सशस्त्र सेनाओं और अर्द्धसैनिक बलों द्वारा शुरु किए गए ऑपरेशन सिंदूर की सफलता की सराहना की, वहीं, उन्होंने अमेरिका की मध्यस्थता से भारत और पाकिस्तान के बीच हुई विवादित युद्धविराम संधि पर कोई टिप्पणी नहीं की। उन्होंने यह जरूर कहा कि जब तक पाकिस्तान आतंकवाद और आतंकवादियों का समर्थन करता रहेगा, तब तक उससे कोई बातचीत नहीं होगी।

- मोदी ने यह भी कहा कि भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ ''मिलिटरी एक्शन'' को केवल ''पॉज़'' किया है तथा स्थगित नहीं किया है और अब भारत, पाकिस्तान के आचरण व व्यवहार पर कड़ी नज़र रखेगा तथा सेना को पूर्ण तैयार व सजग रहने की हिदायत दी गई है तथा पाकिस्तान की ओर से जरा भी आतंकवादियों को मदद करने वाली घटना सामने आई तो भारत बमबारी पुनः शुरु कर देगा।।

प्रधानमंत्री का राष्ट्र के नाम यह संबोधन मीडिया द्वारा सरकार के प्रचार अभियान को विश्वसनीय बनाने की दिशा में सोचा-समझा प्रयास प्रतीत हो रहा है। इस अभियान का उद्देश्य सरकार की सकारात्मक छवि प्रस्तुत करना है।

हिंदी में भाषण देते हुए, मोदी ने अमेरिकी मध्यस्थों द्वारा इस धारणा को दूर करने की कोशिश की कि भारत और पाकिस्तान ने किसी तटस्थ स्थान पर बातचीत करने पर सहमति जताई है। उन्होंने दोहराया कि आतंक और बातचीत साथ-साथ नहीं चल सकते और कहा, ''खून और पानी एक साथ नहीं बह सकते।''

प्रधानमंत्री ने ऑपरेशन सिंदूर का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया बताया कि भारतीय सशस्त्र बलों ने किस तरह पाकिस्तान की सैन्य ठिकानों और आतंकी ठिकानों को नष्ट किया।

प्रधानमंत्री विपक्ष के इस आरोप का खंडन करने की कोशिश कर रहे थे कि भारत ने पाकिस्तान से बातचीत करने पर सहमति जताई है। लेकिन मोदी ने बड़ी सावधानीपूर्वक अपने मित्र डॉनल्ड ट्रंप की घोषणा का खंडन करने से बचने की कोशिश की जो यह दावा करते हुए नहीं थक रहे हैं कि उनके प्रशासन ने दोनों देशों को न केवल युद्धविराम के लिए राज़ी किया, बल्कि एक परमाणु संघर्ष को टाल दिया।

ऐसा लग रहा है कि मोदी के मित्र राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने उन्हें बड़ी मुश्किल स्थिति में पहुंचा दिया है। ट्रंप ने ''ट्रुथ सोशल'' पर पोस्ट किया कि वे कश्मीर समाधान के लिये भारत और पाकिस्तान के साथ काम करना चाहते हैं। और ट्रंप की इस पोस्ट से विपक्ष को भाजपा के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार की आलोचना करने का सुअवसर मिल गया। अब विपक्ष मोदी सरकार पर खुलकर आरोप लगायेगा कि सरकार देश के एक सर्वाधिक संवेदनशील द्विपक्षीय मामले में तीसरे पक्ष का हस्तक्षेप होने दे रही है।

प्रधानमंत्री मोदी की चुप्पी असहज करने वाली है, लेकिन अमेरिका के साथ एक महत्वपूर्ण व्यापार समझौता दांव पर होने के कारण, वे सार्वजनिक रुप से ट्रंप की ''शांति दूत'' की उनकी विशिष्ट छाप वाली भूमिका को खारिज नहीं कर सकते। वहीं, देश के भीतर उनके समर्थक उन्हें शक्ति प्रदर्शन की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहे हैं, और सरकार का छवि-निर्माता तंत्र इस कहानी पर पुनः नियंत्रण पाने के लिए पूरी तरह सक्रिय है तथा यह स्पष्ट करना चाहता है कि भारत वॉशिंगटन से निर्देश नहीं लेता।

हालांकि, ट्रंप और मोदी, दोनों के ही अपने-अपने अहम् हैं, लेकिन आज तक प्रधानमंत्री मोदी ने भारत और पाकिस्तान के बीच युद्धविराम की घोषणा के पूरे घटनाक्रम पर एक शब्द भी नहीं कहा है। उनकी चुप्पी रहस्यमय है, लेकिन जानकार सूत्रों का मानना है कि नई दिल्ली अमेरिका को नाराज़ नहीं कर सकती, क्योंकि इससे कई बड़ी चीजें जुड़ी हैं, जिन्हें आम नागरिक नहीं समझ सकते। इनमें अडानी समूह से संबंधित मुद्दे भी शामिल हैं।

विपक्ष के लिए ट्रंप की टिप्पणी कोई कूटनीतिक चूक नहीं है, बल्कि भारत की संप्रभुता के लिए सीधी चुनौती है, और वे मांग कर रहे हैं कि इस मुद्दे पर संसद में ही जवाब दिया जाए।

इससे पहले, मोदी ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर अब देश की सुस्थापित आतंकवाद -विरोधी नीति का हिस्सा है और यह इस दिशा में एक नया मानक स्थापित करता है। प्रधानमंत्री ने सशस्त्र बलों, खुफिया एजेंसियों और वैज्ञानिकों की सराहना की कि उन्होंने पाकिस्तान के खिलाफ सफल अभियान को अजाम दिया।

इस बात पर जोर देते हुये कि भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई सिर्फ रोकी है, मोदी ने कहा कि भारत, इस्लामाबाद की हर गतिविधि पर सूक्ष्म और कड़ी नजर रखे हुये हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा, ''हमने पाकिस्तान के आतंक और सैन्य ठिकानों के खिलाफ हमारी जवाबी कार्रवाई को मात्र थोड़ी देर के लिए रोका है। आने वाले दिनों में, हम पाकिस्तान की गतिविधियों को परखेंगे तथा उसके रुख को देखेंगे। भारत की तीनों सेनाएं- वायुसेना, थलसेना और नौसेना- बीएसएफ और अर्धसैनिक बल लगातार सतर्क हैं। सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

महेश जोशी की न्यायिक हिरासत 25 मई तक बढ़ी

जयपुर, 12 मई। ईडी मामलों की विशेष अदालत ने सोमवार को जल जीवन मिशन के करीब 900 करोड़ रुपए घोटाले से जुड़े मामले में पूर्व मंत्री महेश जोशी की न्यायिक हिरासत अवधि 25 मई तक बढ़ा दी है। वहीं अदालत ने जोशी को आगामी सुनवाई पर व्यक्तिगत तौर पर कोर्ट में पेश करने को कहा है।

जोशी के अधिवक्ता दीपक चौहान ने बताया कि पत्नी के निधन पर कोर्ट ने उन्हें 8 से 10 मई तक तीन दिनों की अंतरिम जमानत दी थी। अंतरिम जमानत अवधि खत्म होने के बाद उन्होंने 11 मई को कोर्ट आदेश की पालना में जेल में सरेंडर कर दिया था। वहीं, इससे पहले उन्हें पत्नी के अंतिम क्रियाकर्म व धार्मिक रिवाजों के निर्वाह के लिए कोर्ट ने 28 अप्रैल को चार दिन की अंतरिम जमानत दी थी। गौरतलब है

- विशेष अदालत ने ईडी को अगली सुनवाई पर महेश जोशी को व्यक्तिगत तौर पर पेश करने को कहा।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

जयपुर में होंगे आईपीएल के 3 मैच

जयपुर , 12 मई। राजस्थान रॉयल्स के वाइस प्रेसिडेंट राजीव खन्ना ने बताया कि इंडियन प्रीमियर लीग 17 मई से फिर शुरू होगा। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने आईपीएल का री-शेड्यूल जारी कर दिया है। 6 वेन्यू पर लीग स्टेज के बचे हुए 13 मैच होंगे। इनमें एक वेन्यू जयपुर का सवाई मानसिंह स्टेडियम भी है।

बीसीसीआई ने जयपुर में तीन मैच कराने का फैसला किया है।

मोदी की नयी ''न्यूक्लियर डॉक्ट्रिन''

मोदी ने अपने देश के नाम संदेश में साफ कहा, कि पाकिस्तान की ''न्यूक्लियर बम'' की धमकी के आगे नहीं झुकेगा भारत

-अंजर रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 मई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बयान दिया है कि पाकिस्तान भले ही कोई भी परमाणु धमकी दे, इसके बावजूद भारत आतंकवाद के खिलाफ अपनी लड़ाई से कोई समझौता नहीं करेगा।

मोदी का आज का बयान भारत के परमाणु सिद्धांत के बारे में बहुत स्पष्ट तरीके से कई भ्रमों को दूर करता है, जो युद्धविराम की घोषणा के बाद उत्पन्न हुए थे।

यह बयान इस संदर्भ में प्रासंगिक है, क्योंकि कुछ समय से यह चर्चा हो रही थी कि भारत और पाकिस्तान के बीच अचानक हुआ युद्धविराम संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा मध्यस्थता किए जाने के कारण था, क्योंकि पाकिस्तानी पक्ष भारत पर तत्काल परमाणु हमला करने की योजना बना रहा है।

यह कहानी तब और भी बढ़ गई थी, जब भारतीय सूत्रों या प्रधानमंत्री द्वारा सीज़फायर की जानकारी देने से पहले ही डॉनल्ड ट्रंप ने इसकी घोषणा कर दी और जब डॉनल्ड ट्रंप ने आज बयान दिया कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान दोनों से ही व्यापार बढ़ाने का वादा किया था, जिसके कारण दोनों देशों के नेताओं ने युद्धविराम समझौता कर लिया तो यह बात और उभर कर सामने आई। दोनों देशों के बीच घृणा और तनाव को देखते हुए यह बयान काफी हास्यास्पद लगता है कि दोनों देश अमेरिका द्वारा ट्रेड की पेशकश करने पर युद्धविराम और शांति को तुरंत स्वीकार करने को मान गए।

इसके साथ ही घटनाओं का एक और संस्करण भी है। अमेरिकी राष्ट्रपति यूक्रेन में शांति स्थापित करने में पूरी तरह से असफल रहे हैं और रूस ने उनके सभी प्रस्तावों को दृढ़ता से नकार दिया है। डॉनल्ड ट्रंप को दक्षिण एशिया में युद्धविराम करवाकर ''डील मेकिंग''

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- मोदी का यह वक्तव्य इस घड़ी में बहुत महत्व रखता है, क्योंकि चर्चा फैली थी, कि अमेरिका दोनों देशों के बीच ''सीज़फायर'' करवाने के मसले में आनन-फानन में इसलिये कूदा क्योंकि ट्रंप को उसकी ''इन्टैलिजेन्स एजेंसियों'' ने खबर दी थी कि, पाकिस्तान तुरंत भारत पर ''न्यूक्लियर स्ट्राइक'' करने को तैयार खड़ा है।
- इस चर्चा को इस बात से कुछ पुष्टि मिली, कि ''सीज़फायर'' की घोषणा ट्रंप ने पहले कर दी बाद में भारतीय प्र.मंत्री व सूत्रों ने ''सीज़फायर'' की पुष्टि की थी।
- दूसरी चर्चा यह थी कि, ट्रंप, यूक्रेन व रुस के बीच में शांति स्थापित कराने में सफल नहीं हो पाये थे, अतः वे भारत-पाक के बीच सीज़फायर की घोषणा करके, अपनी डील -मेकिंग की प्रतिष्ठा को कुछ हद तक पुनः स्थापित करना चाहते थे।
- अब नवीनतम चर्चा यह है कि, अमेरिका ने चीन से ''टैरिफ वॉर'' में कुछ समझौता सा कर लिया है। अतः भारत अकेला सा पड़ गया, क्योंकि चीन तो पहले ही घोषणा कर चुका है कि, वह पाकिस्तान के साथ है। अतः अमेरिका तटस्थ हो गया तो लौटकर भारत को पुराने मित्र रुस के निकट ही जाना पड़ेगा।

ट्रंप ने मोदी को अटपटी स्थिति में डाला

भारत-पाक विवाद पर मध्यस्थता का प्रस्ताव देकर, ट्रंप ने पाकिस्तान की भारी मदद की

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 मई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पाकिस्तान के साथ युद्धविराम के निर्णय पर घरेलू असंतोष को खत्म करने के लिए एक भावनात्मक भाषण दिया, जिसमें उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप द्वारा कश्मीर पर मध्यस्थता के प्रस्ताव का उत्तर देने कोशिश की, लेकिन अप्रत्यक्ष रुप से।

मोदी के संबोधन से कुछ ही घंटों पहले, अमेरिकी राष्ट्रपति ने एक बार फिर भारत और पाकिस्तान के बीच बड़े संघर्ष को रोकने का श्रेय लेने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि उन्होंने दोनों देशों के नेताओं को यह चेतावनी दी थी कि यदि वे युद्धविराम पर सहमत नहीं होते तो अमेरिका इन दोनों देशों के साथ व्यापार नहीं करेगा। ट्रंप ने इजरायल-हमास युद्ध और रुस -यूक्रेन संघर्ष को रोकने की कोशिश की थी, लेकिन सफल नहीं हो सके। इसलिए, वे भारत-पाकिस्तान युद्ध को बढ़ने से रोकने का श्रेय लेना चाहते हैं। इस प्रक्रिया में उन्होंने भारत को पाकिस्तान के बराबर रखकर कश्मीर मुद्दे का अन्तर्राष्ट्रीयकरण किया है।

- इस प्रस्ताव से कश्मीर विवाद का अंतर्राष्ट्रीयकरण हो गया, जो पाकिस्तान सदा से चाहता था।
- मोदी ने इस विषय को हल्का कर दिया, यह कह कर कि, ''सीज़फायर'' नहीं हुआ है, केवल तत्कालिक ठंडे छींटे दिये हैं और अगर पाकिस्तान ने पुनः आंतकवादियों की गतिविधियों में मदद की तो भारत पुनः बमबारी करेगा।

प्रधानमंत्री मोदी ने अप्रत्यक्ष रुप से ट्रंप की स्थिति का जवाब देते हुए कहा कि पाकिस्तान का ''परमाणु झांसा'' भारत को प्रभावित नहीं करेगा और भले ही युद्ध रोक दिया गया हो, भविष्य में पाकिस्तान की ओर से भारत में आतंकवाद फैलाने की कोशिशों के मामले में भारत के सैन्य विकल्प खुले रहेंगे। प्रधानमंत्री ने वैश्विक समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि पाकिस्तान के साथ संभावित वार्ता केवल आतंकवाद और पाक अधिकृत कश्मीर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पेपर लीकः एसओजी ने एक और एसआई को गिरफ्तार किया

जयपुर, 12 मई (का.सं.)। स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एस.ओ.जी.) की टीम ने सोमवार को उपनिरीक्षक भर्ती परीक्षा-2021 पेपर लीक मामले में एक और प्रोबेशनर उप निरीक्षक (एस.आई.) समेता कुमारी को गिरफ्तार किया है।

अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस एस.ओ.जी. वी.के. सिंह ने बताया कि ट्रेनी एसआई से पहले पूछताछ की

- पुलिस अनुसंधान के अनुसार, उपनिरीक्षक भर्ती परीक्षा 2021 में आरोपी एसआई समेता कुमारी ने लिखित परीक्षा में अपने स्थान पर डमी संगीत विश्नोई को बैठाया था।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

''सीज़फायर'' की घोषणा के बाद कर्नाटक, सरकार के दो साल पूरे होने का जश्न जोश से मनाएगा

एक बार, भारत-पाक युद्ध के हालात के कारण कर्नाटक ने सरकार की दूसरी वर्ष गांठ का कार्यक्रम रद्द करने का मन बना लिया था

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 मई। अगर भारत-पाकिस्तान युद्ध और लम्बा खिंचता, तो कर्नाटक सरकार अपने कार्यकाल के दो वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित होने वाले समारोहों को स्थगित कर देती। लेकिन अब, चूँकि युद्धविराम की घोषणा हो गई है, इसलिये राज्य सरकार इस अवसर पर कई कार्यक्रमों और समारोहों की योजना बना रही है।

इस कार्यक्रमों की सूची में सबसे ऊपर है- लाभार्थियों को एक लाख ''पट्टा खाता'' (जमीन के दस्तावेज) का वितरण। यह चुनावी वादा कांग्रेस ने अपने चुनाव घोषणा पत्र में किया था।

- इस अवसर पर सरकार एक लाख पट्टे वितरित करेगी। जैसा कि विदित ही है, यह कांग्रेस सरकार का चुनावी वादा था, जो घोषणा पत्र में दोहराया गया था।

उपमुख्यमंत्री डी.के. शिव कुमार ने आज इसकी घोषणा कर दी। शिव कुमार ने कहा, ''हमने जो वादा किया था, उसे पूरा कर दिया है। यह समारोह केवल सरकार तक सीमित नहीं है, इसकी परिधि में राज्य के सभी लोग हैं। इस अवसर पर हम एक लाख ''पट्टा खाता'' जारी करेंगे।''

शिव कुमार ने आगे कहा, ''हम हमारी सरकार के दो वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित होने वाले समारोहों को, सीमा पर चल रहे संघर्ष के कारण, स्थगित करने के बारे में सोच रहे थे। अब, चूँकि युद्धविराम हो गया है, हमने यह कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय ले लिया है। हमने जिला-प्रभारी मंत्रियों तथा विधायकों से कहा है कि वे जिला-स्तरों पर पार्टी कार्यकर्ताओं और अधिकारियों की मीटिंग आयोजित करें।''

शिव कुमार ने कहा, राजस्व विभाग एक लाख पट्टा खाता जारी करेगा, जैसा कि कांग्रेस ने अपने चुनाव घोषणा पत्र में वादा किया था। उन्होंने कहा, ''हम इस कार्यक्रम के लिये राष्ट्रीय नेताओं को आमंत्रित करेंगे।''

जब उनसे ''भारतीय मामलों, जिनसे भारत अपने स्तर पर निबटेगा, पर किसी बाहरी सहायता या हस्तक्षेप को खारिज करने वाले) श्रीमती इंदिरा गांधी के बयान के बारे में प्रश्न किया गया, जो इस समय वायरल हो रहा है तथा जिसे केन्द्र सरकार की सीधी आलोचना माना जा रहा है, तो उप मुख्यमंत्री ने कहा, ''मैं इस पर टिप्पणी करना नहीं चाहता। इस मुद्दे पर पार्टी के विचार हमारे राष्ट्रीय नेता ही व्यक्त करेंगे।''

प्र.मंत्री नहीं आए तो सर्वदलीय बैठक का बहिष्कार करेगी कांग्रेस

नयी दिल्ली, 12 मई। कांग्रेस ने कहा है कि पहलगाम हमले के बाद दो बार सरकार ने सर्वदलीय बैठक बुलाई है, लेकिन अब जब सर्वदलीय बैठक होगी और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नहीं आए तो कांग्रेस बैठक का बहिष्कार करेगी। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता भूपेश बघेल ने सोमवार को यहां पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा कि पहलगाम मुद्दे पर पहले बुलाई गई सर्वदलीय बैठकों में प्रधानमंत्री को मौजूद रहना चाहिए था, लेकिन यदि वे

- कांग्रेस के नेता भूपेश बघेल ने पार्टी मुख्यालय पर पत्रकारों को बताया, प्रधानमंत्री पहली दो बैठकों में भी नहीं आए, जबकि उन्हें आना चाहिए था।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भारत-पाक युद्ध में दो ''वैपन सिस्टम्स'' को भी पैनी नज़र से आंका गया

पाकिस्तान के 80 प्रतिशत हथियार, चीन से आए हैं तथा दूसरी ओर भारत के अस्त्र-शस्त्र मूलतः पश्चिमी देशों से प्राप्त किये गये हैं

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 मई। कुछ प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मीडिया संस्थानों ने वर्तमान भारत-पाकिस्तान टकराव को रक्षा तकनीकों की प्रतिस्पर्धा में लगे खिलाड़ियों- एक ओर चीन और दूसरी ओर पश्चिम- के बीच के प्रॉक्सी युद्ध के रूप में प्रस्तुत किया है।

ये मीडिया संस्थान इस संघर्ष को चीनी हार्डवेयर, जो पाकिस्तान द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे हथियारों का लगभग 80 प्रतिशत है और भारत द्वारा इस्तेमाल की जा रही पश्चिमी रक्षा प्रणालियों और हथियारों के बीच की लड़ाई के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। ये संस्थान इन प्रणालियों का मूल्यांकन पश्चिमी रक्षा और रणनीतिक विशेषज्ञों के हवाले से कर रहे हैं।

चीन ने एक नई महाशक्ति के रूप में अपनी भूमिका स्थापित करने के लिए आपातकालीन आधार पर हथियार और उच्च तकनीक रक्षा उत्पादन उद्योग को विकसित किया है, जिससे वह अमेरिका और उसके सहयोगियों का प्रतिद्वंद्वी बन सके। चीन ने पिछले चार दशकों से कोई युद्ध नहीं लड़ा है और उसके विकसित किए गए हथियारों का अब तक किसी वास्तविक युद्ध स्थिति में उपयोग नहीं हुआ है।

चीन ने पाकिस्तान की सेना के आधुनिकीकरण में सक्रिय रूप से योगदान दिया है और देश को आसान शर्तों पर हथियारों की आपूर्ति की है, मुख्यतः इस उम्मीद पर कि इनका उपयोग भारत के साथ किसी वास्तविक संघर्ष में किया जा सके। अनुमानों के अनुसार, पाकिस्तान के शस्त्रागार का कम से कम 80 प्रतिशत हिस्सा चीन में बने हथियारों का है।

इसके मुकाबले भारत अब तक मुख्य रूप से रूस निर्मित हथियार प्रणालियों पर निर्भर रहा है। केवल हाल ही में भारत ने पश्चिमी स्रोतों से, विशेष रूप से फ्रांस से, हथियारों की बड़ी खरीद की है। इस संदर्भ में, पश्चिमी मीडिया कुछ पाकिस्तानी स्त्रोतों का हवाला देकर यह बताने में लगा है कि कम से कम एक भारतीय राफेल विमान को पाकिस्तानी लड़ाकू विमानों ने मार गिराया है। अनाम फ्रांसीसी स्त्रोत ने भी इस दावे की पुष्टि की और कथित रूप से कहा कि पाकिस्तानियों ने एक राफेल विमान को गिराया है।

चूंकि पाकिस्तान ने मुख्य रूप से चीन से बने लड़ाकू विमान इस्तेमाल किए हैं, इसलिए पश्चिमी विश्लेषक चीनी तकनीक की श्रेष्ठता की बात कर रहे हैं। हालांकि, किसी भी विश्लेषक और उनके स्त्रोत ने यह नहीं बताया कि क्या पाकिस्तानियों ने वास्तव में गिराए गए राफेल के मलबे को दिखाया है या नहीं।

ऐसी स्थिति में भारत सरकार को सामने आकर वास्तविक स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए। जब हवा में 100 से ज्यादा विमानों की भिडंत हुई हो तो एक विमान का नुकसान कोई असाधारण बात नहीं है।

हालाँकि, कुछ विश्लेषक भारतीय पायलटों द्वारा विमान को उड़ाने की शैली या उनकी तैयारी और प्रशिक्षण को दोष दे रहे हैं। इन तर्कों का उद्देश्य यह दिखाना है कि यह चीन के विमानों की तकनीकी श्रेष्ठता ने नहीं, बल्कि भारतीय पायलटों की कमज़ोर तैयारी थी जिसने नुकसान पहुंचाया।

अगर देखा जाए, तो यह टकराव दो मित्रों, चीन और रूस के बीच का संघर्ष हैं, क्योंकि सामान्य जानकारी के अनुसार, भारत की हथियार प्रणाली मुख्य रूप से रूस निर्मित हैं और पाकिस्तान की चीन में बनी है।

हम जो कथानक सुन रहे हैं, उनके विपरीत अंतरराष्ट्रीय मीडिया एक अलग ही तस्वीर पेश कर रहा है और भारतीय प्रदर्शन को नकारात्मक रूप में दिखा रहा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- इसी संदर्भ में भारत के एक राफेल विमान को मारकर गिरा देने की खबर पर मीडिया में भारी रूचि रही और शायद अभी पाकिस्तान का दावा वाद विवाद में फंसा हुआ है।
- चीन ने अपने हथियार व वैपन सिस्टम अमेरिका व अन्य पश्चिमी देशों के विकल्प के रूप में विकसित किये हैं। परन्तु, चीन ने चार दशक से कोई युद्ध नहीं लड़ा है। अतः चीन द्वारा विकसित व निर्मित इन ''वैपन सिस्टम'' की फील्ड में कोई टैस्टिंग नहीं हुई है। अतः भारत-पाक युद्ध में चीन व पश्चिमी देशों में निर्मित विमान की तुलनात्मक टैस्टिंग भी हो रही है।
- ''वैपन सिस्टम'' निर्माता अपने हथियारों की असफलता स्वीकार करने को कतई तैयार नहीं हैं। अगर ''वैपन'' (जैसे राफेल विमान) को गिराया जाना साबित हो भी जाता है तो यह तर्क प्रस्तुत किया जाता है कि पायलट ''पूरी तरह'' प्रशिक्षित नहीं थे। इतनी आधुनिक मशीन को चलाने के लिए।

सीमावर्ती जिलों में आज से खुलेंगे स्कूल कॉलेज

जयपुर, 12 मई। भारत-पाक में सीज़फायर के बाद, राजस्थान के सीमावर्ती जिलों में स्थितियां सामान्य हो गई हैं, हालांकि श्रीगंगानगर में आज भी शाम 7 बजे बाजार बंद हो गए। जिला प्रशासन ने लोगों से स्वैच्छिक ब्लैकआउट करने की अपील की है।

- जोधपुर, बीकानेर, बाड़मेर में 13 मई से शिक्षण संस्थान खुलेंगे। श्रीगंगानगर में भी हालात सामान्य हैं, पर, सोमवार शाम से बाज़ार बंद हो गए। इन जिलों में स्वैच्छिक ब्लैक आउट की अपील की गई है।

इसके अलावा, कलेक्टर डॉ. मंजू ने जिले के किसी भी क्षेत्र में पाकिस्तानी सिम का इस्तेमाल करने पर बैन लगाया है।जोधपुर, बीकानेर और बाड़मेर में बंद

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

क्षमा कर देना दुश्मन पर विजय पा लेना है। –हज़रत अली

गैर जिम्मेदार मीडिया

कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका को लोकतंत्र के तीन स्तंभ माने जाते हैं। मीडिया को चौथे स्तंभ के रूप में कई बार माना गया है। शासन के तीनों अंगों को अपना कर्तव्य याद दिलाने और जनता के मुद्दों को उनके समक्ष रखने के लिए स्वतंत्र और निष्पक्ष मीडिया बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। किसी भी संस्था की स्वतंत्रता के साथ, ही जिम्मेदारी भी निर्धारित होती है। इस लेख में हम यह विश्लेषण करने का प्रयास करेंगे कि वर्तमान समय में मीडिया, क्या इस भूमिका को प्रभावी रूप से निभा रहा है अथवा नहीं?

मीडिया की बात करते हैं तो इसमें प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक दोनों ही मीडिया सम्मिलित हैं। आजकल सोशल मीडिया का भी बहुत बड़ा योगदान इसमें है। कुछ वर्षों पूर्व तक जब इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया नहीं था, तो लोग किसी भी घटना की जानकारी प्राप्त करने हेतु पूरी तरह केवल समाचार पत्रों पर निर्भर थे। किसी भी घटना के बारे में लोग यह कहते थे कि यदि कोई खबर अखबार में छपी है तो सही ही होगी। यदि किसी अफवाह के बारे में कोई सही जानकारी चाहिए थी तो वे समाचार पत्र का इंतजार करते ताकि समाचार की सच्चाई को जांचा जा सके।

धीरे–धीरे समाचार पत्रों की विश्वसनीयता कम होने लगी तो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रादुर्भाव हुआ। सबसे पहले दूरदर्शन आया, जो पूरी तरह सरकार द्वारा नियंत्रित था। समाचारों के साथ चित्र और वीडियो भी आने लगे। 1991 में निजीकरण और उदारीकरण की नीति आने के बाद निजी टीवी चैनल प्रारंभ हुए जिनकी संख्या समय के साथ तेजी से बढ़ने लगी। सूचना क्रांति में प्रगति के कारण घटनाओं के बारे में समाचार और ऑडियो विजुअल लगभग 'रियल टाइम' में आने लगे। इसका अर्थ यह हुआ कि जैसे ही कोई घटना होती, उसका वीडियो बनाकर निजी स्ट्रिंगर अपने–अपने चैनलों को भेजने लगे । यह माना गया कि अब खबरों की विश्वसनीयता पर कोई संदेह नहीं होगा एवं लोगों को अफवाह फैलाने का अवसर नहीं मिलेगा । किंतु, हुआ इसके विपरीत और अनेक चैनल अपने मालिकों की विचारधारा और व्यावसायिक हितों की पूर्ति के लिए, उनके निर्देशानुसार समाचारों को तोड़–मरोड कर प्रस्तुत करने लगे।

कालांतर में, सोशल मीडिया भी बहुत तेजी से उभरा। यदि सरकार किसी घटना को छिपाना चाहती थी तो मोबाइल के माध्यम से साधारण नागरिक भी वीडियो बनाकर समाचार एजेंसी को भेजने लगे। अब केवल हिंदी और अंग्रेजी में ही नहीं, बल्कि अनेक क्षेत्रीय भाषाओं में भी चैनल बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं। गत कुछ सालों में यूट्यूब चैनलों की संख्या बहुत तेजी से बढ़ी है। कुछ यूट्यूब चैनलों की दर्शक संख्या तो लाखों करोड़ों तक पहुंच गई। चुनावों से पूर्व ध्रुव राठी, रवीश कुमार और संजय शर्मा के चैनल बहुत अधिक देखे जाने लगे। सरकार समर्थक यूट्यूब चैनल भी इसी प्रकार बहुत बढ़ते गए। सामान्य नागरिक के लिए यह तय करना बहुत कठिन हो गया कि वह किस पर विश्वास करे और किस पर नहीं।

एक ओर जहां संचार तकनीक में अप्रत्याशित प्रगति से लोगों को दुनिया के किसी भी कोने में होने वाली घटना के बारे में वीडियो सहित समाचार तत्काल उपलब्ध होने लगे, वहीं सबसे पहले लोगों तक समाचार पहुंचाने और 'टीआरपी' बढ़ाने की होड़ में कई प्रमुख चैनल अब भ्रामक और अपुष्ट समाचार को भी जनता तक प्रसारित करने लगे। इस प्रवृत्ति के कारण अफवाहें बढ़ीं और कई बार समुदायों में तनाव भी उत्पन्न हुआ है ।

एक समय था जब सांप्रदायिक हिंसा की घटनाओं के समाचारों में किसी भी संप्रदाय के नाम का उल्लेख तक नहीं किया जाता था । आजकल ऐसा खुले आम होने लगा है। कई बार तो टी वी चैनलों में अलग–अलग दलों और सम्प्रदायों के प्रतिनिधियों को आपस में अपशब्दों का प्रयोग करते हुए, हाथापाई तक करते हुए देखा गया है। गत कुछ वर्षों में मीडिया भी एक प्रकार से दो भागों में बट गया है– एक जो सत्ता के अंधभक्त के रूप में कार्य करता है और दूसरा जो विरोधी पक्ष की भूमिका निभाता है। यह दर्शकों के विवेक पर हो गया है कि वह किसको सच माने और किसको झूठ। सोशल मीडिया पर यदि कोई ऐसी पोस्ट डाल दे जो किसी की विचार धारा के अनुकूल न हो तो उस पर ट्रोल आर्मी टूट पड़ती है।

गत कुछ सालों में प्रमुख चैनल बहुत गैर जिम्मेदारी के साथ समाचार और अन्य कार्यक्रम प्रसारित करने लगे हैं। 2016 में प्रधानमंत्री ने जब नोटबंदी का निर्णय लिया था तो कई राष्ट्रीय चैनल 2000 के नए नोट में ऐसी चिप होने की बाद को प्रमुखता से ब्रेकिंग न्यूज़ की तरह दिखाने, जिससे नोट रखने वाले की लोकेशन सरकार पता कर सकती थी। कुछ समय बाद यह बात एकदम असत्य और आधारहीन निकली। तब भी किसी चैनल ने दर्शकों से माफी तक नहीं मांगी। सरकार द्वारा भी इनके विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की गई। इसी प्रकार, कई प्रमुख राष्ट्रीय चैनल अंधविश्वास और पाखंड को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम नियमित रूप से देने लगे। इसके विपरीत, कई यू ट्यूब चैनलों पर प्रतिबंध इसलिए लगा दिया गया कि उन्होंने सरकार से सवाल करना प्रारंभ किया जिससे सरकार की स्थिति अटपटी हुई।

मुख्य मीडिया के गैरजिम्मेदारी पूर्ण रवैये के कुछ उदाहरण देने उपयुक्त होंगे।

22 अप्रैल 2025 को पहलगाम की आतंकी घटना जिसमें 26 लोगों की हत्या की गई थी, उसे प्रसारित करते समय पूरा जोर इस बात पर था कि आतंकियों ने पर्यटकों से धर्म पूछ कर उसके आधार पर उनकी निर्ममता से हत्या की। स्वाभाविक है इसका उद्देश्य देश में हिंदू–मुसलमानों के बीच घृणा और नफरत पैदा करना ही था। ऐसा करके वे एक प्रकार से आतंकवादियों के उद्देश्य को ही बढ़ा रहे थे। ऐसा करते समय इन चैनलों ने निष्पक्षता और जिम्मेदारी को पूरी तरह ताक पर रख दिया। यह तो इस देश के नागरिकों का विवेकपूर्ण व्यवहार ही था कि वे इस दुष्प्रचार के जाल में नहीं फंसे और एक जुट होकर आतंकियों के विरुद्ध खड़े रहे।

युद्ध जैसी स्थितियों में मीडिया की जिम्मेदारी अत्यधिक बढ़ जाती है और दुर्भाग्य की बात है कि राष्ट्रीय चैनल, इसे निभाने में पूर्णतया असफल रहे। ऐसे मीडिया को सबक सिखाने का एक ही तरीका है कि लोग इस प्रकार के मीडिया को देखना ही बंद कर दें । तभी, मीडिया के मालिकों को यह समझ आएगी कि देश की जनता विवेकशील है और अब उन्हें गलत 'ब्रेकिंग न्यूज' के आधार पर भ्रमित नहीं किया जा सकता है।

पहलगाम हत्याकांड में मारे गए सैनिक अधिकारी विनय नरवाल की पत्नी हिमांशी ने मीडिया पर जब यह कहा कि इसे हिंदू–मुसलमान की दृष्टि से नहीं देखा जाए, अपितु इसे पाकिस्तान के विरुद्ध लड़ाई के रूप में देखा जाए, तो कई लोगों को यह बात पसंद नहीं आई उन्होंने हिमांशी को सोशल मीडिया पर अपशब्द कहना प्रारंभ कर दिया।

22 अप्रैल से 6 मई, 2025 तक प्रमुख टी वी चैनलों पर प्रतिदिन इस विषय पर चर्चा और बहस कराई जाती रही। इन चर्चाओं में पाकिस्तान के पत्रकारों और पूर्व सेन्य अधिकारियों को भारत के प्रति जहर उगलने का पूरा अवसर दिया गया। पाकिस्तान के प्रतिनिधियों को ऐसे समय में राष्ट्रीय चैनलों पर बुलाया जाना नितांत गैर जिम्मेदाराना व्यवहार था। एक ओर जहां विपक्ष के द्वारा सुरक्षा में हुई चूक के बारे में सवाल पूछने पर राष्ट्रीय चैनलों पर उन्हें देशद्रोही की संज्ञा दी गई, वहीं पाकिस्तान के लोगों को चर्चा में सम्मिलित करके स्वयं अपने देशद्रोही होने का ही परिचय दिया। विडंबना तो यह है कि सरकार ने भी इन्हें रोकने का कोई प्रयास नहीं किया।

7 मई, 2025 को भारत की सेना ने पाकिस्तान में आतंकियों के नौ ठिकानों को, हमले करके ध्वस्त कर दिया। उसके बाद 2 दिन तक पाकिस्तान की ओर से ड्रोन एवं मिसाइल के माध्यम से भारत के कई स्थानों पर हमले किए गए और भारत द्वारा उसका भरपूर जवाब दिया गया । जहां प्रतिदिन भारत के विदेश सचिव विक्रम मिसरी, कर्नल साफिया कुरैशी तथा विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने तथ्यात्मक जानकारी संतुलित और संयत भाषा का उपयोग करके उपलब्ध कराई, वहीं प्रमुख टी वी चैनलों ने सभी मर्यादाओं को ताक में रखकर असत्य, भ्रामक और उत्तेजनात्मक रूप से समाचार प्रसारित किए। अधिकांश बार सायरन की तेज आवाजें स्टूडियो में निकालकर देश में उन्माद का वातावरण फैलाया गया।

इन चैनलों ने हद तो तब पार दी जब इन्होंने इस पूरे घटनाक्रम के बारे में यहां तक कह दिया कि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री और सेनाध्यक्ष भागकर बंकरों में छुप गए हैं, कराची पोर्ट को भारतीय नेवी के आई एन एस विक्रांत द्वारा हमला कर के नष्ट कर दिया गया है । इस्लामाबाद ओर लाहौर पर कब्जा होने वाला है। कुछ अति उत्साही एंकरों ने तो यहां तक कहना प्रारंभ कर दिया कि शीघ्र ही पाकिस्तान का नामो निशान दुनिया के नक्शे से मिट जाएगा । ऐसा करके उन्होंने राष्ट्रीय हित के विरुद्ध कार्य किया क्योंकि भारत का स्टैंड सदैव यह रहा कि उसकी सेनाओं ने पाकिस्तान की सीमाओं में प्रवेश नहीं किया और वे केवल पाकिस्तान द्वारा की जा रही कार्यवाही का मुंह तोड़ जवाब अपनी सीमा में रह कर ही दे रहे थे।

जिस प्रकार से सायरन की आवाज स्टूडियो में सुनाई जाती थी और जिस प्रकार से निराधार रिपोर्टिंग प्रमुख राष्ट्रीय चैनलों पर होने लगी थी, उसे देखते हुए भारत सरकार को यह निर्देश देने पड़े कि कोई मीडिया अपुष्ट और निराधार समाचार प्रसारित न करें। इस चेतावनी के बावजूद ये चैनल उसी प्रकार से निराधार और असत्य खबरें 10 मई तक दिखाते रहे। एक बार तो दूरदर्शन तक ने जम्मू कश्मीर के एक शिक्षक को भारत द्वारा किए हमले में मारे जाने वाला आतंकवादी बात दिया।

भारत के विदेश सचिव विक्रम मिसरी, कर्नल साफिया कुरैशी और विंग कमांडर भूमिका सिंह ने जिस प्रकार शादी हुई संतुलित और संयत भाषा में मीडिया को जानकारी प्रतिदिन दी, वह अत्यंत उत्कृष्ट श्रेणी की थी, जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। सरकार ने यह कहा कि केवल सरकार की आधिकारिक रिपोर्टिंग को सही माना जाए, किंतु फिर भी टीआरपी बढ़ाने के चक्कर में कुछ चैनल गलत समाचार प्रसारित करने से बाज नहीं आए।कई बार तो पुरानी घटनाओं के विजुअल को काम में लेते हुए, गलत सूचना देने तक का काम करने लगे। स्थिति यहां तक हो गई कि, किसी को सही जानकारी चाहिए थी तो वह या तो भारत सरकार की आधिकारिक प्रेस ब्रीफिंग को देखता अथवा बीबीसी से देखकर जानकारी प्राप्त करता।

10 मई 2025 को सायं 5:00 बजे से जब युद्ध विराम के संबंध में पहला ट्वीट अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा किया गया तो देशवासियों को युद्ध विराम की जानकारी मिली। दोनों देशों ने, उसके बाद ही इसकी जानकारी देश को दी। युद्ध के समर्थक लोगों के लिए अचानक घोषित इस युद्ध विराम को स्वीकार करना बड़ा कठिन था ।फिर उसके बाद यह समाचार चलाए जाने लगा कि भारत की ताकत के आगे पाकिस्तान ने घुटने टेक दिए। युद्ध विराम को भारत की जीत के रूप में प्रसारित किया गया। इस बात पर ध्यान नहीं दिया गया कि युद्ध विराम की जानकारी अमेरिका द्वारा दी गई। अमेरिकी राष्ट्रपति ने तो उनकी मध्यस्थता की बात भी ट्वीट में कही ।

भारतीय विदेश सचिव द्वारा जब युद्ध विराम की जानकारी देश को दी गई तो उसके बाद लोगों ने उनको एवं उनके परिवार को ट्रोल करना प्रारंभ कर दिया। यहां तक कि उनकी बेटी के विरुद्ध घोर अपमानजनक शब्दों का प्रयोग किया गया उन्हें रोहिंग्या की वकील बताते हुए उनके विरुद्ध असभ्य और अभद्र भाषा का प्रयोग किया । वे भूल गए कि विक्रम मिसरी तो केवल भारत सरकार के विदेश सचिव के रूप में उस निर्णय की जानकारी देश को दे रहे थे जो सरकार के उच्चतम स्तर पर लिया गया।

युद्ध जैसी स्थितियों में मीडिया की जिम्मेदारी अत्यधिक बढ़ जाती है और दुर्भाग्य की बात है कि राष्ट्रीय चैनल, इसे निभाने में पूर्णतया असफल रहे। ऐसे मीडिया को सबक सिखाने का एक ही तरीका है कि लोग इस प्रकार के मीडिया को देखना ही बंद कर दें । तभी, मीडिया के मालिकों को यह समझ आएगी कि देश की जनता विवेकशील है और अब उन्हें गलत 'ब्रेकिंग न्यूज' के आधार पर भ्रमित नहीं किया जा सकता है।

हम तो आशा ही कर सकते हैं कि भविष्य में मीडिया अपना उत्तरदायित्व जिम्मेदारी के साथ निभाएगा।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

ऑपरेशन सिंदूर : भारत-पाक युद्ध में नागरिक कर्तव्य की अग्नि परीक्षा

राजेन्द्र राठौड़

22 अप्रैल 2025 - मानवता के इतिहास का वह काला दिन था जब कश्मीर के पहलगाम में पाक में बैठे आतंक के सरगनाओं ने हमारे 26 निर्दोष नागरिकों की निर्मम हत्या कर देश को भीतर तक झकझोर दिया था। इस हमले ने करोडों नागरिकों के हृदय में पीड़ा और आक्रोश भर दिया। बहनों का सिंदूर उजड़ गया, माताओं की गोद सूनी हो गई और पूरा राष्ट्र एक बार फिर आतंकवाद के घावों से कराह उठा। भारतीय सेना ने पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में महज 15 दिन के भीतर 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत पाकिस्तान में घुसकर 9 बड़े आतंकी ठिकानों को ध्वस्त कर दिया और लश्कर–ए–तैयबा, जैश–ए–मोहम्मद और हिजबुल मुजाहिदीन जैसे संगठनों के 100 से अधिक आतंकियों को ढेर कर दिया। पाकिस्तान ने इस कार्रवाई के बाद भी अपनी हरकतें नहीं छोड़ीं और लगातार भारत में जम्मू–कश्मीर, पंजाब तथा राजस्थान के सीमावर्ती इलाकों में ड्रोन, लडाकू विमान और मिसाइल से हमले किये जिसे भारत के एयर डिफेंस सिस्टम -400 'सुदर्शन चक्र' ने पाक के सभी ड्रोन्स–मिसाइल को हवा में ही खत्म कर दिया और हार्पी ड्रोन से पाकिस्तान का एयर डिफेंस सिस्टम को तहस–नहस कर दिया।

7 मई से 10 मई तक चलने वाले युद्ध में भारत ने पाकिस्तान को घुटने टेकने को मजबूर कर दिया और 10 मई को सीजफायर हुआ। भारतीय सेना ने महज चार दिनों में पाकिस्तान की आतंकी संरचनाओ, सैन्य ठिकानों और अर्थव्यवस्था को गंभीर क्षति पहुँचाई और करीब 40 पाकिस्तानी सैनिक भी युद्ध में मारे गये। ऑपरेशन सिंदूर ने दुश्मन को यह स्पष्ट संदेश दिया है कि भारत किसी भी नापाक हरकत का माकूल जवाब देने की ताकत रखता है। सीजफायर के बाद पाकिस्तान एक बार फिर भली भांति समझ गया है कि भारत केवल रक्षात्मक नहीं बल्कि निर्णायक और आक्रामक रणनीति अपनाने को तत्पर है। यदि भविष्य में पाकिस्तान ने फिर कोई दुस्साहस किया तो वह सीधा 'एक्ट ऑफ वार' माना जाएगा और उसका परिणाम पहले से कहीं अधिक विनाशकारी होगा।

युद्ध पर भले ही सीजफायर हो गया है लेकिन रणनीतिक मोर्चे पर भी पाकिस्तान के खिलाफ भारत ने 1960 के सिंधु जल समझौते को स्थगित करने, पाक नागरिकों को वापिस भेजने, आयात, हवाई मार्ग और जलमार्ग से परिवहन तथा डाक पार्सल सेवाएं पूर्णतः बंद करने जैसे कड़े निर्णय लिये है वो अभी जारी है। इस युद्ध का प्रभाव राजस्थान के सीमावर्ती जिलों जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर और श्रीगंगानगर में साफ देखने को मिला। यहां ब्लैकआउट और रेड अलर्ट की स्थिति बनी रही हालांकि भारत और पाकिस्तान के बीच सीजफायर की घोषणा के बाद अब हालात धीरे–धीरे सामान्य हो रहे हैं आम जनजीवन पटरी पर आने लगा है। दरअसल भारत और पाकिस्तान के मध्य 1070 किलोमीटर लंबी अंतरराष्ट्रीय सीमा है जो राजस्थान में है जिसमें सबसे संवेदनशील क्षेत्र जैसलमेर, बीकानेर, श्रीगंगानगर व बीकानेर है। यहां थार रेगिस्तान के बीहड़ और रेतीले इलाके में सेना हर क्षण चौकसी बरत रही है। एक बार फिर भारत पाक युद्ध में 1965 व 1971 की लोंगेवाला लड़ाई की यादें यहां के लोगों में ताजा हो गई हैं।

हालांकि अब युद्ध पर विराम लग चुका है और यह स्पष्ट हो चुका है कि आधुनिक युद्ध केवल सीमाओं पर नहीं लड़े जाते। आज के युद्ध बहुआयामी हो चुके हैं - साइबर, सूचना और मनोवैज्ञानिक मोर्चों पर भी लड़ाई लड़ी जाती है। युद्ध के दौरान पाकिस्तान ने साइबर हमलों के जरिये भारत को अस्थिर करने की कोशिश की लेकिन भारत ने न सिर्फ सीमाओं पर बल्कि डिजिटल मोर्चे पर भी उसकी हर साजिश को नाकाम कर दिया। पाकिस्तान जो पहले ही आर्थिक रूप से जर्जर स्थिति में है, वह युद्ध के दौरान आतंकवाद की फैक्ट्री के रूप में वैश्विक मंचों पर और भी अधिक आलोचना का शिकार बना। इसके विपरीत भारत को अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का व्यापक समर्थन मिला।

हमारे संविधान निर्माताओं ने भारतीय संविधान में मौलिक अधिकारों के साथ देश के नागरिकों के मूल कर्तव्यों का उल्लेख किया है। देश के प्रत्येक नागरिक की यह नैतिक, सामाजिक और संवैधानिक जिम्मेदारी है कि वह राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखते हुए व्यवहार करे। संविधान के भाग 4 (क) के अनुच्छेद 51 (क) में स्पष्ट उल्लेख है कि प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह देश की रक्षा करे और आव्हान किये जाने पर राष्ट्र की सेवा करे। संविधान के अनुच्छेद 23 (2) में राज्य को यह भी अधिकार दिया गया है कि वह जरूरत पड़ने पर "सार्वजनिक प्रयोजनों के लिए अनिवार्य सैन्य सेवा अधिरोपित" कर सकता है और ऐसा करते हुए नागरिकों के बीच धर्म, मूलवंश, जाति या वर्ग के आधार पर कोई विभेद नहीं किया जाएगा। वर्तमान युद्ध महज युद्ध क्षेत्र में नहीं लड़े जाते हैं और न ही वह सिर्फ सैन्यबलों के द्वारा ही जीते जाते हैं इसमें आम नागरिकों को भी कई तरह से बेहद महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करना पड़ता है। जिसका उल्लेख हमारे संविधान निर्माताओं ने संवैधानिक प्रावधानों में स्पष्ट रूप से किया है।

इसीलिए 42वें संविधान संशोधन अधिनियम 1976 के द्वारा मूल कर्तव्यों को भारतीय संविधान में जोड़ा गया था। देश के माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने भी कई बार राज्य का कर्तव्य तय करने के लिए अनुच्छेद 51(क) में दर्ज मूल कर्तव्यों को बुनियाद माना है। संविधान प्रदत्त मौलिक अधिकार व मूल कर्तव्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जिस प्रकार हम अपने मौलिक अधिकारों की मांग करते हैं उसी प्रकार जब राष्ट्र संकट में हो तो अपने कर्तव्यों की भी पूर्ति करने के लिए हमें तैयार रहना चाहिये। यह भी ध्यान देने योग्य है कि युद्धकाल में सोशल मीडिया पर गैर–जिम्मेदाराना हरकतें दुश्मन के हाथ में हथियार थमा देती हैं। इसलिए शांति व सौहार्द बनाए रखना और प्रशासन के निर्देशों की पालना करना नागरिकों का कर्तव्य है। युद्ध के समय जवानों का मनोबल बढ़ाना, उनके बलिदान को सम्मान देना और उनके परिवारों के प्रति संवेदनशील रहना भी हमारा कर्तव्य है।

इतिहास गवाह है कि 1947–48 का कश्मीर युद्ध, 1965 व 1971 के भारत–पाक युद्ध तथा 1999 के कारगिल संघर्ष में भारत ने हर बार निर्णायक विजय हासिल की। अब ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से भारत एक बार फिर अपने संकल्प, साहस और सामरिक क्षमता से पाकिस्तान को करारा जवाब देते हुए उसके घर में घुसकर मारा है। युद्ध की अवधि भले ही छोटी रही हो लेकिन इसने देश के जिम्मेदार नागरिकों को कई अमूल्य सीखें दी हैं। यह युद्ध हमें कर्तव्य परायणता, अनुशासन और एकजुटता का महत्व सिखा गया है। भविष्य की संभावित परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए नागरिकों को सदैव सजग रहना चाहिए और अपने मूल कर्तव्यों को पूरी निष्ठा से निभाना चाहिए।

हर भारतीय नागरिक बिना वर्दी का सिपाही है जिसका मूल कर्तव्य राष्ट्र के साथ खड़ा होना है। संविधान में निहित मूल कर्तव्य राष्ट्र की आत्मा हैं और जब जनता इसके साथ खड़ी होती है तब कोई भी शत्रु भारत को हरा नहीं सकता। हमें यह समझना होगा कि युद्ध केवल सैनिकों की नहीं, पूरे देश की लड़ाई होती है जिसमें हर नागरिक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

– राजेन्द्र राठौड़,
पूर्व नेता प्रतिपक्ष

ग्राम पंचायत बिनादेसर में 10 वर्ष से पीने के पानी का संकट, लोग परेशान

राजलदेसर, (निसं)। राजलदेसर कस्बे के निकटवर्ती ग्राम पंचायत बिनादेसर में करीब 10 वर्ष से ग्रामवासी पीने के पानी के लिए बूंद–बूंद तरस रहे हैं। गांव के लोगों ने अनेकों बार उच्च अधिकारियों को अवगत करवाया, लेकिन किसी तरह की कोई सुनवाई नहीं हुई।

राजलदेसर के निकट ग्राम पंचायत बिनादेसर में बनी पानी की टंकी।

- **लोगों को 4.5 किलोमीटर पाइप लाइन की वजह से खामियाजा भुगतना पड़ रहा है**
- **गांव के लोगों ने कई बार उच्च अधिकारियों को अवगत करवाया, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई**

सरपंच प्रतिनिधि तुलसीराम सारस्वत ने बताया कि 2023 में जल जीवन मिशन योजना के तहत हर घर के अंदर पीने का पानी उपलब्ध होना था। इसके लिए किसी तरह की कोई कार्रवाई नहीं हुई। 1 वर्ष पूर्व चूरू जिला प्रभारी सचिव एवं पूर्व जिला कलेक्टर पुष्पा सत्यानी पूरी टीम के साथ बिनादेसर में पंचायत के लोगों के साथ मीटिंग ली। साथ ही जलदाय विभाग के निचले स्तर से लेकर उच्च स्तर तक के अधिकारी उपस्थित रहे एवं संबंधित कंपनी के ठेकेदार भी मौजूद थे उस समय चूरू जिला प्रभारी सचिव भास्कर ए सावंत ने अधिकारियों को कहा कब तक कार्य पूरा हो जाएगा। उन्होंने 3 महीने का समय दिया गया, लेकिन पानी की टंकी तो बन चुकी है। साथ ही गांव के अंदर पाइप लाइन भी डाली जा चुकी है, लेकिन राजलदेसर से बंडवा तक 4.5 किलोमीटर तक पाइप लाइन नहीं डाली जाने के कारण पानी टंकी में नहीं पहुंच रहा है।

सरपंच प्रतिनिधि तुलसीराम ने बताया सरपंच के द्वारा अनेकों बार पत्राचार के माध्यम से अधिकारियों को अवगत करा चुके हैं, लेकिन अधिकारी किसी तरह की कोई सुनवाई नहीं कर रहे हैं। वहीं राज्य सरकार की ओर से अभी दो ट्यूबवेल स्वीकृत हुए थे जो करीब 59 लाख रुपए की लागत के बताए जा रहे हैं लेकिन एक ट्यूबवेल के अंदर कुछ पानी है एक में बिल्कुल भी पानी नहीं आया। सरकार के लाखों रुपए बेकार साबित हो गए। वहीं गांव के अंदर तीन ट्यूबवेल है उनके अंदर बिल्कुल खारा पानी आता है। उनमें से दो ट्यूबवेल पूरी तरह से खराब है। इसके लिए अधिकारियों को अनेकों बार अवगत करा चुके हैं लेकिन किसी तरह का ध्यान नहीं दिया जाता है। गांव के हालात ये है कि लोग मजबूरन निजी टैंकरों के माध्यम से 700 से 800 रुपए देकर पानी घरों में डलवा रहे हैं। विभाग की ओर से दो टैंकर लगाए गए हैं जो नाम मात्र के हैं। गौशाला के अंदर गौ माता के लिए भी पीने का पानी का संकट है।

रविवार को गांव के लोगों ने गांव की चौपाल पर इकट्ठे होकर प्रशासन को कोसते नजर आए। सरपंच प्रतिनिधि तुलसीराम सारस्वत ने कहा कि बंडवा में भी मात्र एक टंकी होने के कारण ग्राम वासियों को पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं मिलता। जिससे उनको भी भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। साथ ही इस महत्वपूर्ण समस्या को लेकर वर्तमान में उच्च अधिकारियों को और पत्र लिखा है लेकिन गांव के लोग एक ही नजर लगाये हुये है कि गांव के अंदर पानी कब तक पहुंचेगा।

गांव के लोगों का कहना है जब चुनाव आते हैं तो चौपाल पर पानी की चर्चा होती है। जब चाहे सत्ता पक्ष हो या विपक्ष, सब बड़े–बड़े वादे करके चले जाते हैं। लेकिन वादे केवल वादे ही रह जाते हैं। चुनाव के बाद राजनेता सारी बातों को भूल जाते हैं गांव के सरपंच प्रतिनिधि तुलसीराम ने बताया जो दो ट्यूबवेल बने हैं। उनमें से एक ट्यूबवेल है उसमें कुछ पानी है। उसकी लाइन अलग जगह से गांव में डाली जा रही है। वह भी मात्र 2 इंच की कभी भी लाइन टूट जाएगी, लेकिन पूरी संभावना है गांव के अंदर पानी पहुंचना बहुत मुश्किल है। पानी पहुंचेगा तो राजलदेसर से बंडवा की नई पाइप लाइन जोड़ने से ही गांव में पानी पहुंचेगा। इस अवसर पर गांव के प्रमुख सीताराम शर्मा, मनोज शर्मा, किशन शर्मा, भवानी, रमेश सारस्वत, श्रवण सैन, कुम्भाराम मेघवाल, मोहन, चंद्रना, बीरबल सारस्वत, श्रवण सारस्वत, चंदू, विष्णुनाथ, परमेश्वर नाथ, प्रभुदयाल सारस्वत सहित अनेक लोगों ने प्रशासन के खिलाफ आक्रोश व्यक्त किया।

जेईई–एडवांस्ड–2025 के एडमिट कार्ड जारी

कोटा, (निसं)। आईआईटी कानपुर द्वारा आयोजित की जा रही देश की सबसे कठिनतम और प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा जेईई–एडवांस्ड के प्रवेश पत्र 11 मई को जारी कर दिए हैं। आईआईटी कानपुर ने तय समय से पूर्व ही वेबसाईट पर एडमिट कार्ड डाउनलोड करने के लिए लिंक अपलोड कर दिया था लेकिन दोपहर बाद तक भी लिंक काम नहीं करने से स्टूडेंट्स परेशान होते रहे। ऐसे में आईआईटी कानपुर द्वारा वेबसाइट नहीं चलने की स्थिति में स्टूडेंट्स को रजिस्टर्ड ईमेल आईडी और वॉट्सएप पर लिंक भेजे गए, जहां से स्टूडेंट्स ने एडमिट कार्ड डाउनलोड किये। इसके अलावा स्टूडेंट्स को फर्स्ट च्वाइस के आधार पर परीक्षा शहर भी आवंटित नहीं किया गया। ज्यादातर स्टूडेंट्स ऐसे हैं, जिन्हें सैकंड व थर्ड च्वाइस के आधार पर परीक्षा शहर आवंटित किए गए हैं। ऐसे में स्टूडेंट्स को काफी परेशानी होगी। प्रवेश पत्र में परीक्षा संबंधी नियम भी जारी किए गए हैं। जेईई–एडवांस्ड की परीक्षा 18 मई को देश के 222 परीक्षा शहरों में प्रातः 9 से 12 और दोपहर 2:30 से 5:30 बजे तक होगी। इस वर्ष आईआईटी कानपुर द्वारा परीक्षा करवाई जा रही है। जेईई–एडवांस्ड के लिए इस वर्ष 1.90 लाख से अधिक स्टूडेंट्स ने आवेदन किया है। एलन कॅरियर इंस्टीट्यूट के कॅरियर काउंसलिंग एक्सपर्ट अमित आहूजा ने बताया कि जेईई एडवांस्ड परीक्षा के लिए विद्यार्थी को प्रवेश पत्र के साथ कोई भी एक ओरिजनल आईडी प्रूफ जैसे आधार कार्ड, स्कूल आईडी, ड्राइविंग लाइसेंस, वोटर आईडी, पासपोर्ट एवं पैन कार्ड अपने साथ लेकर जाने होंगे। स्टूडेंट्स के प्रवेश पत्रों पर दिए गए बारकोड को बारकोड रीडर के माध्यम से पढ़कर परीक्षा केंद्रों के एंट्री प्वाइंट पर ही उन्हें परीक्षा देने के लिए लेब आवंटित कर दी जाएगी। परीक्षा देने के लिए उनका कंप्यूटर सिस्टम परीक्षा चालू होने से आधा घंटा पूर्व आवंटित कर दिया जाएगा जिस पर विद्यार्थी का नाम, फोटो एवं जेईई एडवांस रोल नंबर उल्लेखित होंगे। आहूजा ने बताया कि प्रवेश पत्र में दिव्यांग स्टूडेंट्स के लिए भी गाईड लाईन जारी की गई है। इसके अनुसार जो स्टूडेंट्स लिखने–पढ़ने में असमर्थ हैं उन्हें स्क्राइब की सुविधा टेस्ट सेंटर एडमिनिस्ट्रेटर द्वारा दी जाएगी।

राशिफल मंगलवार 13 मई, 2025

पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, पूर्णिमा, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, विशाखा नक्षत्र प्रातः 9:09 तक, वारियान योग प्रातः 5:53 तक, बालव करण दिन 11:31 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य–मेष, चन्द्रमा–वृश्चिक, मंगल–कर्क, बुध–मेष, गुरू–वृष, शुक्र–मीन, शनि–मीन, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज कुमार योग प्रातः 9:09 तक है। राजयोग रात्रि 12:36 से आरम्भ होगा। आज श्री नारद जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 9:04 से 10:43 तक, लाभ अमृत 10:43 से 2:03 तक, शुभ 3:42 से 5:22 तक।

राहूकालः 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:44, सूर्यास्त 7:02

मेष

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में वाद–विवाद बढ़ सकते हैं। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

वृष

परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मिथुन

आर्थिक मामलों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा संभव है। स्वास्थ्य में सुधार होगा। दिनचर्या में सुधार होगा।

कर्क

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखें। व्यावसायिक खर्चों में वृद्धि होगी।

सिंह

घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कन्या

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिलेगा।

तुला

आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादों से राहत मिल सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु

आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मकर

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

कुंभ

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। शुभ कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

सार-समाचार

जिला स्तरीय समीक्षा बैठक आयोजित

सीकर, (निसं)। अतिरिक्त जिला कलेक्टर रतन कुमार की अध्यक्षता में सोमवार को जिला कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में जिला स्तरीय साप्ताहिक समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में विभिन्न विभागों की प्रगति की समीक्षा की गई। अतिरिक्त जिला कलेक्टर ने राजस्थान संपर्क पोर्टल, मुख्यमंत्री जनसुनवाई, लाइट्स पोर्टल व ई-फाइलिंग पर लंबित प्रकरणों के त्वरित व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के निर्देश दिए। उन्होंने बजट घोषणाओं के प्रभावी क्रियान्वयन, लू-तापघात से बचाव हेतु चिकित्सा व्यवस्था, पेयजल, विद्युत, खाद्य-बीज उपलब्धता, प्री-मानसून नाला सफाई, पशुओं के लिए पानी व दोपहर 12 बजे बाद मनरेगा श्रम न करवाने के निर्देश दिए। एडीएम रतन कुमार ने पानी की समस्या वाले क्षेत्रों में पेयजल टैंकर व्यवस्था, टीबी मुक्त अभियान की कार्ययोजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि शिविर (1-31 मई), विद्युत तारों की मरम्मत, भारत-पाकिस्तान तनाव के मध्य नजर अधिकारियों एवं कर्मचारी के मुख्यालय न छोड़ने व आरडीएसएस व कुसुम योजना में प्रगति के निर्देश दिए। अतिरिक्त जिला कलेक्टर शहर भावना शर्मा ने लाइट्स पोर्टल पर समयबद्ध अपडेट व विभिन्न आयोगों से संबंधित प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण पर जोर दिया। बैठक में सीईओ जिला परिषद राजपाल यादव, सहायक निदेशक इंदिरा शर्मा, सीएमएचओ डॉ. अशोक महरिया, अधीक्षण अभियंता विद्युत अरुण जोशी, पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. दीपक अग्रवाल सहित संबंधित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

विचार गोष्ठी आयोजित

लक्ष्मणगढ़ शेखावाटी (निसं)। महिला शिक्षा के जनक महान समाज सुधारक महात्मा ज्योतिबा फुले को 11 मई 1888 को महात्मा की उपाधि मिलने की ऐतिहासिक स्मृति को चिरस्थाई बनाने व महात्मा फुले के विचारों को जनमानस तक पहुंचाने के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग 52 पर सेठों की कोठी से बैरास जाने वाले रास्ते पर निर्माणाधीन महात्मा ज्योतिबा फुले छात्रावास प्रांगण में रविवार को विचार गोष्ठी आयोजित हुई। यह जानकारी देते हुए महात्मा ज्योतिबा फुले छात्रावास निर्माण समिति के संयोजक सज्जन कुमार बबेरवाल ने बताया कि आयोजित विचार गोष्ठी की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष रामावतार सिंगोदिया ने की। विचार गोष्ठी में महात्मा ज्योतिबा फुले के विचारों को जनमानस तक पहुंचाने, उनके बताए मार्ग पर चलने व उनके द्वारा समाज सुधार,शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्यों की चर्चा परिचर्चा की गई। इस अवसर पर रामावतार सिंगोदिया, सज्जन कुमार बबेरवाल, झाबरमल सिंगोदिया,महेंद्र चुनवाल, एडवोकेट सत्यनारायण चुनवाल, रामस्वरूप पीटीआई विनोद गौड़, दीपक कटारिया बाबूलाल सैनी आदि ने विचार व्यक्त किए इस अवसर पर राहुल, मुकेश, उमेश, संदीप सहित समिति के पदाधिकारी सदस्य व छात्रावास के विधार्थी मौजूद थे।

प्राकट्योत्सव हर्षोल्लास से मनाया

पाटन (निसं)। बैसाख शुक्ल पूर्णिमा के पावन अवसर पर डाबला रोड बस स्टैंड स्थित शिव मंदिर में श्री श्री 108 श्री गुरु गोरक्षनाथ महाराज का प्राकट्ययोत्सव दिवस बड़े ही धूमधाम और श्रद्धा के साथ मनाया गया। समारोह की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई, जिसमें मुख्य रूप से शिवराम योगी कांथली, प्रहलाद योगी पाटन एवं प्रहलाद योगी जुगलपुरा ने अध्यक्षता की। कार्यक्रम में दूर-दराज से पधारे संतों, पदाधिकारियों और श्रद्धालुओं का पुष्प अर्पण कर स्वागत किया गया।गुरु गोरक्षनाथ जी की आरती के बाद सभी उपस्थित जनों को संबोधित करते हुए सीकर जिला अध्यक्ष प्रहलाद सिंह, नीमकाथाना तहसील अध्यक्ष लालचंद योगी, बनवारी नाथ भूदोली, पूर्व सरपंच प्रहलाद योगी, शिवराम योगी और डॉ. लालचंद मोयल ने गुरु परंपरा की महत्ता और सामाजिक एकता पर प्रकाश डाला।इस मौके पर विक्रम रामपुरा, सुरेश योगी नीमोद, दाताराम कांथली, राजपाल, हरीराम, सुरेश योगी पाटन, लालचंद कुंडाला, रिंकु योगी, नवरंग, बजरंग लाल कुंडाला सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे।कार्यक्रम में भक्तों की भारी भीड उमडी और वातावरण 'जय गुरु देव' के जयकारों से गूंज उठा। आयोजन को सफल बनाने में स्थानीय युवाओं और समिति सदस्यों ने विशेष भूमिका निभाई।

अंतरराष्ट्रीय नर्सेज दिवस पर कार्यक्रम

झुंझुनूं, (निसं)। अंतरराष्ट्रीय नर्सेज दिवस पर सीकेआरडी मेमोरियल नर्सिंग कॉलेज ढिगाल में फलोरेंस नाइट ऐंगल के जन्म दिवस को अंतरराष्ट्रीय नर्सेज दिवस के रूप में केक काटकर मनाया। इस अवसर पर कॉलेज निदेशक डॉ. लालचंद ढाका, अध्यक्षा डॉ. संतोष ढाका, प्रशासनिक अधिकारी दयाराम नेहरा व सभी शिक्षकगण उपस्थित रहे। कॉलेज निदेशक डॉ. लालचंद ढाका ने नव आगंतुक विद्यार्थियों से प्रार्थना करवाई और लेडी विद लैंप के जीवन पर प्रकाश डालते हुए सभी विद्यार्थियों को फलोरेंस नाइट ऐंगल द्वारा एक नर्स के रूप में निस्वार्थ की गई मानव सेवा को अपने आचरण में उतारने की शपथ भी दिलवाई तथा सभी विद्याथियों के उज्जवल भविष्य की कामना की। प्रशासनिक अधिकारी दयाराम नेहरा ने बताया कि तृतीय सेमेस्टर द्वारा प्रथम सेमेस्टर के लिए दी गई। जिसमें मिस्टर फ्रेशर हर्षसिंह शेखावत व मिस फ्रेशर अंकिता मील को चुना गया। फ्रेशर पार्टी शानदार आयोजन व रंगारंग प्रस्तुतियों के लिए सभी विधार्थियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। पार्टी का समापन नेशनल ऐंथम से हुआ।

मातृ दिवस मनाया

सीकर (निसं)। सीकर की सेवार्थ फाउंडेशन की टीम द्वारा सावली सर्किल में बालिकाओं माताओं के साथ मातृत्व दिवस को मनाया। संस्था की जिला सहसंयोजक करिश्मा शर्मा ने बताया कि 11 मई को दुनियाभर में मदर्स डे मनाया जाता है. ऐसे में जिन माताओं ने बचपन से हमें अपना सब कुछ देकर बड़ा किया, उनके लिए प्यार और देखभाल जताने का यह एक शानदार दिन है. मां-यर एक ऐसा शब्द है, जिसमें पूरी दुनिया प्यार, ममता, त्याग और बलिदान समाया हुआ है। इसी मातृत्व की महानता को सम्मानित करने और मां के प्रति अपने प्रेम-कृतज्ञता दिखाने के लिए हर साल मदर्स डे का दिन मनाया जाता है। इसी के तहत बालिकाओं के लिए सामान्य ज्ञान की प्रतियोगिता रखी गई इसी के साथ केक काटा और इस दिन को एंजॉय किया । इस दौरान करिश्मा शर्मा, सुधा सोनी, पूजा सोनी, अलका सोनी, नीलम शेखावत, सुनीता सोनू, रिया, तनिष्का शर्मा, नव्या, चितरा, गुनगुन, श्रीवरा उपस्थित रही

जागरूकता बैठक आयोजित

तारानगर (निसं)। महिलाओं के अधिकार को लेकर तारानगर के वार्ड 09 में जागरूकता बैठक रखी गयी जिसमें महिलाओं को घरेलू हिंसा व अन्य समसामयिक महिला शौषण के प्रति जागरूक किया गया व उन्हें सुलभ समाधान खोजने के लिए सहायता उपलब्ध करवाने हेतु हेल्प डेस्क व टोल फ्री नंबर 181 के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी साथ ही केंद्र व राज्य सरकार कि विभिन्न महिला सशक्तिकरण कि योजनाओं के बारे में पालिका ईओ अजय प्रताप सिंह के निर्देशन में बताया गया। बैठक में फायरमैन नितेश उपाध्याय व सीओ अर्जुनसिंह राजपुरोहित, पुलिस थाना से हैड कॉंस्टेबल हरिदान चारण, सुभाषचन्द्र, मुन्नी कुमारी, सुलोचना, प्रीति वर्मा, कलावती, अभिमन्यु सिंह, शमेष्ठा देवी सहित स्वयं सहायता समूह की महिलाएं उपस्थित रही।

आयोजित रक्तदान शिविर आयोजित

सीकर (निसं)। अंतराष्ट्रीय नर्सिंग दिवस पर श्री कल्याण मेडिकल कॉलेज सीकर मे आज भारतीय सेना के ऑपरेशन सिंदूर से प्रेरणा लेकर सेना के जरुरतमंद जवानो व घायलों हेतु ब्लड डोनेशन कैंप रखा,गया साथ ही नर्सिंग दिवस पर बालाजी महाराज की सवामणी का आयोजन भी हुआ। कार्यक्रम मे धोद विधायक गोरधन वर्मा, भाजपा जिलाध्यक्ष मनोज बाटड, कॉलेज प्रिंसिपल अशोक चौधरी ने शिरकत की।

एथेलेटिक प्रतियोगिता कल

पिलानी, (निसं)। झुंझुनूं जिला एथलेटिक संघ के सचिव नरेंद्र सिंह राठौड़ ने बताया कि सीनियर स्टेट एथेलेटिक्स चैंपियनशिप अजमेर के लिए झुंझुनूं जिले के एथलीट्स का चयन बुधवार व गुरुवार 14 व 15 मई को शाम 4:30 बजे से सात बजे तक एनएस एकेडमी खेल मैदान कोर्ट रोड पिलानी में जिला स्तरीय प्रतियोगिता में छोटी, मध्यम व लंबी दूरी की दौड़, थ्रो व जंप के इवेंट के बाद होगा। चयनित एथलीट अजमेर में 22 व 23 जून 2025 को होने वाली राज्य स्तरीय एथेलेटिक चैंपियनशिप में झुंझुनूं जिले का प्रतिनिधित्व करेंगे।

चिकित्सा संस्थानों का निरीक्षण

झुंझुनूं, (निसं)। डिप्टी सीएमएचओ डॉ. भंवरलाल सर्वा ने सोमवार को दो चिकित्सा संस्थानों का निरीक्षण का किया। हीट वेव और क्लाइमेट चेंज के तहत की गई व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया गया। साथ ही मौसमी बीमारियों के संबंध में की जाने वाली तैयारियों का भी जायजा लिया। उन्होंने दोनों संस्थानों उपलब्ध दवाओं का निरीक्षण किया। उन्होंने 30 पल्स आयु वर्ग के लोगों की एनसीडी रोगों की स्क्रीनिंग कर रिपोर्ट पोर्टल पर अपलोड करने के निर्देश दिए। उन्होंने हॉस्पिटल की डेली चेक लिस्ट भरकर कमियों में सुधार के निर्देश दिए।

'राजलदेसर कस्बे को इस बार बरसाती पानी से डूबने नहीं दिया जाएगा'

राजलदेसर (निसं)। राजलदेसर कस्बे में बरसाती पानी की निकासी की समस्या से हर बार कस्बेवासियों को मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। लेकिन इस बार मानसून से पूर्व राजलदेसर में दो-तीन बार पंप हाउस खराब होने के बाद रतनगढ़ उपखंड अधिकारी रामकुमार

- **गैनाणी की खुदाई के लिए नगर पालिका ने निकाला 25 लाख का टेंडर**
- **पंप हाउस के पास एक मोटर और लगाई जाएगी**

उपखंड अधिकारी रामकुमार वर्मा ने राजलदेसर कस्बे की विशेष मॉनिटरिंग की।

वर्मा लगातार दो बार गैनाणी का निरीक्षण कर चुके हैं एवं नगर पालिका को मानसून से पूर्व पूरी तरह से अलर्ट रहने को कहा है।

उन्होंने कहा इस बार राजलदेसर कस्बे वासियों को बारिश के समय डूबने नहीं दिया जाएगा साथ ही उपखंड अधिकारी रामकुमार वर्मा लगातार राजलदेसर कस्बे की विशेष मॉनिटरिंग कर रहे हैं वही नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी कुंदन देथा ने बताया 25 लाख रुपए गैनाणी की खुदाई के लिए टेंडर निकाल दिया गया है। आज टेंडर खोल दिए जाएंगे। अति शीघ्र संबंधित ठेकेदार को वर्क आर्डर जारी करके काम शुरू करवा दिया जाएगा। इसके अलावा गैनाणी पंप हाउस में एक 60 एचपी की मोटर और लगा दी जाएगी। अगर एक मोटर खराब हो जाए तो दूसरी मोटर सुचारू रूप से चल सके। इसके अलावा कस्बे में गंदे पानी के नालों की सफाई का कार्य भी अति शीघ्र शुरू कर दिया जाएगा। इसके लिए संबंधित जमादारों को पाबंद कर दिया जाएगा एवं जहां-जहां बरसाती पानी इकट्ठा होता है वहां पर अस्थाई तौर पर पंप सेट लगा दिए जाएंगे। ज्ञात रहे हैं करीबन 2 वर्ष पूर्व नगर पालिका ने गैनाणी की 30 लाख रुपए से अधिक राशि की खुदाई करवाई थी लेकिन माफ़ दंड के अनुसार खुदाई नहीं होने के कारण वर्तमान में गैनाणी में पूरी तरह से कीचड़ ही कीचड़ से भरी हुई है जिसके कारण पंप हाउस तक पानी पहुंचना बहुत मुश्किल हो रहा है।

इससे पूर्व भी जिला कलेक्टर पुष्पा सत्यानी ने भी निरीक्षण किया लेकिन समाधान नहीं हुआ। वर्तमान जिला कलेक्टर अभिषेक सुराणा बारिश से पूर्व कस्बे में पानी की निकासी की समस्या कस्बे वासियों को नहीं उठाना पड़े इसके लिए उन्होंने लगातार मीटिंगों के माध्यम से अधिकारियों को अलर्ट किया जा रहा है। इसके अलावा उपखंड अधिकारी रामकुमार वर्मा ने कहा कि गैनाणी की खुदाई के समय कस्बे वासी अलर्ट रहे हैं साथ ही अगर कहीं भी गड़बड़ दिखाई दे तो मेरे को तुरंत सूचना देकर अवगत करवाए।

बाल संरक्षण इकाई की त्रैमासिक बैठक आयोजित

सीकर (निसं)। अतिरिक्त जिला कलेक्टर रतन कुमार की अध्यक्षता में सोमवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जिला बाल संरक्षण इकाई की त्रैमासिक बैठक आयोजित हुई, जिसमें उन्होंने संबंधित विभागीय अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

अतिरिक्त जिला कलेक्टर रतन कुमार ने जिला बाल संरक्षण इकाई की त्रैमासिक बैठक में पूर्व में दिए गए दिशा-निर्देशों की विस्तार से समीक्षा कर आवश्यक निर्देश दिए। इस दौरान उन्होंने निर्देशित किया कि जिले में बाल श्रम के संबंध में श्रम विभाग आवश्यक कार्यवाही करें तथा बालश्रम से मुक्त करवाए गए बच्चों की काउंसलिंग कर उन्हें विद्यालयों में प्रवेश दिलवाया जाए।

अतिरिक्त जिला कलेक्टर रतन कुमार मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अशोक महारिया को निर्देश दिये कि जिला, ब्लॉक स्तर के राजकीय चिकित्सालयों में अनाथ बच्चों को छोड़ने के लिए कहां-कहां पर पालना गृह स्थापित है, उसकी विस्तृत सूचना भिजवायें।

उन्होंने शिक्षा विभाग को समस्त विद्यालयों में चाईल्ड राईट क्लब, प्रहरी क्लब के गठन के साथ ही नियमित बैठक आयोजित करने,ब्लॉक एवं पंचायत स्तर पर देख-रेख एवं संरक्षण की आवश्यकताओं वाले अनाथ, जरूरतमंद बच्चों को चिन्हित कर विभाग की विभिन्न योजनाओं से जोड़ने तथा ब्लॉक एवं पंचायत स्तर पर शिक्षा से वंचित बालकों का सर्वे करवाने के निर्देश दिये।

अतिरिक्त जिला कलेक्टर रतन कुमार ने महिला एवं बाल विकास विभाग को कुपोषित बालकों की आंगनबाडी कार्यकार्ताओं के माध्यम से अनाथ, उपेक्षित बालक-बालिकाओं की सूचना प्राप्त करने, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग को विभाग द्वारा बाल संरक्षण के क्षेत्र में पालनहार योजना से लाभान्वित करने, जिला परिवहन अधिकारी को बालवाहिनियों में निर्धारित संख्या से अधिक छात्र-छात्राओं के परिवहन करने पर की गई कार्यवाही की रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि समस्त विभागीय अधिकारी बैठक की अनुपालना रिपोर्ट बैठक से पूर्व भिजवाना सुनिश्चित करें, ताकि प्रगति की समीक्षा की जा सके।

अतिरिक्त जिला कलेक्टर रतन कुमार ने बाल नशा मुक्ति बैठक की समीक्षा करते हुए जिला शिक्षा अधिकारी को निर्देश दिये कि वे समस्त ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, पीईईओ को निर्देशित करें कि निजी व राजकीय शिक्षण संस्थानों के 100 मीटर के दायरे में कोई भी नशा पदार्थ तम्बाकू, गुटका, सिगरेट इत्यादि की बिक्री नहीं हो, इसके लिए जिला स्तर पर ,ब्लॉक स्तर पर एक नोडल अधिकारी, पीईईओ स्तर पर एक-एक नोडल अधिकारी की नियुक्ति करना सुनिश्चित करें।

अतिरिक्त जिला कलेक्टर ने आबकारी अधिकारी को निर्देशित किया कि शिक्षण संस्थानों के 200 मीटर की परिधि में संचालित शराब ठेकों के संबंध में आबकारी विभाग जांच कर ठोस कार्यवाही करें। इस दौरान बैठक में सीईओ जिला परिषद राजपाल यादव, अतिरिक्त जिला कलेक्टर शहर भावना शर्मा, सहायक निदेशक जिला बाल संरक्षण इकाई डॉ.गार्गी शर्मा, जिला बाल संरक्षण समिति अध्यक्ष अंकुर बहड़, सदस्य बिहारी लाल बालान, उप निदेशक आईसीडीएस सुमन पारीक, समन्वयक चाइल्डलाइन राहुल दानोदिया सहित संबंधित विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी और सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

मदर्स डे पर विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित

लक्ष्मणगढ़ शेखावाटी (निसं)। स्थानीय बगड़िया बाल विद्या निकेतन में मातृ दिवस समारोह पूर्वक आयोजित किया गया। नर्सरी से कक्षा 5 तक के प्राथमिक विभाग में मदर्स डे का एक खास कार्यक्रम आयोजित किया गया।

आयोजित कार्यक्रम के अतिथि के रूप में अनु शर्मा राजस्थान प्रशासनिक अधिकारी पर्यटन विभाग, डॉ मेहा पारीक स्त्री रोग विशेषज्ञ, जिला परियोजना प्रबंधक अर्चना मौर्य, डॉ ए के पांडे ट्रस्टी बगड़िया बाल विद्या निकेतन के सचिव पवन गोयनका, बगड़िया बी.एड. कॉलेज प्राचार्य डॉक्टर नरेश दाधीच, निकेतन प्राचार्य विपिन शर्मा, बगडिया एकेडमिक इंचार्ज डॉक्टर अर्चना पुरोहित, मोंटेसरी इंचार्ज निधि जोशी मंचासीन थे।

प्रारम्भ में मंचस्थ अतिथियों द्वारा मां सरस्वती के आवक्ष के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम में बच्चों ने अपनी माँ के प्रति स्नेह एवं धन्यवाद स्वरूप सुंदर नृत्य प्रस्तुत किये। जिया जोशी और हृदय जोशी ने और शकुन जोशी ने कविताएं प्रस्तुत की।कार्यक्रम में माताओं व बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार के खेल एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर आयोजित नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम स्थान ममता जांगिड़ व पुत्री ऋशु जांगिड द्वितीय स्थान ललिता माली व पुत्र अरनव माली, तृतीय स्थान नीतू शर्मा व पुत्री निवी शर्मा जबकि खेलकूद प्रतियोगिता में खट्टा मीठा प्रतियोगिता में अनु सैनी, गांठ खोल प्रतियोगिता में आरती बजाज, मैक्रोनी माला प्रतियोगिता में ममता जांगिड रही। जबकि लकी ड्रॉ की विजेता श्रीमती सुमन कुमावत को सभी मंचासीन अतिथियों द्वारा सम्मानित और पुरस्कृत किया गया। शारीरिक शिक्षक विमल पारीक के सानिध्य में विद्यालय के छात्र छात्रों द्वारा मलखम्म की शानदार प्रस्तुति की गई।

झुंझुनूं और खेतड़ी जेलों का निरीक्षण किया

झुंझुनूं, (निसं)। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव डॉ. महेंद्र केएस सोलंकी द्वारा जिला कारागृह झुंझुनूं का साप्ताहिक निरीक्षण एवं उप कारागृह खेतड़ी का मासिक निरीक्षण किया गया।

- **कारागृह के बंदियों का समय-समय पर स्वास्थ्य परिक्षण करने के लिए निर्देश प्रदान किए**

निरीक्षण के दौरान प्राधिकरण के सचिव डॉ महेन्द्र सर्वप्रथम जेल में बंद सजायाफ्ता बंदियों, अंडर ट्रायल बंदियों की संख्या, जेल की क्षमता की जानकारी उपाधीक्षक जिला कारागृह झुंझुनूं से प्राप्त की गई। इसके उपरांत निरीक्षण के दौरान जेल की साफ-सफाई देखी गई तथा विजिटर रूम, रसोई घर, गलियारा आदि की स्थिति व साफ-सफाई की भी जांच की गई। बंदियों को प्रदान की जाने वाली मेडिकल सुविधा, दवाईयों की उपलब्धता के संबंध में जानकारी प्राप्त की गई तथा कारागृह के बंदियों का समय-समय पर स्वास्थ्य परिक्षण करने के लिए निर्देश प्रदान किए गए। सचिव ने बताया कि निरीक्षण के दौरान महिला बंदियों से वार्तालाप कर उन्हें प्रदान की जानी वाली सुविधाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की तथा निःशुल्क विधिक सहायता की जानकारी प्रदान कर बंदियों के लिए तैयार किए गए खाने का निरीक्षण किया गया। इसी के साथ माननीय रालसा विधिक सेवा प्राधिकरण के विभिन्न आयाम जैसे विधिक सहायता, पीडित प्रतिकर स्कीम, नालसा द्वारा जारी दस कल्याणकारी स्कीम, रालसा द्वारा बंदीजन के लिए जारी कल्याणकारी स्कीम, महिलाओं एवं बच्चों के लिए जारी विभिन्न स्कीमों की जानकारी दी तथा न्याय सबके लिए की अवधारणा पर वर्तमान में पैपरलेस सहायता जैसे कि ऑनलाईन नालसा वेब पॉर्टल आदि की भी जानकारी प्रदान की।

चार दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम शुरू

पिलानी, (निसं)। बिरला पब्लिक स्कूल पिरानी के विजय सभागार में सोमवार से बिरला एजुकेशन ट्रस्ट के तत्वावधान में चार दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम का शुभारंभ पधारे हुए समस्त अभ्यगतों के द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। इससे पहले बिरला एजुकेशन ट्रस्ट के निदेशक मेजर जनरल एसएस नायर अति विशिष्ट सेवा मेडल ने पुष्प गुच्छ भेंटकर मुख्य अभ्यागत वक्ता प्रोफेसर सुधीर कुमार बोरई निदेशक बिट्स पिलानी का स्वागत किया।

बिरला पब्लिक स्कूल पिरानी के विजय सभागार में चार दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम का शुभारंभ पधारे हुए समस्त अभ्यगतों के द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से हुआ।

तत्पश्चात निदेशक ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। अचला वर्मा प्राचार्या बिरला बालिका विद्यापीठ ने मुख्य अभ्यागत वक्ता प्रोफेसर सुधीर कुमार बोरई का परिचय दिया। मुख्य वक्ता ने उच्च शिक्षा में छात्रों के कौशल आधारित शिक्षा के संदर्भ की तैयारी में विद्यालयों के योगदान विषय पर चर्चा की।

अपने चर्चा के दौरान मुख्य वक्ता ने बिट्स पिलानी तथा बिट्स के अन्य केंद्रों यथा बिट्स दुबई, बिट्स गोवा, बिट्स हैदराबाद और बिट्स मुंबई के बारे में संक्षिप्त रूप से बताते हुए उच्च शिक्षा में कौशल आधारित उच्च शिक्षा के निर्माण के चार प्रमुख स्तंभों यथा शिक्षा, व्यावसायिक उपलब्धता, एंटरप्रेन्योरशिप एवं रोजगार बारे मे विस्तार से चर्चा करते हुए इस प्रयोजन में विद्यालयों के महत्ती योगदान के संदर्भ में कुछ सुझाव देते हुए चर्चा की।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में बीके अदिति सिंघल ने शिक्षा के क्षेत्र में आध्यात्मिकता का महत्व विषय पर चर्चा करते हुए यह स्पष्ट किया कि आजकल विद्यालय और अभिभावक दोनों केवल अंकों की बढ़ोतरी की बात करते हैं। किंतु शिक्षा परीक्षा में प्राप्त अंक नहीं है। अपितु शिक्षा है जीवन के मूल्य और स्वयं को समझने की प्रक्रिया। बिरला एजुकेशन ट्रस्ट के पब्लिक रिलेशन ऑफिसर डॉ. मनोज जांगिड़ ने बताया कि प्रथम दिन के सभी कार्यक्रम विजय सभागार बिरला पब्लिक स्कूल पिलानी में संपन्न हुए।

अन्य आगामी तीन दिनों में बिरला शिक्षण न्यास के सभी विद्यालयों के विभिन्न केंद्रों पर उत्कृष्टता केंद्र सीबीएसई द्वारा निर्धारित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सभी विद्यालयों के शिक्षक विभिन्न समूहों में भाग लेंगे। प्रथम दिवस के कार्यक्रम में उप निदेशक वित्त घनश्याम ह गौड, धीरेंद्रसिंह प्राचार्य बिरला स्कूल पिलानी, सौरभ गुहा प्राचार्य बिरला पब्लिक स्कूल किशनगढ़, पवन वशिष्ठ प्राचार्य बिरला शिशु विहार पिलानी तथा डॉ. नितेश कुमार सिंह प्राचार्य बिरला पब्लिक स्कूल गंगानगर एवं सभी विद्यालयों के सभी शिक्षकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन वर्षा रत्ता ने किया।

सार-समाचार

नेत्र चिकित्सा परामर्श शिविर 18 को

झुंझुनूं, (निसं)। स्वर्गीय सत्यनारायण रूंगटा की पुण्य स्मृति में ललित रुंगटा ग्रुप नासिक के सौजन्य से रूंगटा परिवार द्वारा बहुउद्देशीय मेगा कैंप का आयोजन किया जाएगा। अग्रवाल सम्मेलन के जिलाध्यक्ष श्यामसुंदर जालान नूआंवाला ने बताया कि 18 मई 2025 रविवार को सुबह 9 बजे से दोपहर 12:30 बजे तक आरोग्य अस्पताल डॉक्टर टीपू जी का हॉस्पिटल गायत्री मंदिर के पास होगा शिविर का आयोजन किया जाएगा। जिसमें 13 विशेषज्ञ चिकित्सक अपनी सेवाएं देंगे। इनमें नेत्र चिकित्सा शेखावाटी के सुप्रसिद्ध डॉक्टर्स टीम, हड्डी एवं जोड़ प्रत्यारोपण व घूटना रोग विशेषज्ञ, यूरोलॉजिस्ट पेशाब की बीमारियों के विशेषज्ञ, न्यूरोलॉजिस्ट नसों की बीमारियों के विशेषज्ञ, गायनो महिला रोग विशेषज्ञ, जनरल फिजिशियन, दमा श्वांस व अस्थमा रोग विशेषज्ञ, क्षय टीबी रोग विशेषज्ञ, सीनियर फिजिशियन व अन्य डॉक्टर्स भी अपनी सेवाएं देंगे। जिनमें प्रमुख संस्थानों में कार्यरत विशेषज्ञ सीनियर्स डॉक्टर भी शामिल हैं। बीमारियों से संबंधित परामर्श और जांच, और दवाइयों की सुविधा भी उपलब्ध रहेगी। शिविर की तैयारियों को लेकर एक बैठक हुई। जालान ने बताया कि शिविर के संदर्भ में मंड्रेला गायत्री मंदिर परिसर में मीटिंग आयोजित की गई। मीटिंग में श्यामसुंदर जालान, रमेश कुमार तुलस्यान, पंकज कुमार रूंगटा, सुरेंद्र कुमार लाठ, सुशील कुमार रूंगटा, गौरव मित्तल, महेंद्र कुमार रूंगटा, डॉ. विधान टी रावल, भगवतीप्रसाद तुलस्यान, डॉ. बीके शर्मा, महेश कुमार लाठ एवं ग्राम के गणमान्य नागरिक व अग्रवाल समाज के प्रबुद्धजन काफी संख्या में उपस्थित रहे शिविर को सफल बनाने के लिए अलग-अलग टीम बनाकर जिम्मेदारियां सौंपी गई।

कांग्रेस की गोठड़ा मंडल की बैठक आयोजित

खेतड़ी, (निसं)। खेतड़ी उपखंड के गोठडा स्थित कांग्रेस कार्यालय में सोमवार शाम को गोठडा मंडल स्तरीय कांग्रेस कार्यकर्ताओं की बैठक का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि खेतडी विधान सभा प्रभारी प्रवीण जाखड थे। अध्यक्षता खेतडी प्रधान मनीषा गुर्जर ने की। विधान सभा प्रभारी प्रवीण जाखड ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि पार्टी को जो कार्यकर्ता मजबूती प्रदान करेगा वहीं पार्टी का सच्चा साथी होगा, जो पार्टी का नहीं वह किसी का नहीं हो सकता है। उन्होंने कहा कि पार्टी के कार्यकर्ताओं को मजबूत करना ही मंडल स्तरीय बैठक करने का मुख्य उदेश्य है। कार्यकर्ता घर घर जाकर पार्टी की उपयोगिता के बारे में लोगों को जागृत करना होगा। पार्टी को आगे तक ले जाने वाले ही कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारी दि जाएंगी। प्रधान मनीषा गुर्जर ने कहा कि हर मंडल की बैठक के बाद मंडल अध्यक्षों के नाम ऊपर भेजे जाएंगे। मंडल अध्यक्षों का चयन कार्यकर्ताओं के बीच से किया जाएगा। हर बूथ पर कांग्रेस के निष्ठावान कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारी दी जाएगी। सभी को मिलकर वर्तमान सरकार के खिलाफ मजबूती से लड़ना होगा। इस मौके पर शमशेर चौधरी, प्रभु दयाल गुर्जर, समाज सेवी जुगल किशोर सैनी, नासीर हुसैन, रमेश पांडे, शीशराम गुर्जर, रामेश्वर लाल गुर्जर, मनोज श्योराण, विक्रम गुर्जर, नरेश कुमार, शीशराम भगासरा, कृपाल बलोदा, दयानंद लांबा, प्रकाश भरगड, रामजीलाल डोई, राजेश नारवाल, श्रीचंद शर्मा, वासुदेव आदि मौजूद थे।

अज्ञात वाहन की टक्कर से नीलगाय घायल

सादुलपुर, (निसं)। एनएच 52 राजगढ़ में चुरू बाईपास पर खेमाणा रोड़ के पास एक नीलगाय को एक अज्ञात वाहन ने टक्कर मार कर घायल कर दिया। सोमवार शाम 5 बजे दी जानकारी के अनुसार वहां से गुजर रहे करणीसिंह ने घायल मादा नीलगाय को देखकर राजस्थान पत्रिका संवाददाता श्री भंवर सिंह ने वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में कार्य कर रही संस्था-वाईल्डलाईफ इन नेचर एंड ग्रीन सोशल ट्रस्ट विंग्स के अध्यक्ष सुमेर सिंह गुलपुरा को दी। जिन्होंने मौके पर टीम के साथ पहुंचकर घायल चौटिल नीलगाय को वन विभाग राजगढ के सहयोग से रेस्क्यू कर वाहन द्वारा उपचार हेतु राजकीय पशु चिकित्सालय पहुंचाया। क्षेत्रीय वन अधिकारी शंकरलाल स्वामी ने बताया कि मादा नीलगाय गर्भवती लगती है और इसकी हालत अब ठीक है। सुमेर सिंह गुलपुरा ने बताया कि समय पर सूचना मिलने से नीलगाय को बचाया जा सका है। इन कार्य में वन विभाग कर्मचारी राजू मीना कैटल गार्ड, विजेन्द्र कुमार, करणी सिंह, विजय सिंह, शंकरलाल ने सहयोग किया।

अपना घर की बैठक आयोजित

रतनगढ़ (निसं)। अपना घर (वृद्धाश्रम आश्रम) ट्रस्ट की साधारण बैठक रविवार को अपना घर परिसर में रखी गई। जिसमें उपस्थित भामाशाहो ने नर सेवा नारायण सेवा कि कहावत को चरितार्थ करते हुए मुक्त हस्त से अपना सहयोग प्रदान किया। इस अवसर पर बनवारी लाल रिणवा, सुरेश सेवदा, देवेंद्र यादव, प्रदीप दिलीप भरतिया, किशोर बिजारणिया, ओम गोदारा, मोतीलाल तातेड, सुरेंद्र हुड्डा आदि उपस्थित गणमान्य नागरिको ने अपना सहयोग प्रदान करने की स्वीकृति प्रदान की। ट्रस्ट की ओर से प्रमुख ट्रस्टी वी.पी. गोयल ने सभी भामाशाहों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर डॉ वेदप्रकाश पुरोहित अनूप जोशी, सीताराम शर्मा, डॉ अरविंद्र, डॉ गोपालदत शर्मा, महावीर रामगढ़िया, दीनदयाल खेतान, प्रताप बोथरा, श्याम सुंदर जोशी, रमेश कुमावत, त्र्यंबक शर्मा, नरेंद्र झंवर, किशन सराफ, भंवरलाल सहित अनेक लोग उपस्थित थे।

भागवत कथा का शुभारंभ कल से

रतनगढ़ (निसं)। तहसील के गांव लुंछ के कालका माताजी मंदिर प्रांगण में कालका माता सेवा समिति एवं भक्तजन द्वारा आयोजित संगीतमय श्री मद भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का आयोजन 14 से 20 मई तक होगा। श्री श्री 108 श्रीमती गीता देवी की 5वी पुण्य तिथि के उपलक्ष में आयोजित कथा का व्यासपीठ पर संत संजय महाराज के श्रीमुख से कथा का रसास्वादन कराया जाएगा। कथा का समय सुबह 10 से दोपहर 1 बजे तक रहेगा। इसी क्रम में 14 मई को प्रातः 9 बजे ठाकुर जी मंदिर से कालका माता मंदिर तक मंगल कलश शोभायात्रा निकाली जाएगी। साथ ही 21 मई को सुबह 9 बजे से हवन और प्रसाद का आयोजन किया जायेगा। कथा की अंतिम तैयारियों में ग्रामवासी लगे हुए है।

हल्की बरसात हुई

बीदासर (निसं) कस्बे में रविवार की रात्रि में धुल भरी आंधी के बाद तेज हवा के साथ लगभग 15 मिनट तक हल्की बरसात हुई। जिससे कस्बे के मुख्य मार्गों पर बरसाती पानी बहने लगा। मामुली बरसात में ही कस्बे के नाले व नालियों की सफाई नही होने से गंदा पानी सड़कों पर बहने लगा। जिससे आमजन को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। वहीं पालिका प्रशासन की सफाई व्यवस्था की पोल खुलकर सामने आ गई। बरसात से मौसम में ठंडक घुल गई तथा बरसात से मौसम सुहावना होने से नगरवासियों को गर्मी से राहत मिली। वही आंधी व बरसात के चलते कस्बे की विद्युत व्यवस्था चरमरा गई। जो बरसात रूकने के बाद आधें घंटे बाद बहाल हुई।

एकल नृत्य में पूजा सैनी व सचिन प्रथम

झुंझुनूं, (निसं)। वर्षा टीटी कॉलेज में चल रहे सांस्कृतिक सप्ताह के दौरान सोमवार को एकल नृत्य प्रतियोगिता आयोजित हुई। अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. राजेश कुमार शर्मा ने की। इस अवसर पर महाविद्यालय के बीएड प्रशिक्षुओं ने एकल नृत्य पर अपनी प्रस्तुतियां दी। प्रवक्ता सुमन झाझडिया ने बताया कि एकल नृत्य में छात्रा वर्ग में पूजा सैनी प्रथम, निकिता द्वितीय और सुनीता गुर्जर तीसरे स्थान पर रही। तो वहीं छात्र वर्ग में सचिन चावला प्रथम और प्रकाशचंद्र द्वितीय स्थान पर रहें। पूजा नायक व अंजू ने निर्णायक की भूमिका निभाई। इस अवसर पर महाविद्यालय के अन्य स्टाफ सदस्य व बीएड प्रशिक्षु मौजूद रहे।

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
कार्यालय सहायक आयुक्त (द्वितीय) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर 54/2025
(नाम वर्णन तथा निवास स्थान)
चूंकि श्री विशाल महला पुत्र श्री भागीरथ सिंह महला, बी-6, जमनापुरी, मुरलीपुरा, जयपुर राजस्थान-302039 ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17(1) के अन्तर्गत अखिल भारतीय निजी संस्थान फेडरेशन बी-5 तोदी नगर, जिला स्टेडियम के पास, सांवली रोड, तहसील व जिला सीकर-332001 के सम्बन्ध में जांच किये जाने के लिए आवेदन पत्र दिया है।
अतएवं धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करें।
और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 08.05.2025 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइंदा तारीख पेशी 14.07.2025
मोहर अदालत
सहायक आयुक्त (द्वितीय)
देवस्थान विभाग, जयपुर

दो करोड़ का डोडा-पोस्त जब्त, कंटेनर चालक समेत चार गिरफ्तार

रांची से पश्चिमी राजस्थान के जिलों में ले जाया जा रहा था डोडा-पोस्त

भरतपुर, (निसं)। भरतपुर पुलिस ने मादक पदार्थों के अब तक की सबसे बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया है। पुलिस ने दो करोड़ के डोडा-पोस्त के एक कंटेनर से जब्त किया है। साथ कंटेनर को एस्कॉर्ट कर रही स्कॉर्पियो को भी जब्त किया गया है। चार आरोपी झारखंड के रांची से जोधपुर में डोडा पोस्त की डिलीवरी देने जा रहे थे।

- आरोपी पुलिस से बचने के लिए जंगी एप्लिकेशन का इस्तेमाल कर रहे थे

भरतपुर पुलिस ने 2 करोड़ का डोडा पोस्त जब्त कर आरोपियों को गिरफ्तार किया।

आरोपी पुलिस के सर्विलांस से बचने के लिए जंगी एप्लिकेशन का इस्तेमाल कर रहे थे।

एसपी मृदुल कच्छावा ने बताया कि 11 मई को हरियाणा एसटीएफ और रेंज स्पेशल टीम की सूचना मिली थी कि भरतपुर के रूट से मादक पदार्थों की तस्करी होने वाली है। सूचना मिलने के बाद एसएचओ चिकसाना को निर्देश दिए गए। एसएचओ चिकसाना ने तुरंत ऊंचा नगला पर नाकाबंदी शुरू कर दी। सबसे पहले टीम ने कंटेनर और स्कॉर्पियो डिटेन किया। स्कॉर्पियो कंटेनर को एस्कॉर्ट कर रही थी। कंटेनर और स्कॉर्पियो को नाकाबंदी को रोककर चेक किया गया तो, कंटेनर में भारी मात्रा में डोडा-पोस्त पाया गया। स्कॉर्पियो में तीन लोग सवार थे, जिन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। साथ ही कंटेनर के ड्राइवर को भी गिरफ्तार कर लिया गया।

आरोपियों ने पूछताछ में बताया कि उन्हें एस्कॉर्ट और डोडा-पोस्त पहुंचाने के लिए प्रति व्यक्ति 50 से 80 हजार रुपये मिले थे। मादक पदार्थ की जांच की तो, उसका वजन 1996 किलो था। जिसे जब्त कर लिया गया। इसकी बाजार में कीमत लगभग 2 करोड़ के आसपास है। आरोपी पुलिस बचने के लिए जंगी एप्लिकेशन का इस्तेमाल कर रहे थे। इसी एप्लिकेशन से वह आपस में कम्युनिकेशन करते थे। जिससे पुलिस के सर्विलांस से बचा जा सके।

आरोपी मादक पदार्थ जोधपुर और पश्चिमी राजस्थान के अन्य जिलों में लेकर जा रहे थे। इसके बारे में जोधपुर आईजी विकास कुमार से चर्चा की गई है। आईजी जोधपुर की विशेष टीम भी बाकी बचे आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए प्रयास कर रही है। आरोपी मादक पदार्थ झारखंड के रांची से लेकर आ रहे थे। इस नेटवर्क में और कौन लोग शामिल हैं उनका पता लगाया जा रहा है।

रेलवे स्टेशन को बम से उड़ाने की धमकी दी, आरोपी गिरफ्तार

आरोपी ने नशे में जोधपुर रेलवे स्टेशन को बम से उड़ाने की धमकी दी

जोधपुर, (निसं)। पुलिस कंट्रोल रूम पर फोन कर जोधपुर रेलवे स्टेशन को बम से उड़ाने की धमकी देने वाले युवक को जीआरपी-आरपीएफ ने पाली रेलवे स्टेशन से गिरफ्तार किया है, जिसने बताया कि मजदूरी के पैसे नहीं मिलने से वह टेंशन में था। नशे में कंट्रोल रूम पर कॉल कर धमकी दे डाली। आरोपी की पहचान उत्तर प्रदेश जौनपुर आसपुर (मडियम) निवासी श्याम यादव (43) पुत्र रामवत यादव के रूप में हुई है।

- आरोपी ट्रेन पकड़कर साबरमती जा रहा था, जीआरपी-आरपीएफ ने पाली रेलवे स्टेशन से पकड़ा
- मजदूरी के पैसे नहीं मिलने से वह टेंशन में था, नशे में कंट्रोल रूम पर कॉल कर धमकी दे डाली

आरोपी हाल में जोधपुर में रह रहा था और कैटरिंग का काम करता था। जोधपुर में कैटरिंग का काम करने वाले युवक ने पुलिस कंट्रोल रूम पर कॉल करके शहर को बम से उड़ाने की धमकी दी। सिरफिरे की धमकी के बाद उसे पकड़ने के लिए पुलिस ने जोधपुर और पाली जीआरपी व आरपीएफ के साथ ज्वाइंट ऑपरेशन चलाया। चंद घंटे में ही मूलतया उत्तर प्रदेश जौनपुर निवासी आरोपी श्याम यादव को धर दबोचा। प्रारंभिक पूछताछ में सामने आया कि वह जोधपुर में कैटरिंग का काम करता है। ठेकेदार ने सैलरी नहीं दी तो नाराज होकर शराब पी। इसके बाद नशे में पुलिस कंट्रोल रूम पर फोन कर रेलवे स्टेशन और शहर को बम से उड़ाने की धमकी दे दी।

पुलिस उपायुक्त राजर्षि राज वर्मा ने बताया कि रविवार रात करीब नौ बजे पुलिस कंट्रोल रूम के डायल 100 पर एक अज्ञात नंबर से कॉल आया था, जिसमें शहर को बम से उड़ाने की धमकी दी गई थी। कंट्रोल रूम की टीम ने तत्काल इसकी सूचना उच्चाधिकारियों को दी और पुलिस की अलग-अलग टीम इसकी जांच में जुट गई। इसके लिए जोधपुर के अभय कमांड कंट्रोल सेंटर एडीसीपी लाभूराम, पुलिस जिला ईस्ट की साइबर सेल के एसआई राकेश सिंह की टीम लगातार फील्ड में संयुक्त टीमों के संपर्क में रही। कॉल करने वाले बदमाश की लोकेशन खंगाली तो ट्रेन में होने की जानकारी सामने आई। इस पर जोधपुर पुलिस ने जीआरपी थानाधिकारी मुक्ता पारीक व आरपीएफ इंस्पेक्टर लिखमा राम के साथ तमाम स्थानीय टीमें भी सक्रिय कर दी गई। बदमाश जोधपुर के सरदारपुरा थाना इलाके के महावीर कॉम्प्लेक्स के आसपास से ही कंट्रोल रूम पर कॉल किया था। वहां से बदमाश जोधपुर रेलवे स्टेशन पहुंचा और पाली की तरफ जाने वाली ट्रेन में सवार हो गया। पुलिस की टीमों ने ज्वाइंट ऑपरेशन चलाया और उस बदमाश की लोकेशन के साथ-साथ उस ट्रेन के हर कोच की तलाशी ली। जोधपुर रेलवे स्टेशन से ट्रेन लूणी होते हुए पाली की तरफ बढ़ती जा रही थी और संयुक्त टीम इसी ट्रेन के हर कोच की तलाश में जुटी रही। पाली मारवाड़ रेलवे स्टेशन पर पहुंचने पर वहां की टीमें भी इसी तलाशी में जुट गई और आखिरकार जीआरपी व आरपीएफ की टीमों ने बदमाश को पकड़ लिया, जिसे लूणी से पाली पहुंची पुलिस टीम के हवाले कर दिया गया। बाद लूणी पुलिस की टीम ने आरोपी को सरदारपुरा पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस अब उससे गहनता से पूछताछ कर धमकी देने के मकसद का पता लगाने में जुटी है।

किशोरी का अपहरण

श्रीगंगानगर, (निसं)। जिला मुख्यालय पर दो अज्ञात युवकों ने किशोरी का अपहरण कर लिया। इसे लेकर किशोरी की माता ने कोतवाली थाना में केस दर्ज करवाया है। मामले की जांच एएसआई जगमोहन को सौंपी गई है। किशोरी अपनी नानी व मामी के साथ बच्चे को स्कूल छोड़ने गई थी।

तीन बसों में आग लगी

गंगापुर सिटी, (निसं)। निजी बस स्टैंड पर रविवार रात तीन निजी बसें आग की चपेट में आ गई। पहले एक बस में आग लगी, फिर पास खड़ी दो अन्य बसों का पिछला हिस्सा भी जलने लगा। बस मालिक शकील ने बताया कि उसकी बस जयपुर से आकर रात नौ बजे बस स्टैंड पर खड़ी थी। आधे घंटे बाद उसे बस में आग लगने की सूचना मिली। स्थानीय लोगों ने तुरंत पुलिस और दमकल विभाग को सूचना दी। दमकल की गाड़ियां 10 मिनट में मौके पर पहुंची और आग पर काबू पा लिया। निजी बस ऑपरेटर यूनियन के पदाधिकारियों ने बस स्टैंड पर जमा कचरे को आग का संभावित कारण बताया है।

बीस लाख रुपये की स्मैक के साथ दो आरोपी गिरफ्तार

जालोर, (कासं)। जालोर जिले के बिशनगढ़ पुलिस ने सोमवार को एक सौ ग्राम अवैध मादक पदार्थ स्मैक बरामद कर दो आरोपियों को गिरफ्तार किया। अवैध मादक पदार्थ स्मैक परिवहन में प्रयुक्त मोटरसाइकिल को भी जब्त किया है। जब्त स्मैक की बाजार कीमत 20 लाख रूपये आंकी गई है।

- स्मैक परिवहन में प्रयुक्त बाइक को भी जब्त किया

जालोर जिले भर में अवैध मादक पदार्थ तस्करी की रोकथाम के लिए मिशन मदमर्दन के तहत "ऑपरेशन भौकाल" के तहत कार्यवाही करने के निर्देशानुसार जालोर पुलिस अधीक्षक ज्ञानचन्द्र यादव के निर्देशानुसार जिले में मादक पदार्थों की तस्करी के विरूद्ध कार्यवाही के लिए चलाये जा रहे अभियान के तहत बिशनगढ़ थानाधिकारी निम्बसिंह के नेतृत्व में पुलिस टीम द्वारा थाना हल्का क्षेत्र में समय-समय पर विशेष कार्रवाई की जा रही है।

नाकाबंदी के दौरान नेशनल हाईवे नम्बर 325 पर सरहद तीखी में अभियुक्त मुकेश कुमार पुत्र मंगनाराम माली, निवासी हैड पोस्ट ऑफिस रोड़ जालोर पुलिस थाना कोतवाली, जालोर एवं भरत कुमार पुत्र अचलाराम माली निवासी एफसी आई गोदाम जालोर पुलिस थाना कोतवाली जालोर के कब्जे से 100 ग्राम स्मैक बरामद कर स्मैक तस्करी में प्रयुक्त वाहन मोटरसाइकिल को जब्त किया गया। अभियुक्तों से अवैध मादक पदार्थ स्मैक की खरीद-फरोख्त के संबंध में पूछताछ जारी है।

ऑनलाइन गेमिंग से फ्रॉड मामले में तीन गिरफ्तार

जोधपुर, (कासं)। पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत पाक के बीच बढ़े तनाव के बीच में पुलिस आयुक्तालय की तरफ से संदिग्ध लोगों की धरपकड़ के लिए रात को पुलिस ने शहर की होटलों, सरायों आदि स्थलों पर विशेष रूप से चैकिंग अभियान चलाया था। इसी दौरान पावटा ए रोड पर आई एक होटल के कमरे में उत्तरप्रदेश के तीन युवक पकड़े गए।

- सात मोबाइल, 19 सिम कार्ड, 3 एटीएम कार्ड बरामद किये

युवक ऑनलाइन गेमिंग से जुड़े हैं, जोकि यहां पर किसी को ऑनलाइन गेम सिखाने के लिए आए थे। पुलिस ने इनके पास में कमरें की तलाशी ली तब सामान के बीच में सात मोबाइल, 3 एटीएम कार्ड, 19 सिम कार्ड इत्यादि मिले, जिसे पुलिस ने जब्त कर अग्रिम जांच आरंभ की है। आरोपियों को पहले शांतिभंग में पकड़ा गया। उनके खिलाफ आईटी एक्ट एवं जुआ अधिनियम का केस बनाया गया है। महामंदिर थाने के एएसआई हनुमानराम की तरफ से केस दर्ज करवाया गया है।

एएसआई हनुमानराम ने बताया कि शनिवार को पुलिस आयुक्तालय की तरफ से विशेष दिशा निर्देश होटलों, सरायों एवं ढाबों की चैकिंग के मिले थे। तब पावटा ए रोड पर आई एक होटल ट्रीबो में रेड देकर चैकिंग की गई। यहां पर रजिस्टर आदि में इंद्राज कार्रवाई देखी गई तब पता लगा कि आज ही तीन युवक उत्तरप्रदेश से आकर रूम में ठहरे है। इस पर पुलिस ने रूम में दबिश दी और वहां तीन युवकों उत्तरप्रदेश के सुल्तानपुर स्थित अंदरायपुर निवासी शाहबाद अहमद शाह पुत्र शहबाज अहमद शाह, मुजामिल शाह पुत्र अब्दूल शाह एवं अजयकांत पुत्र हनुमान प्रसाद तिवारी से पूछताछ की। इस पर पता लगा कि तीनों युवक ऑनलाइन गेम महादेव ऐप चलाते हैं, जोकि लोगों को फर्जी तरीके से स्क्रीन शॉट भेज कर धोखाधड़ी इत्यादि करते हैं।

एएसआई हनुमानराम ने बताया कि पूछताछ में यह भी पता लगा कि यह लोग शनिवार को ट्रेन द्वारा जोधपुर पहुंचे थे। बाद में उक्त होटल में रूम किराया लिया। होटल वाले को भी ऑनलाइन पेमेंट किया गया।

सूने मकान से जेवर व नगदी चुराई, चोर को पकड़ा

टोंक, (निसं)। मालपुरा थाना क्षेत्र के टोरड़ी गांव में एक सूने मकान से चोर जेवर और नकदी चोरी कर भाग रहा था, जिसको पुलिस ने ग्रामीणों की मदद से गिरफ्तार कर लिया, जिनके कब्जे से चोरी का माल और वारदात में इस्तेमाल की गई बाइक भी बरामद की गई है।

मालपुरा थाना प्रभारी चेनाराम बेड़ा ने बताया कि परिवादी सोनू पुत्र मदन निवासी टोरड़ी ने मालपुरा थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई कि रविवार को उसके मामा के बेटे की शादी में वह घर में ताला लगाकर शादी में गए थे, शाम को सोनू का छोटा भाई शिवराज और उसकी पत्नी मालपुरा से घर लौटे तो मकान के गेट की अंदर से कुंडी लगी हुई थी। खिड़की से झांकने पर एक युवक घर के अंदर दिखाई दिया, जो उन्हे देखकर भागने लगा, जिसको शिवराज पड़ोसी के मकान से होकर अंदर पहुंचा तो आरोपी ने उस पर हमला कर दिया, आरोपी ने बक्से और अलमारी के ताले तोड़ कर नकदी, जेवर चुरा लिए थे, उसके पास एक बड़ा बैग था। वह दीवार फांदकर पीछे के खंडहर मकान में भाग गया। जिसकी सूचना पर टोरड़ी चौकी को दी जहां मौके पर पहुंची पुलिस ने ग्रामीणो की सहायता से आरोपी शाहरुख उर्फ बाउजी पुत्र नूर मोहम्मद उम्र 28 साल निवासी करवार जिला बूंदी को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से चुराए गए सोने-चांदी के जेवर आदि बरामद कर लिए है। बरामद किए गए जेवरों में 500 ग्राम की चांदी की कनकती, एक 250 ग्राम की कनकती, एक जोड़ी 250 ग्राम वजनी पायजेब और अलमारी से चोरी किए गए 84 हजार रुपए बरामद हुए। पूछताछ में पता चला कि शाहरुख हिस्ट्रीशीटर है, जिसके खिलाफ पहले से 15 आपराधिक मामले दर्ज हैं।

इसी क्रम में देवली थाना क्षेत्र के पनवाड़ गांव में रविवार रात को सूने मकान में चोरी का मामला सामने आया है। पनवाड गांव निवासी अब्दुल कादिर जो रविवार को अपने परिजनों के शादी समारोह में गया हुआ था, जिसके पीछे से चोरों ने सूने मकान का ताला तोड़कर अंदर प्रवेश किया तथा अलमारी से एक सोने का हार और चार सोने की चूड़ियां व तीन जोड़ी चांदी की पायजेब और 15 हजार रुपए नकदी चुरा लिये।

Office of The Block Development Officer Panchayat Samiti Sayla (Jalore)

No.-731 Date-01-05-2025

Notice of Inviting Bid

Bid for Rate Contract of Construction Material Supply and Work tenders of various work as below are invited from interested bidders under various Gram Panchayats of Panchayat samiti sayla. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.raj.nic.in) of the state; and notice board of this office.

Name of Gram Panchayat	UBIN	Eproc Tender ID	Estimate Bid cost
Asana	ZJR2526GLRC00340	2025_PRD_464394_1	100.00 Lakh
Revtda	ZJR2526GLRC00337	2025_PRD_464420_1	100.00 Lakh
Veerana	ZJR2526GLRC00335	2025_PRD_464403_1	50.00 Lakh

Block Development Officer Panchayat Samiti Sayla (Jalore)

DIPR/C/____/2025

राजस्थान सरकार

कार्यालय चिकित्सा अधीक्षक एवं पदेन सदस्य सचिव, राजस्थान मेडिकेयर रिलीफ सोसायटी (आर.एम.आर.एस.) सवाई मानसिंह चिकित्सालय, जयपुर

क्रमांक/एफ 40/चिस्वा/स्टोर/2024/933 दिनांक-26.04.2025

बोली आमंत्रण सूचना (NIB)

इच्छुक बिडर्स से एक प्लेटलेट रिच प्लाजमा मशीन अल्ट्रा साउण्ड मशीन, ट्रेन्डूटेनियस इलेक्ट्रीकल नर्व स्टीमूलेंटर मशीन प्रेक्यूटेनियस बेलून माईक्रोकम्प्रेशन किट्स लीड एप्रेन (शर्ट एण्ड स्कर्ट) थाईराईड लीड सील्ड्स रेडियो फ्रिक्वेन्सी निडिल्स (22जी, 10 सेमी स्ट्रेट टिप) रेडियो फ्रिक्वेन्सी निडिल्स (22जी 5सेमी स्ट्रेट टिप) एवं एडवान्स एनेस्थेसिया वर्क स्टेशन्स मशीन के उपापन के लिए दिनांक 17.06.2025 सायं 5.00 पी.एम. तक बिड्स आमंत्रितकी जाती है। बिड की अन्य शर्ते एवं विस्तृत जानकारी राज्य सरकार के उपापन पोटल htt//sppp.rajasthan.gov.in एवं htt://eroc.rajasthan.gov.in प्राप्त की जा सकती है।

यू.बी.एन. नं. MCJ2526GLOB00007

चिकित्सा अधीक्षक एवं पदेन सदस्य सचि, आरएमआरएस सवाई मानसिंह चिकित्सालय, जयपुर

DIPR/C/5989/2025

कार्यालय पंचायत समिति सायला जिला-जालोर

क्रमांकः- एसबीएम / 2025-26/ई-बोली/113 दिनांक-28.04.2025

संक्षिप्त बोली सूचना

वितीय वर्ष 2025-26 में पंचायत समिति सायला अन्तर्गत की सभी ग्राम पंचायतों के अन्तर्गत आने वाले समस्त राजस्व गांवों के घरों एवं व्यवसायिक प्रतिष्ठानों से कचरा संग्रहण एवं पृथककरण, गांवों की सड़कों एवं नालियों की सफाई कार्य तथा सामुदायिक स्वच्छता परिसर की सफाई कार्य की सेवाओं हेतु राजस्थान लोक उपापन में पारदर्शिता अधिनियम 2012 व नियम 2013 (आदिनांक तक संशोधित) के तहत वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) अधिनियम 2017 के अन्तर्गत पंजीकृत इच्छुक विनिर्माता (ओं) / विक्रेता (ओं) / फर्म (ओं) / संवेदक (को) / आपूर्तिकर्ता (ओं) जो किसी भी राजकीय संस्थान / उपक्रमों से बोली लगाने से विवर्जित/ब्लेक लिस्टेड नही हो से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्युरमेन्ट प्रक्रिया से वेबसाईट http:// eproc.rajasthan.gov.in पर ऑन लाईन बोलियां ग्राम पंचायतों द्वारा आमंत्रित की गयी है। अतः इच्छुक बोलीदाता उक्त बोलियों में भाग ले सकेंगें। ई-बोली संबंधी विस्तृत विवरण http://eproc.rajasthan.gov.in एवं http://sppp.rajasthan.gov.in पर अथवा किसी भी कार्यदिवस में कार्यालय समय में उपापन संस्था के कार्यालय से अवलोकित की जा सकती है।

NIB-ZJR2526A0100

UBIN-ZJR2526WSRC00162 TO ZJR2526WSRC00205

उक्त बोलियों में अधिकतम उपापन राशि रू0 26.00 लाख तक है।

विकास अधिकारी पं.स.सायला (जालोर) राज.

DIPR/C/5970/2025

कार्यालय अधिशाषी अभियंता सार्वजनिक निर्माण विभाग, जिला खण्ड अजमेर

क्रमांक-EE/NIT 03/2025-2026/216 NIB-PWD2526A0374 दिनांक-01.05.2025

निविदा सूचना संख्या 03/2025-2026

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से बजट घोषणा वर्ष 2024-25 के तहत निम्नलिखित कार्य के लिए उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार/केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूर संचार विभाग/रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के एए श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो से (उनकी सक्षमता अनुसार) निर्धारित प्रपत्र में ई-टेन्डरिंग प्रक्रिया द्वारा ऑन लाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है-

क्र. सं.	जिला	कार्य पैकेज का विवरण (लाखों में)	अनुमानित लागत अवधि	कार्य प्राप्ति कार्यालय	निविदा प्रपत्र विक्रय/
1	अजमेर	Construction of Building of Dak Bunglow at isangan (WD2526WSOB01129)	158-73	08 माह	अधिशाषी अभियन्ता सानिवि जिला खण्ड अजमेर

निविदा से सम्बन्धित समस्त विवरण वेब साईट www.dironline.org, http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है।

इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक है।

(हजारी लाल अग्रवाल) अधिशाषी अभियंता सा.नि.वि. जिला खण्ड अजमेर

DIPR/C/____/2025

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग वृत्त जालोर

क्रमांकः अअ/वृत्त/जा/2025-26/166 दिनांकः 28.04.2025

निविदा सूचना संख्या : 02 वर्ष 2025-26

NIB No. PWD2526A0314

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से विभिन्न सड़क / पुल निर्माण कार्य हेतु उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवम दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में कुल 04 कार्य जिनकी लागत राशि रू. 657.00 लाख है, अतः उक्त कार्यों के लिए ईटेण्डरिंग प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है।

ऑनलाईन निविदा आवेदन डाउनलोड एवं अपलोड करने की तारीख	05 मई 2025 प्रातः 10.00 बजे से 23 मई 2025, सायं 6:00 बजे तक

निविदा से सम्बन्धित विवरण वेब साईट http://dipr.rajasthan.gov.in व http://sppp.rajasthan.gov.in व http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। सम्पूर्ण निविदा प्रक्रिया http://eproc.rajasthan.gov.in पर ऑनलाईन सम्पादित की जायेगी। इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेबसाईट पर http://eproc.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक है।

NIB No. PWD2526A 0314

क्र.सं.	यूबीएन नं.
1	PWD2526WSOB00946
2	PWD2526WSOB00947
3	PWD2526WSOB00948
4	PWD2526WSOB00949

(आस्को. सिधाडिया) अधीक्षण अभियन्ता सा.नि.वि. वृत्त, जालोर मोबाईल 9462288719

DIPR/C/____/2025

राजस्थान सरकार

समाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग

राजस्थान रेजीडेन्सियल ऐज्यूकेशन इन्स्टीट्यूशन्स सोसायटी (राईस)

कमरा संख्या 411, अम्बेडकर भवन, सिविल लाईन फाटक के पास, जयपुर

क्रमांक-एफ 1 (A) IV(01527स्था./राईस/साक्षात्कार/2016 जयपुर दिनांक यथा ई-हस्ताक्षरित

विज्ञप्ति

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के नियंत्रणाधीन राईस द्वारा संलित राजकीय आवासीय विद्यालयों में रिक्त पदों को शिक्षा विभाग में कार्यरत प्रधानाार्य, व्याख्याता, वरिष्ठ अध्यापकों (2 ग्रेड) एवं अध्यापक लेवल-2 (तृतीय श्रेणी अध्यापक) पुस्तकालयाध्यक्ष-।।।, शारीरिक शिक्षक-।।, प्रयोगशाला सहायक एवं प्रयोगशाला सेवक के पदों को साक्षात्कार से भरे जाने हेतु आवासीय विद्यालयों का दिनांकवार विवरण निम्नानुसार हैं-

प्रधानाचार्य पद हेतु

दिनांक	27.05.2025	28.05.2025
आवासीय विद्यालय का नाम	सागवाडा (डूंगरपुर), वजीरपुरा (टोंक), युसुफपुरा (टोंक), मछीपुरा (सवाई माधोपुर), अमरपुर (दौसा), अलापुरी (भरतपुर), मकसुदनपुरा (सवाई माधोपुर), देवडूंगरी (पाली), शिवगंज (सिरोही), शाहपुरा (भीलवाडा), टहला (अलवर), मसूदा (ब्यावर), जैतेश्वर धाम (बालोतरा) पिण्डवाडा (सिरोही), सुमेरपुर (पाली)	आटूण (भीलवाडा), अटरू (बारां), बगडी (दौसा),बालेटा (अलवर) हिंगी (कोटा) छान (सवाई माधोपुर) चाण्डपुरा (जालौर), धनवाडा (झालावाड), हिण्डौली (बूंदी), केनपुरा (पाली), खोडन (बांसवाडा), मण्डोर (जोधपुर), पावटा (डीडवाना-कुामन), चौथ का बरवाडा (सवाई माधोपुर), कुामन सिटी (डीडवाना-कुचामन)

व्याख्याता, वरिष्ठ अध्यापकों (2 ग्रेड) एवं अध्यापक लेवर-2 (तृतीय क्षेणी अध्यापक) पुस्तकालयाध्यक्ष-।।।, शारीरिक शिक्षक-।।, प्रयोगशाला सहायक एवं प्रयोगशाला सेवक पद हेतु

दिनांक	02.06.2025	03.06.2025	04.06.2025	05.06.2025	06.06.2025
आवासीय विद्यालय का नाम	आटुण (भीलवाडा) अमरपुर (दौसा) अलापुरी (भरतपुर) हिण्डोली (बूंदी) गुडला (करौली) मछीपुरा (स.मा.) पिपलोद (जयपुर) टहला (अलवर) कुचामन सिटी (डीडवाना-कुचामन)	बगडी (दौसा) तेलीखेडा (भीलवाडा) अटरू (बारां) युसुफपुरा (टोंक) जैतेश्वरधाम (बाडमेर) मकसूदनपुरा (स.मा.) केकडी (अजमेर) शाहपुरा (भीलवाडा) सुमेरपुर (पाली) पिण्डवाडा (सिरोही)	छाण (स.माधोपुर) चाण्डपुरा (जालोर) देवडूंगरी (पाली) देवलेन (करौली) धनवाडा (झालावाड) अन्धपुरा (करौली) मेहाडा गुर्जरवास (झुंझुनूं) पावटा (डीडवाना-कुचामन)	हरियाली (जालौर) चौथ का बरवाडा (स.मा.) मण्डाना (कोटा) मंडोर (जोधपुर) जैसिन्धर स्टेशन बालिका (बाडमेर) जैसिन्धर स्टेशन बालक (बाडमेर) वजीरपुरा (टोंक) शिवगंज (सिरोली)	मसूदा (ब्यावर) बालेटा (अलवर) केनपुरा (पाली) हिंगी (कोटा) खेडाआसपुर (डूंगरपुर) खोडन (बांसवाडा) सागवाडा (डूंगरपुर) भैंसवाडा (जालौर)

पात्र कार्मिक अपना आवेदन पत्र व्यक्तिश/डाक के माध्यम से दिनांक 20.05.2025 तक निदेशालय, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, अम्बेडकर भवन, सिविल लाईन फाटक के पास, जयपुर के राईस प्रशाखा कमरा नं. 411 में जमा कराना/भिजवाना सुनिश्ति करें।

केवल राजस्थान सरकार के प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा के राजकीय विद्यालयों में कार्यरत कार्मिक ही प्रतिनियुक्ति हेतु आवेदन कर सकते हैं। आवेदन प्रारूप, दिशा निर्देश रिक्त पदों का विश्वत एवं अन्य शर्ते विभाग की वेबसाईट पर डाउनलोड किया जा सकता है। विस्तृत जानकारी हेतु फोन नं. 0141-2226666 पर कार्य दिवस में प्रात 11.00 बजे से 6.00 बजे तक संपर्क किया जा सकता है।

निदेशक एवं संयुक्त शासन सचिव

DIPR/C/6041/2025

जयपुर विकास प्राधिकरण

ई-नीलामी

मई-II एवं जून-I, 2025

189 भूखण्ड/दुकान/गोदाम

151 व्यावसायिक भूखण्ड

01 किंग रेजीडेंसी योजना, जयपुर	07 शिवांक सिटी योजना, जयपुर	12 संतोष विला ब्लॉक-बी स्कीम, जयपुर	01 गोविंदम आश्रम योजना, जयपुर	01 हरित विहार योजना, जयपुर	02 दीनदयाल नगर, जयपुर	24 लोहा मंडी माचेडा फेज-1, जयपुर	04 गोविन्दम आकर्ड विस्तार योजना, जयपुर
01 ट्रांसपोर्ट नगर, जयपुर	11 आकृति एन्क्लेव-बी योजना, जयपुर	07 गोवर्धन विहार योजना, जयपुर	02 गनक एन्क्लेव योजना, जयपुर	04 हर्ष वाटिका योजना, जयपुर	10 शौर्य नगर योजना, जयपुर	04 दी रिंग एवेन्यू ब्लॉक-बी स्कीम, जयपुर	07 गोविन्दम रेजिडेन्सी-बी योजना, जयपुर
04 दी रियासत रेजीडेंसी योजना, जयपुर RERA Regi. No. RAJ/P/2022/2033	06 संस्थागत योजना गांव-दहमी कलां, जयपुर	06 खुशी संसार योजना, जयपुर	01 वेस्ट-वे हाइट्स योजना, जयपुर	02 वीआरवी पर्ल एन्क्लेव योजना, जयपुर RERA Regi. No. RAJ/P/2022/1799	05 अदिति एन्क्लेव वन स्कीम, जयपुर	08 नाथू लाल करोल एन्क्लेव योजना, जयपुर	03 लोहामंडी (ब्लॉक-सी) योजना, जयपुर
11 आदिनाथ सरोवर-ए योजना, जयपुर	01 न्यू आतिश मार्केट ग्राम-सुखलपुरा, जयपुर	01 गोल्डन रेजीडेंसी स्कीम, जयपुर RERA Regi. No. RAJ/P/2023/2595	01 पत्रकार कॉलोनी, जयपुर	01 कन्हैया कुंज, जयपुर	01 चेतन विहार, जयपुर	01 कृष्णा सिटी, जयपुर	01 लालकोठी स्कीम, जयपुर

15 आवासीय भूखण्ड

02 निलय कुंज फेज-।।, जयपुर RERA Reg. No. RAJ/P/2019/937	01 पत्रकार कॉलोनी, जयपुर	05 स्वर्ण विहार जयपुर	01 राजारामपुरा योजना, जयपुर	01 आनन्द विहार, जयपुर	01 हरित विहार, योजना, जयपुर	01 शौर्य नगर योजना, जयपुर	01 अनुपम विहार योजना, जयपुर	02 महल योजना डी-ब्लॉक, जयपुर

05 ग्रुप हाउसिंग

01 मानपुरा टीलावाला योजना, जयपुर	03 अनुपम विहार योजना, जयपुर	01 अनंतपुरा ग्रुप योजना, जयपुर

01 गोदाम

01 (टाइप-बी) ट्रांसपोर्ट नगर सीकर रोड, जयपुर

01 संस्थानिक

01 रामचन्द्रपुरा योजना जगतपुरा, जयपुर

08 मिश्रित उपयोग

01 वास्तु नगर जयपुर	07 मेट्रो एन्क्लेव जयपुर RERA Regi. No. RAJ/P/2019/1133

01 रिसोर्ट

01 निलय कुंज फेज-।।, जयपुर RERA Reg. No. RAJ/P/2019/937

01 रेस्टोरेंट/कैफेटेरिया

01 निलय कुंज फेज-।।, जयपुर RERA Reg. No. RAJ/P/2019/937

01 सर्विस यार्ड

01 ट्रांसपोर्ट नगर सीकर रोड,जयपुर

04 फार्म हाऊस

04 गोविंदपुरा रोपाड़ा योजना, जयपुर

01 निर्मित दुकान

01 अण्डरपास (एस.एम.एस. अस्पताल से ट्रोमा सेंटर) जयपुर

भूखण्डों की अधिक जानकारी के लिए कॉल करें: +91 9462 569 696

रेरा वेबसाईट: http://rera.rajasthan.gov.in

Scan QR Code For More Details

नीलामी की नियम व शर्तों के लिए जयपुर विकास प्राधिकरण की वेबसाईट www.jda.rajasthan.gov.in

इंदिरा सर्किल, जवाहर लाल नेहरु मार्ग, जयपुर- 302004

राज. संवाद/सी/2025-26/2130

जनता की समस्याओं का समाधान हमारी प्रमुख प्राथमिकता : भजनलाल शर्मा

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि जनता की समस्याओं का समाधान करना राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। सुशासन के उच्चतम मानकों के अनुरूप अधिकारी-कर्मचारी आमजन की परिवेदनाओं पर कार्यवाही करें। उन्होंने कहा कि आमजन की संतुष्टि ही हमारा प्रमुख ध्येय है।

शर्मा सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर नियमित जनसुनवाई कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने आमजन से व्यक्तिश: जनसंवाद करते हुए उनकी प्रत्येक समस्या को गंभीरता से सुना और अधिकारियों को इनके शीघ्र समाधान के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार का उद्देश्य ना केवल समस्याओं का समाधान करना है, बल्कि प्रशासनिक प्रक्रियाओं में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करते हुए गुड गवर्नेंस का बेहतरीन मॉडल स्थापित करना है। शर्मा ने लकवा ग्रस्त मुकेश सिंह राजावत को मुख्यमंत्री सहायता कोष से नियमानुसार आर्थिक सहायता जारी करने के निर्देश प्रदान किए। मुख्यमंत्री को राजावत ने अवगत कराया कि वे दो वर्ष से लकवा से पीड़ित हैं और उनका परिवार विषम आर्थिक परिस्थितियों का सामना कर रहा है। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को प्रत्येक प्रकरण को सूचीबद्ध करने के साथ ही उनका फॉलोअप सुनिश्चित करने और परिवादियों को सूचित करने के लिए भी निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि जो कार्मिक आमजन की परिवेदनाओं के निस्तारण में लापरवाही बरते, उनके विरूद्ध सख्त कार्रवाई की जाए। साथ ही, कार्मिक अगर सेवानिवृत्त हो गया है, तो उस स्थिति में उनकी पेंशन भी रोकी जाए। शर्मा ने सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता, ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज, कृषि, गृह, राजस्व, सिंचाई, परिवहन, पशुपालन, जयपुर विकास प्राधिकरण, नगर निगम, शिक्षा, चिकित्सा, पेयजल, मनरेगा, ऊर्जा सहित विभिन्न विभागों से संबंधित परिवेदनाओं को सुना और उनका मौके पर ही निस्तारण किया। इस अवसर पर आमजन और जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को उनके निवास पर नियमित जनसुनवाई के दौरान आमजन से व्यक्तिश: जनसंवाद करते हुए उनकी प्रत्येक समस्या को गंभीरता से सुना और अधिकारियों को इनके शीघ्र समाधान के निर्देश दिए।

- **'हमारे गुड गवर्नेंस के मॉडल में जनसेवा सर्वोपरि'**
- **'परिवेदनाओं के निस्तारण में कोताही नहीं होगी बर्दाश्त'**

एकल पट्टा प्रकरण में राज्य सरकार को रिवीजन याचिका वापस लेने की मंजूरी

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने एकल पट्टा प्रकरण में तत्कालीन आईएएस अधिकारी जीएस संधू और दो अन्य निष्काम दिवाकर व ओंकारमल सैनी को लेकर राज्य सरकार की ओर से पूर्व में पेश रिवीजन याचिका को वापस लेने की अनुमति दे दी है। दूसरी ओर अदालत ने मामले में सुप्रीम कोर्ट में एसएलपी करने वाले आरटीआई कार्यकर्ता अशोक पाठक को इंटर विनर बना लिया है। सीजे एमएम श्रीवास्तव की एकलपीठ ने यह आदेश राज्य सरकार और अशोक पाठक के प्रार्थना पत्रों पर सुनवाई करते हुए। इसके साथ ही अदालत ने आरोपियों की ओर से पेश याचिकाओं पर 14 मई से नियमित सुनवाई करने को कहा है। अदालत ने दोनों प्रार्थना पत्रों पर गत दिनों सुनवाई पूरी कर फैसला सुरक्षित रख लिया था।

राज्य सरकार की ओर से अतिरिक्त महाधिवक्ता शिवमंगल शर्मा ने बताया कि पूर्व में राज्य सरकार ने एसीबी कोर्ट में प्रार्थना पत्र पेश कर पूर्व आईएएस जीएस संधू सहित अन्य के खिलाफ लंबित मुकदमा को वापस लेने की गुहार की थी। जिसे एसीबी कोर्ट ने खारिज कर दिया था। एसीबी कोर्ट के इस आदेश के खिलाफ राज्य सरकार की ओर से हाईकोर्ट में रिवीजन याचिका दायर की गई। इस रिवीजन याचिका को वापस लेने की गुहार करते हुए राज्य सरकार ने दलील दी कि अभियोजन वापस लेने का पूर्व का निर्णय औचित्यहीन है और मौजूदा राज्य सरकार आरोपियों के खिलाफ उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर केस को आगे बढाना चाहती है। वहीं राज्य सरकार को यह अधिकार है कि यदि जांच में कोई कमी, गलती या जांच दोषपूर्ण है तो वह न्याय के लिए उस संबंध में पूर्व में लिए गए निर्णय पर भी पुनर्विचार कर सकती है। इसलिए उन्हें रिवीजन याचिका वापस लेने की मंजूरी दी जाए। जिसका विरोध करते हुए तत्कालीन अधिकारियों की ओर से कहा गया कि सरकार बदलने के चलते राजनीतिक कारण से रिवीजन याचिका को वापस लेने की अनुमति नहीं दी जा सकती।

वहीं अशोक पाठक की ओर से कहा गया कि मामला भ्रष्टाचार से जुडा है और यह अपराध किसी व्यक्ति विशेष के प्रति नहीं, बल्कि समाज के खिलाफ होता है। ऐसे में उन्हें मामले में पक्षकार बनने का अधिकार है। सुप्रीम कोर्ट ने भी उनकी एसएलपी पर सुनवाई की है। ऐसे में उन्हें मामले में पक्षकार बनाया जाए। जिसका विरोध करते हुए शांति धारीवाल व तत्कालीन अफसरों के वकीलों ने कहा कि आपराधिक मामले में किसी तीसरे पक्ष को पक्षकार नहीं बनाया जा सकता।

- **एसएलपी करने वाले आरटीआई कार्यकर्ता अशोक पाठक को बनाया इंटर विनर**

सामूहिक विवाह सम्मेलन में 11 जोड़ें बने हमसफर

श्री सिद्धपीठ बैनाड़ा धाम में सोमवार को अखिल भारतीय हरियाणा गौड़ ब्राह्मण महासभा के तत्वावधान में सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन किया गया।

जयपुर। श्री सिद्धपीठ बैनाड़ा धाम में सोमवार को अखिल भारतीय हरियाणा गौड़ ब्राह्मण महासभा के तत्वावधान में सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित किया गया। विवाह सम्मेलन कार्यक्रम की शुरूआत मंत्र उच्चारण व दीप प्रज्वलित कर की गई। सामूहिक विवाह सम्मेलन में समाज के नव विवाहित 11 जोड़ें जनप्रतिनिधियों व हजारों लोगों की उपस्थिति में एक दूसरे के हमसफर बने और एक दूसरे का साथ निभाने के वचन लिए।

नव विवाहित जोड़ों को आशीर्वाद देने के लिए कई मंत्री, विधायक व नेता व साधु संत समारोह में पहुंचे। समाज के दानदाताओं की और से नव विवाहितों को उपहार दिए गए। वहीं सम्मेलन में राष्ट्रीय अध्यक्ष बिरधी चंद शर्मा, जयपुर डेयरी डायरेक्टर व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रामनारायण कांजला असरपुरा, कोषाध्यक्ष शम्भू कुईवाला, सीताराम अलियाबाद समेत समाज के अन्य वक्ताओं ने आयोजन की सराहना करते हुए ऐसे सम्मेलनों की आवश्यकता बताई। राष्ट्रीय अध्यक्ष बिरधी चंद शर्मा ने कहा कि समाज में फिजूलखर्ची पर रोक लगाने व समाज को एकता के सूत्र में बांधने के लिए अखिल भारतीय हरियाणा गौड़ ब्राह्मण महासभा का यह आदर्श सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमे राजस्थान प्रदेश के साथ ही यूपी एमपी, दिल्ली, हरियाणा गुजरात से समाजबंधु इस सामूहिक विवाह सम्मेलन में भाग लेने पहुंचे।

नगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन मंत्री झाबर सिंह खर्रा, अशोक परनामी, जयपुर शहर सांसद मंजू शर्मा, बगरू विधायक कैलाश वर्मा, चंद्रमोहन मीणा बस्सी, जमवारामगढ़ विधायक महेंद्रपाल मीणा, राष्ट्रीय महामंत्री सीताराम अलियाबाद,राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष शंभू लाल कुईवाला, राष्ट्रीय सह कोषाध्यक्ष गोपाल गोगोरिया, राष्ट्रीय सह महामंत्री बंशी बोहरा, राष्ट्रीय संयोजक सुभाष गोगोरिया, राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष रामनारायण कांजला, रमेश गोगोरिया, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष रमेश शर्मा मावावाले, युवा राष्ट्रीय कार्यकारिणी अध्यक्ष सुनील टीलावाला, जयपुर ग्रामीण जिला अध्यक्ष बजरंग लाल बोहरा, युवा प्रदेश अध्यक्ष दुर्गाशंकर उदाला, रमेश गोगोरिया गोविंदपुरा हजारों की संख्या में लोग मौजूद रहे।

एमएलए, एमपी के हर आपराधिक मुकदमों की वर्षवार जानकारी मांगी

जयपुर। हाईकोर्ट ने एमएलए और एमपी से जुडे आपराधिक मामलों को लेकर राज्य सरकार से रिपोर्ट मांगी है। अदालत ने राज्य सरकार को सात अगस्त तक सालाना सारिणी के जरिए बताने को कहा है कि एमएलए और एमपी पर कितने आपराधिक प्रकरण किस साल में दर्ज हुए और वर्तमान में केस की सुनवाई किस स्तर पर चल रही है। सीजे एमएम श्रीवास्तव और जस्टिस इन्द्रजीत सिंह की खंडपीठ ने यह आदेश प्रकरण में लिए स्वप्रेरित प्रसंज्ञान पर दिए।

सुनवाई के दौरान राज्य सरकार की ओर से महाधिवक्ता राजेन्द्र प्रसाद ने शपथ पत्र पेश किया। शपथ पत्र में अदालत को जानकारी दी गई कि एमएलए और एमपी के लंबित मुकदमों की सुनवाई कम से कम टालने को लेकर निर्देश दिए हैं। वहीं लोक अभियोजकों को कहा गया है कि जिन मामलों में आरोप नहीं बन रहे हैं, उनका जल्दी निस्तारण किया जाए। राज्य सरकार की ओर से शपथ पत्र में यह भी बताया गया है कि हर मामले में नोडल अधिकारी नियुक्त किए गए हैं, जो प्रकरण को आसानी से ट्रैक कर सकेंगे। शपथ पत्र को रिकॉर्ड पर लेते हुए अदालत ने राज्य सरकार से सात अगस्त तक लंबित मुकदमों की वर्षवार जानकारी पेश करने को कहा है। गौरतलब है कि सुप्रीम कोर्ट ने नवंबर 2023 में एमएलए और एमपी से जुडे आपराधिक मामलों में दिशा-निर्देश जारी कर हाईकोर्ट को इन केसों की निगरानी करने को कहा था। हाईकोर्ट ने मुख्य न्यायाधीश को कहा था कि वे इन मामलों के संबंध में स्वप्रेरित प्रसंज्ञान लेकर प्रकरण दर्ज करें और इनकी सुनवाई कर रहे ट्रायल कोर्ट की मॉनिटरिंग करते हुए समय-समय पर इनकी ट्रायल की रिपोर्ट मांगे और जरूरत होने पर इनकी सुनवाई के लिए स्पेशल कोर्ट भी बनाए।

राजस्थान सरकार दे रही हर वर्ग को सम्मानजनक और आधुनिक आवास का अवसर : खर्रा

जयपुर। राजस्थान आवासन मण्डल की बहुप्रतीक्षित आवासीय योजनाओं का आज जयपुर विकास प्राधिकरण नागरिक सेवा केंद्र में शुभारम्भ किया गया। नगरीय विकास, स्वायत्त शासन एवं आवासन मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने इन योजनाओं की शुरुआत करते हुए कहा कि यह केवल निर्माण नहीं, बल्कि प्रदेशवासियों को सुरक्षित और सुविधायुक्त जीवन की ओर ले जाने वाला कदम है।

खर्रा ने बताया की इन 5 योजनाओं के तहत कुल 427 आवास/फ्लैट्स बनाए जाएंगे, जो जयपुर, बारां, बूंदी और धौलपुर जैसे जिलों में आमजन को एक बेहतर आवासीय विकल्प देंगे। मुख्य योजनाओं में गुलमोहर अपार्टमेंट, मानसरोवर (जयपुर), गंगा अपार्टमेन्ट, प्रतापनगर (जयपुर), गजनपुरा योजना, बारां, लाखेरी योजना, बूंदी, बाड़ी रोड़ योजना, धौलपुर शामिल हैं।

इस अवसर पर मंत्री खर्रा ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार हर वर्ग को आवास उपलब्ध कराने के लिए कृतसंकल्पित है। उन्होंने कहा की राज्य सरकार सिर्फ मकान नहीं दे रही , बल्कि एक सम्मानजनक जीवन का माध्यम दे रही हैं। उन्होंने बताया कि सभी योजनाएं समयबद्ध, पारदर्शी और गुणवत्तापूर्ण ढंग से विकसित की जाएंगी, ताकि लाभार्थियों को आधुनिक जीवन की समस्त सुविधाएं मिल सकें।

शुभारम्भ समारोह में आवासन मण्डल के अध्यक्ष वैभव गालरिया, आवासन आयुक्त डॉ रश्मि शर्मा सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी, जनप्रतिनिधि, आम नागरिक व मीडिया प्रतिनिधि उपस्थित रहे। सभी ने सरकार के इस निर्णय का स्वागत करते हुए इसे विकास की दिशा में एक मजबूत कदम बताया।

नगरीय विकास मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने राजस्थान आवासन मण्डल की पांच आवासीय योजनाओं की शुरुआत की।

भारतीय सेना का ऑपरेशन सिंदूर अभी जारी : मदन राठौड़

जयपुर। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने ऑपरेशन सिंदूर को लेकर पत्रकारों के सवाल पर कहा कि पहलगाम हमले के विरोध में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ऑपरेशन सिंदूर चलाकर आतंकवादियों को सबक सिखाने के साथ आतंक के प्रशिक्षण केंद्रों को ध्वस्त करने का ऐतिहासिक कार्य किया है। इतना ही नहीं, पाक की सीमा में घुसकर आतंकवादियों को पैदा करने वालों को भी नेस्तनाबूद कर दिया। भारतीय सेना की कार्रवाई आतंकवाद के खिलाफ थी, इसी के चलते ऑपरेशन सिंदूर चलाया गया और अभी भी जारी है।

राठौड़ ने कहा कि देश के शीर्ष नेतृत्व ने यह स्पष्ट कर दिया कि पाकिस्तान ने घुटने टेकते हुए चर्चा के लिए समय मांगा और हमारे नेतृत्व ने चर्चा के लिए समय दिया है। इसमें किसी की भी मध्यस्ता नहीं की गई। भारत का मकसद आतंकवादियों को सबक सिखाने का था और अपने मकसद में भारतीय सेना शत प्रतिशत सफल हुई। हालात यह हो गए कि जो बच गए, वो भी मौत मांग रहे है। ऑपरेशन सिंदूर चलाकर भारतीय सेना ने आतंकवादी, आतंकवादियों के प्रशिक्षण केंद्र और आतंकियों को पनाह देने वालों के खिलाफ कार्रवाई को अंजाम दिया है। ऑपरेशन सिंदूर के तहत करीबन 100 से अधिक आतंकियों को मारा गया है। राठौड़ ने कहा कि पाकिस्तान की विश्वसनीयता नहीं है, ऐसे में भारतीय सेना का ऑपरेशन सिंदूर जारी है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कहा कि पाकिस्तान ने नापाक हरकतों को अंजाम देते हुए भारत में आम लोगों को शिकार बनाया है। हालांकि भारतीय सेना ने उनके ड्रोन हमलों को भारतीय जमीन पर गिरने से पहले ही नष्ट कर दिया। भारतीय सेना ने पाकिस्तान के एयरबेस को भी ध्वस्त करने का ऐतिहासिक काम किया। राठौड़ ने ऑपरेशन सिंदूर चलाने का उद्देश्य एक बार फिर स्पष्ट करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का लक्ष्य आतंकवाद है और रहेगा। ऐसे में विपक्ष को धैर्य रखने की भी जरूरत है। प्रश्न करना विपक्ष का अधिकार है लेकिन आलोचना करना सही नहीं है। राठौड़ ने कहा कि देश की कुटनीतियों को उजागर किया जाए, यह भी जरूरी नहीं है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कंवरलाल मीणा की विधायकी के सवाल का जवाब में कहा कि कितने आश्यर्च की बात है कि कांग्रेस कंवरलाल मीणा की विधायकी पर सवाल कर रही है, जबकि एक विधायक 20 लाख रूपए की रिश्वत लेते हुए पकड़ा जाता है और कांग्रेस पार्टी का एक भी नेता इस पर कुछ भी नहीं बोलता। क्या यह कांग्रेस का आपसी समझौता है, या मिलीभगत है या फिर बीएपी पार्टी से उनकी आपसी दोस्ती के चलते चुप्पी साधे हुए है। कांग्रेस को यह भी स्पष्ट कर देना चाहिए।

अलवर के कोटकासिम प्रधान संता देवी ने समर्थकों के साथ ग्रहण की भाजपा की सदस्यता

जयपुर। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की रीति और नीति से प्रभावित होकर लगातार भाजपा परिवार बढ़ता जा रहा है। आमजन के साथ बड़ी संख्या में विपक्ष के लोग भी भाजपा की सदस्यता ग्रहण कर रहे है। सोमवार को अलवर जिले के किशनगढ़ विधानसभा की कोटकासिम प्रधान संता देवी, पूर्व सरपंच रामफल गुर्जर, नवल सिंह जाट और पूर्व प्रधान रामनिवास गुर्जर के साथ उनके सैकड़ों समर्थकों ने भाजपा परिवार की सदस्यता ग्रहण की है। भाजपा परिवार में पार्टी का दुपट्टा पहनाकर और मिठाई खिलाकर सदस्यता ग्रहण करवाई गई।

राठौड़ ने कहा कि आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जहां एक ओर हर वर्ग, हर समुदाय के लोगों के उत्थान के लिए कार्य कर रहे है, वहीं दूसरी ओर अपनी दूरदर्शी नीतियों के चलते विश्व में नई भारत की पहचान बना रहे है।

सभी पंजीकृत पशुओं का बीमा यथाशीघ्र कराने के निर्देश

जयपुर। शासन सचिव पशुपालन, गोपालन और मत्स्य डॉ समित शर्मा की अध्यक्षता में सोमवार को वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से राज्य स्तरीय मासिक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। इस राज्य स्तरीय समीक्षा बैठक में पशुपालन निदेशक तथा आरएलडीबी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ आनंद सेजरा, एसआइपीएफ के निदेशक कुशल तथा पशुपालन विभाग के वित्तीय सलाहकार मनोज शांडिल्य सहित विभाग के समस्त अतिरिक्त निदेशक तथा सभी वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। जिलों के संयुक्त निदेशक तथा वरिष्ठ पशु चिकित्सा अधिकारी बैठक में वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े।

मंगला पशु बीमा योजना के क्रियान्वयन में जारी किए जा रहे स्वास्थ्य प्रमाण पत्रों एवं बीमा की प्रगति की समीक्षा करते हुए डॉ शर्मा ने विभाग को पंजीकरण के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बधाई दी और सभी पंजीकृत पशुओं का बीमा यथाशीघ्र कराने के निर्देश दिए जिससे पशुपालकों को योजना का जल्द से जल्द लाभ मिलना शुरू हो सके। उन्होंने नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि स्वास्थ्य प्रमाण पत्र जारी होने और बीमा होने के बीच काफी बड़ा अंतर है। इसका कारण सर्वे टीम की कमी है। उन्होंने सर्वेयर कंपनी को जल्द से जल्द इस अंतर को कम करने का निर्देश दिया। उन्होंने वित्तीय वर्ष 2025-26 के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अभी से अधिकारियों को योजना बनाने के निर्देश दिए। इस अवसर पर शासन सचिव डॉ समित शर्मा ने मोबाइल वेटरिनरी यूनिट के डुअल और हाइब्रिड मोड में संचालन की समीक्षा करते हुए पर्यवेक्षण को और अधिक प्रभावी बनाने पर जोर दिया। उन्होंने एमवीयू के पर्यवेक्षण के लिए गूगल शीट भरने के सख्त निर्देश जिलों को दिए।

उन्होंने कहा कि एमवीयू के प्रभावी पर्यवेक्षण में अभी भी कमियां पाई जा रही हैं इसलिए इसका पर्याप्त निरीक्षण सुनिश्चित करें। इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही स्वीकार्य नहीं होगी। कुछ जिले अच्छा काम कर रहे हैं उनसे परामर्श कर अपने कार्य में सुधार लाएं।

पशु चिकित्सा संस्थानों में दवाओं की उपलब्धता और बिलों के भुगतान पर चर्चा करते हुए डॉ शर्मा ने कहा कि किसी भी परिस्थिति में दवाइयों की उपलब्धता में कमी नहीं आनी चाहिए। उन्होंने अधिकारियों को प्रत्येक पशु चिकित्सा संस्थान में पर्याप्त संख्या में दवाइयां उपलब्ध कराने के निर्देश देते हुए कहा कि समय रहते उन्हें दवाओं की आपूर्ति सुनिश्चित की जाए। उन्होंने सभी अधिकारियों को निर्देश दिए कि किसी भी स्तर पर दवाइयों की एक्सपायरी नहीं होनी चाहिए और दवाइयों का समुचित तथा समय पर उपयोग होना चाहिए। अगर किसी जिले में कोई दवा काम नहीं आ रही हो तो जिन जिलों में उसकी जरूरत है वहां भिजवाने की व्यवस्था करें। विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ सुरेश मीना ने बताया कि अप्रैल से जून तक की मांग संकलित कर क्रयादेश निदेशालय स्तर से जारी कर दिए गए हैं, फर्मों द्वारा निरंतर सप्लाई जारी है।

इस अवसर पर विभाग के निदेशक डॉ आनंद सेजरा ने सभी जिलों के संयुक्त निदेशकों से मासिक प्रगति रिपोर्ट निर्धारित सॉफ्टवेयर में ही भिजवाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि हर ब्लॉक पर बीवीएचओ को मैन विथ मशीन और वाहन की सुविधा दी गई है परंतु जिलाधिकारी उसका उपयोग नहीं कर रहे हैं। सभी जिले यह व्यवस्था सुनिश्चित करें जिससे काम में गति और गुणवत्ता दोनों आएगी। बैठक में विभाग के अधिकारियों ने विभिन्न योजनाओं की प्रगति की प्रस्तुति दी।

पशुपालन, गोपालन और मत्स्य शासन सचिव डॉ.समित शर्मा की अध्यक्षता में पशुपालन विभाग की राज्य स्तरीय समीक्षा बैठक आयोजित की गई।

कांग्रेस ने फिर उठाई कंवरलाल मीणा की विधानसभा सदस्यता रद्द करने की मांग

जयपुर। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा और नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने भाजपा विधायक कंवरलाल मीणा की विधानसभा सदस्यता तुरंत रद्द करने की मांग एक बार फिर उठाई है।

डोटासरा ने कहा कि अंता विधानसभा क्षेत्र से विधायक कंवरलाल मीणा को आपराधिक मुकदमे में दी गई तीन वर्ष की सजा को उच्च न्यायालय द्वारा बरकरार रखा गया और उच्चत्तम न्यायालय द्वारा इस फैसले के विरूद्ध प्रस्तुत अर्जी को भी खारिज कर दिया गया है, किन्तु विधानसभा अध्यक्ष ने विधायक की सदस्यता को निरस्त करने का निर्णय नहीं लिया है, जबकि नियमानुसार दोष सिद्ध होने पर विधायक की सदस्यता स्वत: ही निरस्त होनी चाहिये। उन्होंने कहा कि 5 मई को कांग्रेस पार्टी द्वारा विधानसभा अध्यक्ष के नाम विधायक कंवरलाल मीणा की सदस्यता समाप्त करने के लिये ज्ञापन भी सौंप दिया गया था, किन्तु विधानसभा अध्यक्ष द्वारा इस प्रकरण को ठण्डे बस्ते में डालकर निर्णय नहीं लिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यदि विधानसभा अध्यक्ष द्वारा आगामी 24 घण्टे में विधायक की सदस्यता समाप्त करने का निर्णय नहीं लिया गया तो कांग्रेस पार्टी आन्दोलन तथा विधिक कार्यवाही करने हेतु निर्णय लेने के लिये विचार-विमर्श करेगी। उन्होंने कहा कि एक ओर तो गुजरात की अदालत द्वारा गुजराती भाषा में पारित निर्णय का पढ़कर लोकसभा से 24 घंटे के अंदर कांग्रेस नेता राहुल गाँधी की लोकसभा सदस्यता को समाप्त कर दिया गया था, दूसरी ओर भाजपा शासन में लगभग 25 दिन बीतने के पश्चात् भी दोष सिद्ध होने पर विधायक की सदस्यता पर निर्णय नहीं लिया जा रहा है।

विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने अंता से भाजपा विधायक कंवर लाल मीणा की सदस्यता को लेकर बरकरार अनिश्चय की स्थिति को विधान सभा की ऐतिहासिक संवैधानिक परम्पराओं पर कुठाराघात बताया है। जूली ने इस सम्बन्ध में पुन: विधान सभा अध्यक्ष को पत्र लिखकर आग्रह किया है कि राजस्थान विधान सभा की गौरवशाली परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए इस सम्बन्ध में निर्णय लेकर अविलम्ब भाजपा विधायक की सदस्यता को निरस्त करें।

जूली ने पत्र में लिखा है कि यह बेहद अफसोस की बात है कि कंवरलाल मीणा विधायक अंता की सदस्यता के बारे में आदिनांक तक कोई निर्णय नहीं लिया गया है, जबकि "लिली थोमस बनाम भारत संघ" प्रकरण में यह स्पष्ट किया गया है कि जिस दिन से राजस्थान उच्च न्यायालय तथा उसके पश्चात् सर्वोच्च न्यायालय द्वारा भाजपा विधायक की सजा यथावत् रखी गई, उसी दिन से इनकी सदस्यता रद्द हो जानी चाहिए थी, लेकिन ऐसा नहीं करके कानून का उपहास उडाया जा रहा है। जूली ने कहा कि उच्चतम न्यायालय द्वारा अपील खारिज किये जाने के बाद अब और कोई कानूनी रास्ता नहीं बचता है, इसलिए उनकी सदस्यता जाना और कारावास निश्चित है।

जूली ने अध्यक्ष से मांग की है कि आप अपने अधिकारों का समुचित उपयोग करते हुए आज ही कंवर लाल मीणा की सदस्यता निरस्त कर निष्पक्षता का उदाहरण प्रस्तुत करने के साथ ही राजस्थान विधान सभा की गौरवशाली परम्पराओं को बनाये रखें।

- **डोटासरा बोले, "विधानसभा अध्यक्ष ने दबा रखी है फाइल"**
- **जूली ने फिर लिखा विधानसभा अध्यक्ष को पत्र**

हत्या के आरोपी दीपक नायर ने अजमेर जेल से फोन कर बहन को धमकी दी

गत दिनों दीपक नायर ने मंदिर के चौकीदार और दो दोस्तों की निर्मम हत्या कर दी थी

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर के दो अलग-अलग थाना क्षेत्रों में चौकीदार और दो दोस्तों की निर्मम हत्या के मामले में गिरफ्तार दीपक नायर एक बार फिर चर्चाओं में है। इस बार उसने पैसे की मांग को लेकर जेल से फोन कर अपनी बहन को जान से मारने की धमकी दी है।

जानकारी के अनुसार दीपक नायर ने गत दोनों भीलवाड़ा शहर में अय्यप्पा मंदिर के चौकीदार की निर्मम हत्या की। उसके बाद जांच के लिए उसके बापू नगर स्थित मकान पर जब पुलिस पहुंची तो वहां दो और लोगों की सड़ी गली-लाश मिली थी। यह दोनों लोग उसके दोस्त थे, जिन्हें भी उसने चौकीदार की हत्या से पूर्व मौत के घाट उतार दिया था। इस मामले में सुभाष नगर थाना पुलिस की जांच पूरी होने के बाद प्रोडक्शन वारंट पर प्रताप नगर थाना पुलिस ने उसे गिरफ्तार किया और दो दोस्तों की हत्या के मामले में गहनता से जांच शुरू की गई।

दीपक की बहन लता सहदेवन ने एसपी को लिखित शिकायत देकर कार्रवाई की मांग की है।

जांच पूरी होने के बाद उसे कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया। अभी आरोपी दीपक अजमेर जेल में बंद है। उसकी बहन का आरोप है कि उसने अजमेर जेल से पैसे की मांग को लेकर अपनी बहन को जान से मारने की धमकी दी है।

इतना संगीन अपराध करने के बाद आरोपी को जेल में फोन कहां से उपलब्ध हुआ। जेल से फोन पर जान से मारने की धमकी देने के मामले में भीलवाड़ा में चर्चाओं का दौर है। पुलिस इस मामले में तीनों हत्या के कारणों का स्पष्ट खुलासा अब तक भी नहीं कर पाई है और वहीं दूसरी ओर निर्मम हत्या का आरोपी अपने ही परिवार के लोगों को जान से मारने की धमकी देकर फिर से चर्चाओं में है। मामले में दीपक की बहन लता सहदेवन पति शशि लांबियार ने एसपी को लिखित शिकायत देकर मामले में कार्रवाई की मांग की है।

- अजमेर जेल में बंद है आरोपी, जेल से फोन पर जान से मारने की धमकी देने के मामले में भीलवाड़ा में चर्चाओं का दौर

विधायक राजेंद्र भांबू सड़क हादसे में घायल हुये

झुंझुनूं, (निसं)। विधायक राजेंद्र भांबू सोमवार शाम को झुंझुनूं शहर में ही सड़क हादसे में घायल हो गए। जानकारी के मुताबिक विधायक राजेंद्र भांबू सोमवार को मेहरादासी गए हुए थे, जहां पर डिप्टी सीएम दिया कुमारी आई हुई थी। यहां से वापिस वो झुंझुनूं में अपने कार्यालय में आ रहे थे। रोड नंबर तीन पर गोलाई मोड़ के पास सामने से आ रही एक हरियाणा नंबर की कार ने भांबू की गाड़ी को टक्कर मार दी। जिससे दोनों गाड़ियां क्षितग्रस्त हो गई। वहीं भांबू के भी दांई आंख पर चोट लगी। भांबू को तुरंत दूसरी गाड़ी से अग्रसेन सर्किल के समीप स्थित कैलाश केसरी अस्पताल ले जाया गया। जहां पर भाजपा जिला महामंत्री राजेश दहिया, भाजपा नेता रवि गुप्ता, सीए मनु धनखड़ समेत अन्य भाजपा नेता पहुंचे। डॉ. कमलचंद सैनी के निर्देशन में चिकित्सकों ने इलाज किया। भांबू के इस हादसे में सिर्फ दांई आंख पर चोट लगी है। जहां पर पट्टी कर उनको छुट्टी दे दी गई है। इधर, भांबू के घायल होने की सूचना पर बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उनके निवास पर पहुंचकर कुशलक्षेम पूछी। हादसे के बाद दोनों गाड़ियों को गोलाई मोड़ से हटाया गया। भांबू की गाड़ी को टक्कर मारने वाली गाड़ी हरियाणा नंबरों की थी। जिसमें दो युवक सवार थे। इधर, हादसे की सूचना के बाद मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने विधायक भांबू को फोन किया। उन्होंने भांबू से हादसे की जानकारी ली। साथ ही स्वास्थ्य के बारे में भी पूछा। इस दौरान सीएम ने एक अभिभावक की तरह भांबू को अपना ख्याल रखने और प्रोपर इलाज लेने की बात कही। कोतवाली पुलिस ने भी मामले में कार्रवाई करते हुए विधायक की गाड़ी को टक्कर मारने वाली हरियाणा की गाड़ी को जब्त कर लिया है। वहीं गाड़ी में सवार दो युवकों को भी हिरासत में ले लिया है। शहर कोतवाल हरजिंदर सिंह ने बताया कि दोनों युवक हरियाणा के बहल के पास के रहने वाले हैं। जिन्होंने बताया कि वे जयपुर कोई एग्जाम देने जा रहे थे। दोनों से पूछताछ की जा रही है।

विधायक राजेंद्र भांबू को अस्पताल ले जाया गया, जहां उपचार किया।

- हरियाणा नंबर की कार ने भांबू की गाड़ी को टक्कर मार दी, दो युवक हिरासत में

लांबा और नालवा को पिलानी में शामिल करने का विरोध

झुंझुनूं, (निसं)। जिले की चिड़ावा पंचायत समिति के अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायत लांबा और नव सृजित पंचायत नालवा को पिलानी पंचायत समिति में शामिल किए जाने की चर्चा से ग्रामीणों में रोष है।

सोमवार को लांबा गांव के भरतलाल नूनियां की अगुवाई में लांबा गांव के साथ-साथ नवसृजित नालवा पंचायत के दिलालपुरा, कुरैशी नगर, गोविंदपुरा, काजियों की ढाणी और नालवा गांव के लोग बड़ी संख्या में झुंझुनूं पहुंचे। उन्होंने कलेक्टर रामावतार मीणा से मुलाकात कर अपनी लिखित आपत्ति दी और कहा कि जिला कलेक्टर द्वारा जारी किए गए पंचायतों के पुनर्गठन ड्राफ्ट में लांबा से अलग करके नालवा पंचायत बनाई गई, जिसका कोई विरोध नहीं है।

मांगों को लेकर बड़ी संख्या में लोग झुंझुनूं पहुंचे और कलेक्टर से मुलाकात की।

दोनों पंचायतों को जारी किए ड्राफ्ट में चिड़ावा पंचायत समिति में रखा गया, लेकिन अब राजनैतिक द्वेषता के चलते लांबा और नालवा, दोनों ही पंचायतों को पिलानी पंचायत समिति के अंतर्गत किया जा रहा है जो स्वीकार नहीं होगा। उन्होंने कहा कि इन दोनों पंचायतों के किसी भी गांव से पिलानी के लिए ना तो कोई यातयात सेवा है और ना ही कोई जुड़ाव है, इसलिए यदि पिलानी पंचायत समिति में दोनों पंचायतों को शामिल किया जाएगा तो दोनों ही गांव के लोग परेशान होंगे।

इस मौके पर सभी गांवों के प्रतिनिधि के तौर पर सुरेश डांगी, विश्वंभर बिजारणियां, बहादुर नूनियां, मुंशी खां पंच, मुश्ताक मोहम्मद, इमरान, नत्थु धानक, मोहरसिंह धानक, पवन धानक, दाताराम नूनियां, गोपीराम शर्मा, विद्याधर जांगिड़, सुरेश बिजारणियां, स्यालू सिंह पंच, संदीप धत्तरवाल, हरिसिंह, मनीराम रैबारी, राजेंद्र मांजू, उम्मेद डांगी, मकसूद काजी, अनिल गोदारा, सुशील गोदारा व मातूराम गोदारा आदि मौजूद थे।

- दोनों ही पंचायतों के ग्रामीण कलेक्टर के पास पहुंचे

जोधपुर-दिल्ली वंदे भारत सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन रवाना

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर-दिल्ली के बीच सोमवार को पहली बार वंदे भारत सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन का संचालन किया गया। दिल्ली की ओर जाने वाली ट्रेनों में अतिरिक्त यात्री भार को देखते हुए यह फैसला लिया गया। यह ट्रेन जोधपुर से दोपहर 2:50 बजे रवाना हुई। 9 घंटे में रात 11:55 बजे दिल्ली पहुंच जाएगी।

उत्तर-पश्चिम रेलवे के जोधपुर डीआरएम अनुराग त्रिपाठी ने बताया कि जयपुर-दिल्ली की ओर जाने वाली नियमित ट्रेनों में अतिरिक्त यात्री भार है। यात्रियों की सुविधा को देखते हुए जोधपुर से दिल्ली के लिए 04815 वंदे भारत सुपरफास्ट स्पेशल (एक तरफा) का संचालन किया जा रहा है। यात्रियों का कहना है कि इस ट्रेन का नियमित संचालन होना चाहिए, क्योंकि यह अन्य ट्रेनों की तुलना में काफी कम समय में गंतव्य तक पहुंचाती है। सीनियर डीसीएम विकास खेड़ा ने बताया कि यह एकतरफा ट्रेन मेड़ता रोड, डेगाना, फुलेरा, जयपुर, गांधीनगर, अलवर, रेवाड़ी, गुड़गांव व दिल्ली कैंट स्टेशनों पर ठहराव करेगी। इस ट्रेन में जनरल टिकट और बिना किसी रिजर्वेशन के यात्रा नहीं की जा सकेगी।

डिप्टी सीएम दिया कुमारी ने शहीद सुरेंद्र कुमार को श्रद्धांजलि दी

शहीद सुरेंद्र कुमार की फैमिली हमारा ही एक परिवार है : दिया कुमारी

मंडावा, (निसं)। जम्मू-कश्मीर के उधमपुर एयर बेस पर पाकिस्तानी हमले में शहीद हुए झुंझुनूं जिले के मेहरादासी गांव के शहीद सुरेंद्र कुमार मोगा को श्रद्धांजलि देने के लिए सोमवार को डिप्टी सीएम दिया कुमारी पहुंची। उनके साथ नवलगढ़ विधायक विक्रम सिंह जाखल, झुंझुनूं विधायक राजेंद्र भांबू, भाजपा प्रदेश महामंत्री पूर्व सांसद संतोष अहलावत, भाजपा जिलाध्यक्ष बनवारीलाल सैनी, डॉ. राजेश बाबल, इंजीनियर प्यारेलाल ढूकिया आदि थे।

इस मौके पर सबसे पहले डिप्टी सीएम दिया कुमारी ने शहीद सुरेंद्र कुमार की फोटो को श्रद्धासुमन अर्पित कर उन्हें नमन किया। इसके बाद वे शहीद वीरांगना सीमा और शहीद सुरेंद्र कुमार के दोनों बच्चों से मिलकर उन्हें ढांढस बंधाते हुए कहा कि सरकार उनके परिवार के साथ हमेशा खड़ी है। इसके बाद वे शोक बैठक में शामिल हुई। इस मौके पर डिप्टी सीएम दिया कुमारी ने कहा कि शहीद सुरेंद्र सिंह की फैमिली हमारी ही एक फैमिली है। मैंने अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि ना केवल परिवार की, गांव की भी कोई समस्या है तो उसका प्राथमिकता के आधार पर निस्तारण किया जाए। उन्होंने बताया कि सुरेंद्र कुमार ने देश के लिए प्राण न्यौछावर किए है, जो हमारे लिए फक्र की बात है, लेकिन परिवार के इस दुख की घड़ी में पूरा देश उनके साथ खड़ा है। इस मौके पर उन्होंने आपरेशन सिंदूर को लेकर कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को धन्यवाद देना चाहूंगी कि उन्होंने समय पर एक्शन लिया। अब सीजफायर हो चुका है। स्थिति नियंत्रण में है। उम्मीद है कि अब माहौल सही होगा। वहीं सैनिक कल्याण बोर्ड के चेयरमैन प्रेमसिंह बाजौर, पूर्व केंद्रीय मंत्री सुभाष महरिया, पूर्व मंत्री डॉ. राजकुमार शर्मा तथा चूरू सांसद राहुल कस्वां समेत अन्य जनप्रतिनिधियों ने भी मेहरादासी पहुंचकर शहीद सुरेंद्र कुमार को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

डिप्टी सीएम दिया कुमारी ने शहीद सुरेंद्र कुमार की फोटो को श्रद्धासुमन अर्पित कर उन्हें नमन किया।

- जम्मू-कश्मीर के उधमपुर एयर बेस पर पाकिस्तानी हमले में झुंझुनूं जिले के मेहरादासी गांव के सुरेंद्र कुमार मोगा शहीद हो गये थे

धार्मिक कार्यक्रम में एक्सपायर बिस्किट बांटने का मामला सामने आया

डूंगरपुर, (निसं)। बिछीवाड़ा उपखंड की लम्बाभाटड़ा ग्राम पंचायत में सोमवार को आयोजित एक धार्मिक कार्यक्रम में एक्सपायर बिस्किट बांटे जाने का मामला सामने आया है। यह घटना लेम्बा मोड़िया की मृत्यु उपरांत आयोजित मुंडन कार्यक्रम के दौरान हुई, जब प्रसाद के रूप में वितरित किए गए बिस्किट एक्सपायरी तिथि के निकले। इस घटना से ग्रामीणों में रोष फैल गया है और व्यापारी के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की मांग की जा रही है।

सूत्रों के अनुसार, मुंडन कार्यक्रम में शामिल लोगों को प्रसाद स्वरूप पारले-जी बिस्किट वितरित किए गए, जो चुनवाड़ा निवासी राकेश पिता नारायणलाल कलाल की दुकान से खरीदे गए थे। कुल तीन बड़े पैकेटों में आए 294 बिस्किट पैकेट में से 122 पैकेट ग्रामीणों को वितरित कर दिए गए जबकि शेष 94 पैकेट घर पर रखे गए। घटना तब उजागर हुई जब जागरूक नागरिक दिनेश कुमार मोड़िया की नजर बिस्किट के एक पैकेट पर पड़ी और उसने देखा कि बिस्किट की एक्सपायरी डेट निकल चुकी थी। इस पर वहां उपस्थित एडवोकेट नारायण लाल मोड़िया ने तुरंत ही बिस्किट विक्रेता से फोन पर संपर्क किया, लेकिन व्यापारी ने संतोषजनक जवाब देने के बजाय अभद्र भाषा का प्रयोग किया और कहा कि तुम वकील हो तो केस कर लो। इस व्यवहार से आक्रोशित होकर एडवोकेट मोड़िया ने बिछीवाड़ा पुलिस थाने में एक लिखित शिकायत दर्ज कर व्यापारी के खिलाफ सख्त कानूनी कार्यवाही की मांग की है। उन्होंने कहा कि यह केवल उपेक्षा नहीं, बल्कि ग्रामीणों के स्वास्थ्य के साथ सीधा खिलवाड़ है और ऐसी लापरवाही पर रोक लगाना जरूरी है। गांव के अन्य लोगों ने भी इस बात की पुष्टि की है कि वितरित किए गए बिस्किट की गुणवत्ता और तिथि पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। अब जब मामला सामने आया है, तो सभी ने एक सुर में प्रशासन से मांग की है कि संबंधित व्यापारी के खिलाफ तत्काल कार्रवाई हो और भविष्य में ऐसे मामलों की पुनरावृत्ति न हो।

- ग्रामीणों में रोष, व्यापारी के खिलाफ कार्रवाई की मांग

बुजुर्ग को घर बुलाकर युवती के साथ तस्वीरें खींची

श्रीगंगानगर, (निसं)। शहर के एक 70 वर्षीय बुजुर्ग के साथ झांसा देकर मारपीट, नशा देकर बंधक बनाने, जमीन तथा जेवरात हड़पने का मामला सामने आया है। इस संबंध में पीड़ित ने सदर थाना में रिपोर्ट दर्ज करवाई है। इस मामले में सुरेंद्र कुमार, तेजपाल नायक व अज्ञात युवती सहित 2-3 अन्य के खिलाफ केस दर्ज किया गया है।

पीडित ने बताया कि वह रेहड़ी किराए पर देने का काम करता है। 2 मई को उनके मोबाइल पर एक कॉल आई। कॉल करने वाले ने खुद को रेहड़ी किराए पर लेने वाला बताकर ड्रीम होम बुलाया। वहां पहुंचने पर एक युवती ने उन्हें फ्लैट के अंदर बुलाया और बात करने लगी। इसी दौरान दो युवक वहां आए और कहा कि उन्होंने युवती के साथ फोटो खींच ली है, जिसे वायरल कर देंगे। उसने बताया कि युवकों ने धमकाते हुए 10 लाख रुपए देने की मांग की। इसी दौरान तेजपाल नायक व सुरेंद्र कुमार भी आ गए। इसके बाद चारों ने मिलकर मारपीट की। पीड़ित ने बताया कि आरोपियों ने उन्हें विकास होटल ले जाकर अंडरग्राउंड कमरे में बंद कर दिया। इस दौरान चाय में कोई नशीला पदार्थ मिलाकर पिला दिया। वहीं, आरोपियों ने अगले दिन मारपीट की और कार में बैठाकर घर ले गए। घर में रखे सोने व चांदी के आभूषण, बैंक पासबुक व एटीएम अपने कब्जे में ले ली। आरोपी बैंक से पैसे निकलवाने भी ले गए। अकाउंट में पैसे नहीं होने पर जान से मारने और फोटो वायरल करने की धमकी दी। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू की है।

600 क्विंटल प्रतिबंधित हरी लकड़ियों से भरे तीन ट्रक जब्त

झुंझुनूं, (निसं)। करीब दस सालों से हरी लकड़ियों का अवैध रूप से परिवहन करने वालों पर वन विभाग की टीम ने बड़ी कार्रवाई करते हुए आरोपियों धर दबोचा।

वन विभाग के उच्च अधिकारियों के निर्देशन में क्षेत्रीय वन अधिकारी झुंझुनूं एवं क्षेत्रीय वन अधिकारी वन सुरक्षा के नेतृत्व कार्रवाई कर तीन एलपी गाड़ियों को जब्त किया गया है। क्षेत्रीय वन अधिकारी विजय कुमार फगेड़िया ने बताया कि मुखबिर की सूचना मिली कि अवैध लकड़ियों का परिवहन कर हरियाणा की तरफ ले जाई जा रही है, जिस पर टीम के साथ मौके पर पहुंचकर नाकाबंदी की। मुकुंदगढ़ के किसारी गांव व बीबासर के पास टीम अलग-अलग जगह पर तैनात रही। इस दौरान दो एलपी ट्रक झुंझुनूं से हरियाणा के यमुना नगर ले जाते हुए किसारी गांव में व एक गाड़ी बीबासर के पास रूकवाई तो ट्रक चालक ट्रक को लेकर भागने लगे। कड़ी मशक्कत के बाद टीम ने ट्रक रूकवाकर चेकिंग किया तो पाया कि शीशम, नीम और देशी बबूल जैसी करीब 600 क्विंटल प्रतिबंधित हरी लकड़ियां भरी हुई थी। जिस पर तीनों ट्रकों को जब्त कर लिया। फतेहपुर निवासी कानाराम चाचीवाद, लक्ष्मणगढ़ निवासी नंदकिशोर जेवली, महेश जेवली को मौके पर हिरासत में ले लिया है। क्षेत्रीय वन अधिकारी सुरक्षा संदीप लोयल ने बताया कि पकड़े गए ट्रक चालकों की तहकीकात करने पर पाया कि हरियाणा के नूंह निवासी हबीब खान और सदाम खान इस जिले का सबसे बड़ा लकड़ी तस्कर माफिया है, जो निरंतर दस सालों से अवैध रूप से लकड़ियों का परिवहन कर रहा है। जब्त तीनों ट्रकों को झुंझुनूं बीड़ रेंज कार्यालय खड़ा किया गया है। उन्होंने बताया कि इसके खिलाफ प्रकरण दर्ज कर अनुसंधान जारी है।

युवक से मारपीट कर नगदी लूटी

पाली, (निसं)। पाली में फाइनेंस कर्मचारी से मारपीट और लूट की वारदात सामने आई है। युवक को रविवार देर रात जिला हॉस्पिटल लाया गया, जहां उसका इलाज चल रहा है। युवक ने बताया कि दो-तीन बाइकों पर आए युवकों ने उसे रोका और पिटाई कर 25 हजार रुपए लूटकर फरार हो गए।

पीड़ित युवक मनवय सिंह (22) पुत्र रविंद्र सिंह ने बताया कि मैं पाली के कोतवाली थाना इलाके में रहता हूं। नया गांव रोड स्थित एक फाइनेंस कम्पनी में काम करता हूं। रविवार शाम को कलेक्शन के रुपए लेने गया था। बाइक पर रात करीब 10.30 बजे शहर के पुराना बस स्टैंड मुख्य डाकघर के पास गली से आ रहा था। इस दौरान दो-तीन बाइक पर आए युवकों ने मुझे टोका और कहा कि बाइक ठीक से चला। मैं रुका तो युवकों ने मारपीट कर दी। मेरे सिर में गंभीर चोट लगी। मेरे पास कलेक्शन के 25 हजार रुपए थे, आरोपी रुपए लूटकर फरार हो गए। पीड़ित ने बताया कि मैं उन युवकों को नहीं जानता। परिजन ने घायल मनवय को देर रात बांगड़ हॉस्पिटल में भर्ती कराया। युवक के सिर में चोट लगी हुई थी। सूचना पर कोतवाली थाना पुलिस भी मौके पर पहुंची।

ब्यावर में खाद्य सुरक्षा टीम ने मिलावटी घी, तेल ज़ब्त किया

ब्यावर, (निसं)। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग राजस्थान सरकार की महत्वकांशी योजना "शुद्ध आहार-मिलावट पर वार" अभियान के तहत जिला कलेक्टर डॉ. महेन्द्र खडगावत एवं अति. जिला कलेक्टर मोहनलाल खटनावलिया के निर्देशानुसार मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. संजय गहलोत के नेतृत्व में गठित खाद्य सुरक्षा टीम द्वारा अनमोल एग्रो फैक्ट्री पर कार्रवाई की। संजय मंगरोला व प्रकाश चंद मंगरोला की फैक्ट्री जिसमें सोना सिक्का, महाकोष, सुपर पोस्टमैन, स्वास्तिक, महालक्ष्मी, फॉरचून, चम्बल, पार्वती पोस्टमेन, गुलाब तैल के पैकिंग मैटेरियल पाए गए, जिसकी सूचना उक्त कंपनियों को दी गई है। गौरतलब है कि इन ब्राण्डों की पैकिंग कर बाजार में सप्लाई करवाई जा रही थी। मौके से तेल व नकली सरस के सैम्पल भी लिए गए व 1050 लीटर तैल सीज किया गया। जांच दल को मौके पर मालिक उपस्थित नहीं पाया गया। साथ ही जांच टीम द्वारा संजय गंगरोला से सम्पर्क करना चाहा तो उनके द्वारा अपना फोन बन्द कर दिया गया एवं किसी प्रकार का सहयोग नहीं किया गया। तेल के पीपों का जांच टीम द्वारा क्रय बिल मांगा गया तो वह भी उपलब्ध नहीं कराया गया। उक्त समस्त सैम्पल अजमेर स्थित लैब पर परीक्षण हेतु भिजवाए गए जिनकी रिपोर्ट असंतुष्ट पाए जाने पर सख्त कार्यवाही अमल में लाई जायेगी। जांच दल में खाद्य सुरक्षा अधिकारी नारायण सिंह, अब्दुल सदीक, डीएसओ ब्यावर, ओमप्रकाश, एएसआई विद्या, महिला हैड कांस्टेबल, रामदयाल, कांस्टेबल द्वारा कार्यवाही की गई।

- ब्रह्मानंद मार्ग स्थित अनमोल एग्रो पर कार्यवाही की

पावटा में दुकानों से नमूने लिए

पावटा, (निसं)। शुद्ध आहार-मिलावट पर वार विशेष अभियान के तहत सोमवार खाद्य सुरक्षा अधिकारियों ने पावटा तथा मंढा में विभिन्न किराणा दुकानों व प्लांट पर निरीक्षण एवं नमूने लिए। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. आशीष सिंह ने बताया कि जिला कोटपुतली बहरोड़ मे खाद्य पदार्थों में मिलावट के खिलाफ अभियान के तहत 27 फरवरी से 5 मई तक खाद्य सुरक्षा अधिकारी शशिकांत शर्मा व नेहा शर्मा द्वारा बड़े प्रतिष्ठानों के नमूने जांच में अवमानक व असुरक्षित पाए गए हैं। इन नमूनों में घी, पनीर, खोया, आइसक्रीम, ब्रेवरेज, मिठाई एवं दूध से बने अन्य उत्पाद शामिल हैं। नमूनों की जांच कर संबंधित प्रतिष्ठानों के खिलाफ कोर्ट में परिवाद प्रस्तुत किया जाएगा। जांच के अनुसार जिला कोटपुतली बहरोड़ के उपखंड पावटा में मैसर्स बलजी मेगा मार्ट पावटा, मैसर्स जवाहर मेगा मार्ट पावटा, मैसर्स स्वामी सरस एजेंसी पावटा जैसे प्रतिष्ठानों के नमूने जांच में अवमानक व असुरक्षित पाए गए हैं। वही मंढा के हिमांशु मावा स्टोर से करीब 715 किलो मिलावटी मावा, 175 किलो मिल्क पाउडर व 30 किलो वनस्पति घी कार्यवाही के दौरान नष्ट करवाया।

जलदाय विभाग की लापरवाही से व्यर्थ बह रहा हजारों लीटर पानी

खेतड़ी, (निसं)। खेतड़ी उपखंड के लोयल के दादा थानदेव मंदिर परिसर में जलदाय विभाग की उदासीनता के कारण पीने का पानी व्यर्थ बह रहा है। इस दौरान ग्रामीणों ने आए दिन मंदिर के सामने होने वाले पानी के भराव को लेकर पाइप लाइन को ठीक करवाने की मांग की है।

ग्रामीणों ने बताया कि मुक्तिधाम के लिए जाने वाली पाइप लाइन टूट जाने के कारण रोज हजारों लीटर पानी व्यर्थ बह जाता है। जलदाय विभाग द्वारा मुक्तिधाम के लिए जाने वाली पाइप लाइन से मुक्तिधाम में बनाई गई टंकी में पानी भरा जाता है, लेकिन पाइप लाइन के टूट जाने के कारण पानी व्यर्थ बह रहा है। यह समस्या पिछले काफी दिनों से बनी हुई है, लेकिन अभी तक जलदाय विभाग ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया है। रोज हजारों लीटर पानी व्यर्थ बह जाता है, जो कि कई परिवारों के लिए पीने के पानी की समस्या का कारण बन सकता है। पाइप लाइन ठीक करवाने को लेकर विभाग को अवगत भी करवाया गया, लेकिन जलदाय विभाग की ओर से कोई प्रभावी कदम नहीं उठाए जा रहे हैं। ग्रामीणों ने बताया कि इस पाइप लाइन के ठीक हो जाने से कई परिवारों की पीने के पानी की समस्या का समाधान हो जाएगा। ग्रामीणों ने जलदाय विभाग से अनुरोध किया है कि वे जल्द से जल्द इस समस्या का समाधान करें। ग्रामीणों ने उम्मीद जताई है कि जलदाय विभाग जल्द ही इस समस्या का समाधान करेगा और पाइपलाइन को ठीक करवाएगा। इससे न केवल पानी की बचत होगी, बल्कि कई परिवारों की पीने के पानी की समस्या भी हल हो जाएगी। इस मौके पर नीतीश काजला, अंकित सिंह, सचिन धनखड़, प्रवीण धनखड़, बिरजू राम शर्मा, अनुज काजला, आदित्य सिंह, सुमित सेन, विनय अग्रवाल सहित अनेक ग्रामीण मौजूद थे।

ग्रामीणों ने मंदिर के सामने होने वाले पानी के भराव को लेकर पाइप लाइन ठीक कराने की मांग की।

मैंने कभी नहीं सोचा था कि ये फॉर्मेट मुझे ऐसी यात्रा पर ले जाएगा। इसने मुझे परखा, मुझे गढ़ा और ऐसे सबक सिखाए जो मैं जिंदगी भर अपने साथ रखूंगा। - **विराट कोहली**

भारतीय बल्लेबाज, अपने रिटायरमेंट पर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

नीरज चोपड़ा

नीरज चोपड़ा 16 मई को प्रतिष्ठित डाइमंड लीग प्रतियोगिता के दोहा चरण में तीन अन्य हमवतन खिलाड़ियों के साथ हिस्सा लेंगे। वहीं ये किसी डायमंड लीग प्रतियोगिता में भारत के सबसे अधिक प्रतिभागी हैं। ये डायमंड लीग में भारत के सबसे ज्यादा प्रतिभाशाली हैं। 2023 में इस प्रतियोगिता में 88.67 मीटर के साथ खिताब जीतने वाले नीरज चोपड़ा 2024 में 88.26 मीटर के साथ दूसरे नंबर पर रहे थे। अब वह पुरुषों की भाला फेंक स्पर्धा में किशोर जेना के साथ हिस्सा लेने जा रहे हैं। किशोर जेना ने 2024 में भी भाग लिया था और 76.31 मीटर के थ्रो के साथ नौवां स्थान हासिल किया था।

क्या आप जानते हैं ?... स्टार बल्लेबाज विराट कोहली ने आईपीएल के इतिहास में आठवीं बार 500 से ज्यादा रन बनाए हैं। इसी के साथ उन्होंने डेविड वॉर्नर का रिकॉर्ड तोड़ दिया है।

विराट कोहली ने टेस्ट क्रिकेट को कहा अलविदा

नई दिल्ली, 12 मई। भारतीय टीम के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली ने 14 साल तक लाल गेंद के खेल में अपना जलवा दिखाने के बाद अंततः सोमवार को टेस्ट क्रिकेट को अलविदा कह दिया। अब केवल कोहली एकदिवसीय प्रारूप में भारत के लिए खेलते नजर आयेंगे। कोहली ने सोशल मीडिया मंच इंस्टाग्राम पर लिखा, टेस्ट क्रिकेट में पहली बार बैगी ब्लू पहनने के 14 साल हो गए। सच कहूं तो मैंने कभी नहीं सोचा था कि यह प्रारूप मुझे ऐसी यात्रा पर ले जाएगा। इसने मुझे परखा, गढ़ा। मैं इसे जिंदगी भर याद रखूंगा। उन्होंने कहा इस प्रारूप से दूर जाना आसान नहीं है, लेकिन यह सही लगता है। कोहली ने जून 2011 में वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण किया था। उनकी शानदार बल्लेबाजी के दम पर भारतीय टीम ने कई महत्वपूर्ण जीत हासिल की और भारत को आईसीसी टेस्ट रैंकिंग में शीर्ष पर पहुँचाया। उन्होंने कहा, मैंने इसमें अपना सबकुछ झोंक दिया है और इसने मुझे मेरी उम्मीद से कहीं अधिक लौटाया है। उन्होंने अपनी जर्सी का नंबर '269' लिखा और लिखा 'साइनिंग ऑफ'। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने कोहली को धन्यवाद कहा। बोर्ड ने लिखा टेस्ट क्रिकेट में एक युग समाप्त हो गया है, लेकिन विरासत जारी रहेगी। भारतीय टीम में उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा। कोहली ने अपने टेस्ट करियर में 30 शतक, 31 अर्धशतक और सात दोहरे शतक बनाये। उन्होंने 123 टेस्ट मैच की 210 पारियों में 46.85 की

औसत से की मदद से 9230 रन बनाए। इस दौरान नाबाद 254 उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर रहा। उन्होंने 68 मैचों में भारतीय टीम की कप्तानी भी की, जिसमें 40 में भारत की जीत और 17 में हार का स्वाद चखने को मिला, जबकि 11 मैच ड्रॉ भी हुए। कोहली ने 2016 और 2019 के बीच शानदार प्रदर्शन किया और उस दौर के सबसे प्रभावशाली बल्लेबाज उभरकर सामने आये। उन्हें टेस्ट क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन के लिए वर्ष 2017 और 2018 में टेस्ट प्लेयर ऑफ द ईयर चुने गया। हालाँकि 2020 की शुरुआत में उनका फॉर्म कमजोर हुआ, लेकिन उन्होंने 2023 में फिर से वापसी की। सफेद जर्सी में उन्होंने आखिरी बार ऑस्ट्रेलिया में बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में खेला था। इस सीरीज में उनका प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा था। कोहली ने मुस्कुराते हुए कहा, मैं इस खेल का, अपने साथ खेलने वाले हर साथी का और हर उस व्यक्ति का दिल से शुक्रगुजार हूं, जिसने इस सफर में मुझे सराहा। मैं हमेशा अपनी टेस्ट करियर की ओर मुस्कान के साथ देखूंगा। उल्लेखनीय है कि कोहली ने 10 मई को बीसीसीआई से कहा था कि मैं टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेना चाहता हूं। बोर्ड ने कोहली को अपने फैसले पर फिर विचार करने को कहा था। 11 मई को बोर्ड के एक अधिकारी ने उनसे बात भी की थी। कोहली ने पिछले वर्ष टी-20 विश्व कप जीतने के बाद इस प्रारूप से संन्यास ले लिया था। विराट अब केवल एकदिवसीय प्रारूप में भारत के लिए खेलेंगें।

कोहली के रिटायरमेंट पर गंभीर से लेकर भज्जी तक ने दी प्रतिक्रिया

कोहली की रिटायरमेंट बेहद चौंकाने वाली है क्योंकि महज एक महीने बाद ही भारतीय क्रिकेट टीम का इंग्लैंड दौरान शुरू होने वाला है।वहीं कोहली के इस चौंकाने वाले ऐलान के बाद कई क्रिकेटर्स ने अपना रिएक्शन दिया। जहां हरभजन सिंह ने विराट को धन्यवाद नहीं बल्कि ये पूछा कि वो क्यों रिटायर हो गए? जिसके बाद हरभजन के इस सवाल से ये मालूम होता है कि वह भी नहीं चाहते थे कि कोहली अभी रिटायरमेंट ले और कई साल और खेलते।टीम इंडिया के मौजूदा हेड कोच गौतम गंभीर ने सोशल मीडिया पर लिखा कि, एक व्यक्ति जिसके अंदर शेर जैसा जुनून है।

मुझे वो आंसू याद रहेंगे... संन्यास पर भावुक हुई पत्नी अनुष्का शर्मा

सोमवार 12 मई का दिन क्रिकेट फैंस के लिए बेहद मायूसी वाला रहा। क्योंकि विराट कोहली ने टेस्ट क्रिकेट को अलविदा कह दिया। अपने 14 साल के लंबे टेस्ट करियर के अंत का ऐलान उन्होंने खुद सोशल मीडिया के द्वारा दिया। वहीं कोहली के संन्यास पर हर कोई हैरान है, फिर चाहे वो साथी क्रिकेटर्स हो या फैंस। इसी कड़ी में उनकी पत्नी और बॉलीवुड एक्ट्रेस अनुष्का शर्मा ने भी कोहली के संन्यास पर अपनी प्रतिक्रिया दी है। अनुष्का ने इंस्टाग्राम पर लिखा कि, लोग आपके रिकॉर्ड और माइलस्टोन के बारे में बात करेंगे, लेकिन मुझे वे आंसू याद रहेंगे जो आपने कभी नहीं दिखाए। वे संघर्ष जो किसी ने नहीं देखे, और वह अटूट प्यार जो आपने खेल के इस फॉर्मेट को दिया। मुझे पता है कि इन सबने आपसे कितना कुछ छीन लिया। हर टेस्ट सीरीज के बाद आप थोड़े समझदार, थोड़े विनम्र होकर लौटे। आपको इन सबके माध्यम से विकसित होते देखना सौभाग्य रहा है। मैंने ये सोचा था कि आप सफेद जर्सी में खेलते हुए संन्यास लेंगे, लेकिन आपने अपने दिल की सुनी। मैं बस ये कहना चाहती हूं कि आपने ये सब कमाया है।

मेरे पास तुम्हें देने के लिए... विराट कोहली के संन्यास पर सचिन तेंदुलकर ने बताया दिलचस्प किस्सा

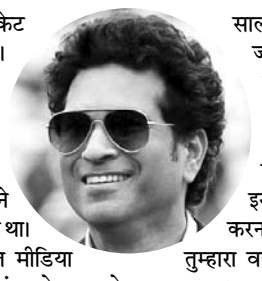

विराट कोहली ने टेस्ट क्रिकेट को अलविदा कह दिया है। पिछले कुछ दिन से खबरें चल रही थीं कि कोहली ने बीसीसीआई को अपने टेस्ट संन्यास के बारे में बताया है, लेकिन बोर्ड ने उनसे अपने फैसले पर विचार करने को कहा था। सोमवार को विराट ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर एक लंबा पोस्ट करते हुए टेस्ट फॉर्मेट से संन्यास की घोषणा कर दी। उनके संन्यास ने क्रिकेट से जुड़े हर एक व्यक्ति को चौंकाया है। चाहे वह साधारण क्रिकेट फैन हो या फिर क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले सचिन तेंदुलकर।सचिन ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट करते हुए विराट के टेस्ट क्रिकेट से संन्यास पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। तेंदुलकर ने लिखा कि, जैसा कि आप टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले रहे हैं, मुझे आपकी 12 साल पुरानी वो बात या आ रही है जब मैं अपना आखिरी टेस्ट में मुझे आपने अपने दिवंगत पिता की ओर से दिए एक धागे को उपहार के रूप में दिया था। वो एक बहुत निजी चीज थी, इसलिए मेरे लिए उसे स्वीकार करना बहुत ही मुश्किल था। लेकिन तुम्हारा वह भाव बहुत ही भावुक और यादगार था। वह पल आज तक मेरे दिल में बसा हुआ है। मेरे पास तुम्हें देने के लिए कोई धागा नहीं है, लेकिन तुम्हारे लिए मेरा सच्चा सम्मान और ढेरों शुभकामनाएं हमेशा रहेंगी। सचिन ने पोस्ट में आगे लिखा कि, विराट तुम्हारी असली विरासत ये है कि तुमने लाखों युवाओं को क्रिकेट खेलने की प्रेरणा दी है। तुम्हारा टेस्ट करियर गजब का रहा है। तुमने भारतीय क्रिकेट को सिर्फ रन ही नहीं दिए, बल्कि एक नया उत्साही दर्शकों और खिलाड़ियों का दौर भी दिया।

विराट कोहली के टेस्ट क्रिकेट रिकॉर्डस, जिन्हें तोड़ पाना हर किसी के लिए असंभव

टीम इंडिया के दिग्गज विराट कोहली ने टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले लिया। 14 साल तक टेस्ट क्रिकेट में अपनी बादशाहत कायम करने वाले कोहली ने 12 मई 2025 को इस फॉर्मेट को अलविदा कह दिया। अपनी आक्रामक बल्लेबाजी, बेहतरीन कप्तानी और विपक्षी टीम से जीत छीनने की काबिलियत के लिए मशहूर कोहली ने टेस्ट क्रिकेट में कई ऐसे रिकॉर्ड बनाए, जिन्हें तोड़ना भविष्य में किसी भी खिलाड़ी के लिए बेहद मुश्किल होगा।

सफल टेस्ट कप्तान

कोहली ने भारत की टेस्ट टीम की कमान संभालते हुए 68 मैचों में कप्तानी की और इस दौरान 40 बार टीम को जीत दिलाई। उनके नेतृत्व में भारत को सिर्फ 17 मैचों में हार झेलनी पड़ी। ये रिकॉर्ड उन्हें भारत का सबसे सफल टेस्ट कप्तान बनाता है। उनसे पहले एमएस धोनी ने 60 टेस्ट मैचों में 27 जीत हासिल की थी। कोहली का ये रिकॉर्ड इतना मजबूत है कि इसे तोड़ना किसी भी नए कप्तान के लिए एक बड़ी चुनौती होगा।

टेस्ट में सबसे ज्यादा दोहरे शतक जड़े

इसके अलावा विराट कोहली ने अपने टेस्ट करियर में 123 मैचों की 210 पारियों में 9,230 रन बनाए। इस दौरान उनके बल्ले से 7 दोहरे शतक निकले, जो किसी भारतीय टेस्ट कप्तान द्वारा बनाया गया सबसे बड़ा रिकॉर्ड है। लेकिन 2016 केबाद उन्होंने इस मामले में रिकॉर्ड्स की झड़ी लगा दी। 7 दोहरे शतक के साथ वह इस उपलब्धि को हासिल करने वाले एकलोते भारतीय टेस्ट कप्तान हैं। ये रिकॉर्ड भी उनके टेस्ट करियर की सबसे बड़ी पहचान बन गया है, जिसे भविष्य में तोड़ना आसान नहीं होगा। विराट कोहली ने टेस्ट क्रिकेट में अपनी कप्तानी से एक नया इतिहास भी रचा था। उन्होंने भारतीय टीम की कमान 68 टेस्ट मैचों में संभाली जो किसी भी भारतीय कप्तान के द्वारा सबसे ज्यादा है। इस दौरान टीम इंडिया ने 40 मैच जीते, 17 हार, और 11 ड्रॉ रहे। इसके साथ ही उनकी कप्तानी में टीम इंडिया की जीत का प्रतिशत 58.82 रहा, जो उनकी नेतृत्व क्षमता का एक बेहतरीन नमूना है।

सेना देशों में जीत का अनोखा रिकॉर्ड

विराट कोहली ने विदेशी धरती पर भी बेहतरीन कप्तानी की। वह एकमात्र कप्तान रहे जिन्होंने सेना देशों- दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ जीत दर्ज की। साथ ही उन्होंने सेना देशों में सबसे ज्यादा टेस्ट जीतने वाले एशियाई कप्तान का दर्जा भी अपने नाम किया।

27वीं नवीन-नफीस ईनामी राशि लीग कम नॉकआउट क्रिकेट प्रतियोगिता

साहिल दीवान का ऑलराउंड प्रदर्शन, आकिब की शानदार गेंदबाजी से बाउंड्री ब्रेकर अजमेर विजयी

जयपुर, 12 मई। यूनियन क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित 27वीं नवीन नफीस स्मृति क्रिकेट प्रतियोगिता में आज सोनी क्रिकेट स्टेडियम, करधनी कालवाड़ रोड़, जयपुर पर खेले गये पूल डी के मैच में साहिल दीवान 34 रन नाबाद व 13 रन पर 3 विकेट के ऑलराउण्ड प्रदर्शन तथा आकिब खान 8 रन पर 3 विकेट की शानदार गेन्दबाजी की बदौलत बाउण्ड्री ब्रेकर क्रिकेट एकेडमी, अजमेर ने कियान क्रिकेट एकेडमी को 8 विकेट से हराकर 2 अंक अर्जित किये। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुये कियान क्रिकेट एकेडमी की ओर से शेर सिंह 27 रन व देवेश शर्मा 10 रन को छोड़कर कोई भी अन्य बल्लेबाज बाउण्ड्री ब्रेकर क्रिकेट एकेडमी, अजमेर के गेन्दबाजों साहिल दीवान 13 रन पर 3 विकेट, आकिब खान 8 रन पर 3 विकेट, राहुल छपरवाल 12 रन पर 2 विकेट तथा अमन मीणा 0 रन पर 1 विकेट की गेन्दबाजी के समक्ष नहीं टिक सके और पूरी टीम 18.1 ओवर में 75 रन बनाकर सिमट गई।

76 रन के विजय लक्ष्य को लेकर खेलने उतरी बाउण्ड्री ब्रेकर क्रिकेट एकेडमी की ओर से साहिल दीवान 34 रन नाबाद (11 गेंद 2 चौके 4 छक्के), मिरान खान 26 रन नाबाद, पुनित मिश्रा 15 रन की मदद से विजयी लक्ष्य 80 रन 2 विकेट खोकर 7.5 ओवर में ही हासिल कर 8 विकेट से आसानी से जीत दर्ज कर ली। कियान एकेडमी की ओर से मयंक स्वामी 10 रन पर 1 विकेट लेकर एकमात्र सफल गेन्दबाज रहे। मेन ऑफ मैच साहिल दीवान 34 रन नाबाद व 13 रन पर 3 विकेट बाउण्ड्री ब्रेकर क्रिकेट एकेडमी, अजमेर रहे।

सवाई मानसिंह स्टेडियम को बम से उड़ाने का फिर आया धमकी भरा ई-मेल

जयपुर, 12 मई। सवाई मानसिंह स्टेडियम को एक बार फिर बम से उड़ाने की धमकी मिली है। सोमवार को खेल परिषद के ईमेल पर धमकी मिली। मेल में लिखा- ऑपरेशन सिंदूर के सफल होने के बाद, अब सवाई मानसिंह स्टेडियम को बम से उड़ाया जाएगा। पुलिस टीम को सर्च ऑपरेशन चलाने के बाद कुछ भी बरामद नहीं हुआ।

खेल परिषद के अधिकारियों ने पुलिस कंट्रोल रूम को सूचना दी। इस के बाद पुलिस टीम, क्यूआरटी, बम निरोधक दस्ता सहित, कई टीमें एसएमएस स्टेडियम पहुंची है। सर्च ऑपरेशन जारी है। स्टेडियम के मुख्य मैदान, स्टेडियम में बने हॉस्टल, खेल परिषद के ऑफिस और आरसीए एकेडमी में भी सर्च किया जा रहा है। अब तक की जांच में किसी भी तरह की संदिग्ध वस्तु बरामद नहीं हुई है। खेल विभाग के सचिव और राजस्थान

स्पोर्ट्स काउंसिल के चेयरपर्सन नीरज कुमार पवन ने बताया कि दूसरी बार जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में बम होने की धमकी मिली है। इसके बाद स्टेडियम को खाली करवा कर सघन सर्च ऑपरेशन किया जा रहा है।

गौरतलब है कि एसएमएस स्टेडियम को 8 मई को भी बम से उड़ाने की धमकी मिली थी। एसएमएस स्टेडियम के बाहर का इलाके और बिल्डिंग को सर्च किया गया था। सर्च के दौरान कुछ भी नहीं मिला था। 9 मई को जयपुर मेट्रो को बम से उड़ने की धमकी मिली थी। जयपुर मेट्रो की मेल आईडी पर ईमेल मिला था। इसमें ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद जयपुर मेट्रो स्टेशन और ट्रेन, दोनों को उड़ाने की धमकी दी गई थी, लेकिन जांच में कुछ नहीं मिला था।

कोहली का नाम भारतीय क्रिकेट इतिहास में दर्ज रहेगा : रेवंत रेड्डी

हैदराबाद, 12 मई। तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी ने सोमवार को महान क्रिकेटर विराट कोहली की प्रशंसा करते हुए कहा कि उनका नाम भारतीय क्रिकेट के इतिहास में दर्ज रहेगा। टेस्ट क्रिकेट से विराट के संन्यास पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए मुख्यमंत्री ने ट्विटर पर पोस्ट किया और खेल में पूर्व भारतीय कप्तान के असाधारण योगदान की सराहना की। उन्होंने कोहली को एक अत्यंत अनुशासित और प्रतिबद्ध खिलाड़ी बताया, जिन्होंने अनेक रिकॉर्ड बनाए तथा देश के लाखों युवा खिलाड़ियों को प्रेरित किया। रेवंत रेड्डी ने भारतीय क्रिकेट की विरासत में एक उल्लेखनीय अध्याय जारी रखने के लिए कोहली की सराहना की और उन्होंने टेस्ट क्रिकेट से परे उनकी यात्रा के अगले चरण में बड़ी सफलता प्राप्त करने की शुभकामनाएं दीं।

करिश्मा ने एथलेटिक्स वूमेंस गाला की भाला फेंक स्पर्धा में जीता स्वर्ण पदक

दुबई, 12 मई। भारत की करिश्मा सानिल ने एथलेटिक्स वूमेंस गाला 2025 में जहां शानदार प्रदर्शन करते हुए भाला फेंक स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता। वहीं, एंसी सोजन और शैली सिंह लंबी कूद स्पर्धा में क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर रहीं। रविवार को मदर्स डे पर दुबई पुलिस क्लब स्टेडियम में प्रतिस्पर्धा में 24 वर्षीय करिश्मा सानिल ने 53.33 मीटर के प्रयास के साथ तीन एथलीट में शीर्ष स्थान हासिल किया। यूएई की अलियाज्या तारेक (31.04 मीटर) थ्रो के साथ दूसरे और भारत की हर्षिता सेहरावत की (16.77 मीटर) थ्रो के साथ तीसरे स्थान पर रही। वूमेंस लंबी कूद में एशियाई खेलों की रजत पदक विजेता भारतीय एथलीट एंसी सोजन 6.54 मीटर के सीजन के सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ दूसरे स्थान पर रहीं। भारत की शैली सिंह 6.48 मीटर की लम्बी कूद लगाकर तीसरे स्थान के साथ कांस्य पदक हासिल किया। इस प्रतिस्पर्धा में अरब गेम्स की चैंपियन एसरा ओविस ने 6.66 मीटर की लम्बी कूद लगाकर स्वर्ण पदक जीता। एंसी सोजन और शैली सिंह ने शुक्रवार को इसी स्थान पर यूएई ग्रां प्री 2025 एथलेटिक्स मीट में भी हिस्सा लिया था। इस प्रतियोगिता में शैली सिंह ने 6.44 मीटर की कूद के साथ दूसरा स्थान हासिल किया।

पोस्टल क्रिकेट क्लब इंडिया पोस्ट ने श्री भवानी निकेतन पब्लिक को हराया

जयपुर, 12 मई। जयपुर जिला क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित अनुराग मिश्रा स्मृति बी डिवीजन लीग के पूल डी के मैच में पोस्टल क्रिकेट क्लब इंडिया पोस्ट (पी टी) ने श्री भवानी निकेतन पब्लिक स्कूल को 58 रनों से हराया। के एल सैनी स्टेडियम पर पोस्टल क्रिकेट क्लब इण्डिया पोस्ट (पी टी) ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए सौरभ चौहान के 75 रन, अजीम अख्तर के 94 रन नाबाद, रजत छप्परवाल के 49 रन, चंद्रपाल सिंह के 43 रनों से 40 ओवर में 5 विकेट पर 295 रन बनाए। श्री भवानी निकेतन पब्लिक स्कूल के लिए गौरव सैनी ने 21 पर 2, सौरभ शर्मा, आशीष व मयंक कुमावत ने एक - एक विकेट लिया। जवाबी पारी में श्री भवानी निकेतन पब्लिक स्कूल ने मयंक कुमावत के 78 रन, गौरव सैनी

के 51 रन, प्रिंस सोनी के 36 रन, मोहित प्रजापत के 21 रन से 39.3 ओवर में 237 रन बनाकर आउट हो गई। पोस्टल क्रिकेट क्लब इंडिया पोस्ट के लिए रजत छप्परवाल ने 65 पर 3, चंद्रपाल सिंह ने 41 पर 4, अभिमन्यु लांबा व राकेश वैष्णव ने एक - एक विकेट लिया।

जयपुरिया की जीत में वंश शर्मा का शानदार शतक

जयपुर, 12 मई। चंबल स्पोर्ट्स क्लब द्वारा आयोजित 17वी राज्य स्तरीय अंडर-19 नन्द सिंह मेमोरियल क्रिकेट लीग में आज नारायणा ग्राउंड पर खेले गए मैच में जयपुरिया एकेडमी ने संस्कार एकेडमी को 4 विकेट से हराकर जीत दर्ज की। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए संस्कार एकेडमी ने दक्ष पारिक 85, आर्यमन शर्मा 80, विष्णु जैन 43, आरव कुमार 35 रनों के सहयोग से 45 ओवर में 272 रन बनाकर ऑल आउट हो गई। जयपुरिया की ओर से गेंदबाजी करते हुए वंश शर्मा , भव्य सिंह 3-3 विकेट, कुलदीप 2, वियान ने 1-1 विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करते हुए जयपुरिया एकेडमी ने वंश शर्मा ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए 124 रन के साथ शतक बनाया। कुलदीप 40 , वियान 31, आयुष 31 के सहयोग से 40 ओवर में 6 विकेट पर 274 रन बनाए। संस्कार की ओर से रविन्द्र, आरव कुमार ने 2-2 विकेट, हितेश ने 1 विकेट लिए। आज के मैन ऑफ़ द मैच वंश शर्मा रहे।

इंग्लैंड दौरे पर टीम इंडिया के साथ जाएंगे शार्दुल ठाकुर

सरफराज की जगह मिल सकता है मौका

नई दिल्ली, 12 मई। इंडिया-इंग्लैंड के बीच 5 मैचों की टेस्ट सीरीज 20 जून से खेली जाएगी और इसके लिए टीम इंडिया का ऐलान 23 मई को किया जा सकता है। क्रिकबज के मुताबिक भारतीय टेस्ट टीम में शार्दुल ठाकुर को मौका दिया जा सकता है। जबकि सरफराज खान का पत्ता कट सकता है।इसके अलावा भारत ए टीम को इंग्लैंड लायंस के खिलाफ भी अनाधिकारिक टेस्ट सीरीज खेलना है। क्रिकबज के मुताबिक रोहित शर्मा के टेस्ट क्रिकेट से संन्यास की घोषणा करने से एक दिन पहले 6 मई को मुंबई के क्रिकेट सेंटर में चयनकर्ताओं की एक बैठक हुई थी और चयनकर्ताओं ने उस दिन भारत ए टीम के चयन को अंतिम रूप दे दिया था। 13 मई को इसकी घोषणा होने की उम्मीद है, जिसमें अभिमन्यु ईश्वरन कप्तानी के लिए प्रमुख उम्मीदवार हैं। हालांकि, इंडिया ए टीम में कुछ बदलाव किए जा सकते हैं। भारत ए को तीन मैच खेलने हैं- दो इंग्लैंड लायंस के खिलाफ और एक सीनियर इंडिया टीम के खिलाफ। नए कप्तान के साथ सीनियर इंडिया टीम का चयन 23 मई को होने की उम्मीद है। भारत ए टीम का चयन करना चयनकर्ताओं के लिए आसान नहीं है,भारतीय गैर-आईपीएल खिलाड़ी और उन टीमों के खिलाड़ी शामिल हों जो पहले मैच के लिए आईपीएल प्लेऑफ की दौड़ से बाहर होने की उम्मीद है।

बीसीबी ने शॉन टैट को तेज गेंदबाजी कोच नियुक्त किया

ढाका, 12 मई। बंगलादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) ने ऑस्ट्रेलिया के पूर्व तेज गेंदबाज शॉन टैट को अपनी टीम का गेंदबाजी कोच नियुक्त किया है। शॉन टैट का अनुबंध नवंबर 2027 तक होगा। वह आंद्रे एडम्स का स्थान लेंगे। टैट इस महीने के आखिरी में टीम के साथ शामिल होंगे। टैट ने एक दशक तक चले अपने करियर में ऑस्ट्रेलिया के लिए सभी प्रारूपों में 59 अंतरराष्ट्रीय मैचों में 95 विकेट लिए है। वह वर्ष 2007 में क्रिकेट विश्वकप जीतने वाले ऑस्ट्रेलियाई टीम का हिस्सा थे। एडम गिलक्रिस्ट के शानदार शतक ने ऑस्ट्रेलिया को 2007 विश्व कप फाइनल में श्रीलंका पर जीत दिलाने में मदद की।

अपनी नियुक्ति पर टैट ने मुख्य कोच फिल सिमंस के नेतृत्व में राष्ट्रीय टीम के साथ काम करने को लेकर खुशी जाहिर की है। उन्होंने कहा कि अभी बंगलादेश क्रिकेट टीम के साथ जुड़ना अच्छा समय है। यह एक नए युग की तरह है। बंगलादेश की हाल ही में जिम्बाब्वे के खिलाफ दो टेस्ट मैचों की श्रृंखला बराबर रही थी और उसे अभी संयुक्त अरब अमीरात के खिलाफ भी खेलना है।

अक्षय ऊर्जा की हर परियोजना में समन्वय के लिये नोडल अधिकारी नियुक्त होगा

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने राइज़िंग राजस्थान में अक्षय ऊर्जा के निवेशकों के साथ बैठक की

जयपुर, 12 मई। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट के माध्यम से राजस्थान की देश-दुनिया में निवेश के एक प्रमुख केन्द्र के रूप में पहचान बनी है। समिट में हुए निवेश समझौतों के धरातल पर उतरने से राज्य की अर्थव्यवस्था सुदृढ होगी और निजी क्षेत्र में 6 लाख से अधिक रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

- **मुख्यमंत्री ने निवेशकों से कहा कि वे अपने प्रोजैक्ट की प्रगति का चरणबद्ध समय निर्धारण करें तथा समय-समय पर राज्य सरकार को प्रगति से अवगत कराते रहें।**

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने राइज़िंग राजस्थान समिट के तहत अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में हुए एमओयू के क्रियान्वयन की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि निवेशक अपने प्रोजेक्ट की प्रगति से समय-समय पर राज्य सरकार को अवगत कराएं।

शर्मा ने सोमवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में राइजिंग राजस्थान समिट के तहत अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में हुए एमओयू के क्रियान्वयन की समीक्षा की। उन्होंने निवेशकों से कहा कि वे अपने प्रोजेक्ट्स स्थापित करने की संपूर्ण प्रक्रिया के लिए चरणबद्ध रूप से समय का निर्धारण करें और उन्हें तय अवधि में पूरा करें।

उन्होंने कहा कि निवेशक अपने प्रोजेक्ट की प्रगति से समय-समय पर राज्य सरकार को अवगत कराएं।

मुख्यमंत्री ने निवेशकों से कहा कि सरकार और निवेशकों के बीच समन्वय के लिए प्रत्येक परियोजना के अनुसार एक-एक नोडल अधिकारी नियुक्त किया जाएगा, जो तय समय में परियोजना का पूर्ण होना सुनिश्चित करेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राजस्थान को ऊर्जा के क्षेत्र में सरप्लस स्टेट बनाने के उद्देश्य की पूर्ति के लिए सरकार आगामी वर्षों में राज्य की नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन क्षमता को 30 गीगावाट से बढ़ाकर 125 गीगावाट करेगी।

इस अवसर पर निवेशकों ने अपने एमओयू पर कार्यों की प्रगति को लेकर विस्तृत जानकारी दी और अपने विभिन्न विषयों के समाधान पर मुख्यमंत्री की पहल पर आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर मुख्य सचिव, विभिन्न विभागों के अतिरिक्त मुख्य सचिव, प्रमुख शासन सचिव, शासन सचिव सहित, पवन, हाइब्रिड, पम्प स्टोरेज एवं बैट्री स्टोरेज परियोजनाओं से संबंधित निवेशक उपस्थित थे।

अमेरिका -चीन के बीच टैरिफ वॉर थमा

नयी दिल्ली, 12 मई। अमेरिका और चीन ने एक-दूसरे के विरुद्ध व्यापार-युद्ध को ठंडा करते हुए सोमवार को एक-दूसरे के अधिकांश सामानों पर बहुत अधिक बढ़ा दी गयी आयात शुल्क की दरों को अस्थायी रूप से निलंबित करने पर सहमति व्यक्त की। दोनों पक्षों के व्यापार विभाग के बीच अधिकारियों के बीच सप्ताहांत बीच स्विट्जरलैंड के लेक जिनेवा में आयोजित वार्ता में यह सहमति बनी है। यह सहमति बुधवार से लागू होगी।

अमेरिका के वित्त मंत्री स्कॉट बेसेन्ट ने इसकी घोषणा करते हुए एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, हमारे (अमेरिका-चीन) के बीच बहुत ही उपयोगी बातचीत हुई। बातचीत में सहमति के तहत दोनों देश आपसी व्यापार में 90 सामानों पर 'पारस्परिक' आयात शुल्क 125 प्रतिशत से घटाकर 10 प्रतिशत कर देंगे।

सीमा पर फायरिंग पर पूर्ण रोक, भारत पाक के बीच सहमति बनी

दोनों देशों के डायरैक्टर जनरल ऑफ मिलिटरी आपरेशन्स की सोमवार को हुई दूसरी बैठक में यह फैसला हुआ

नयी दिल्ली, 12 मई। भारत और पाकिस्तान ने सीमाओं और अग्रिम मोर्चों पर सैनिकों की संख्या तत्काल कम करने की दिशा में कदम उठाने तथा सीमा पर फायरिंग पर पूरी तरह से रोक लगाने के प्रति सहमति व्यक्त की है। सेना ने सोमवार को यहां बताया कि ऑपरेशन सिंदूर के बाद दोनों देशों के सैन्य संचालन महानिदेशकों के बीच शाम पांच बजे हुई दूसरी बैठक में इस बात पर चर्चा हुई कि दोनों देशों को सेना सीमा पर एक भी गोली नहीं चलायेंगी और न ही एक दूसरे के खिलाफ आक्रामक तथा शुत्रतापूर्ण रवैया अपनायेंगी।

- **शनिवार को पाकिस्तान के आग्रह पर पहली बैठक हुई थी जिसमें सीज़फायर पर सहमति बनी थी।**

बातचीत में इस बात पर भी सहमति बनी कि दोनों देश सीमाओं और अग्रिम मोर्चों पर सैनिकों की संख्या में कमी करने के लिए तत्काल कदम उठायेंगे।

उल्लेखनीय है कि सैन्य महानिदेशकों के बीच पहले यह बातचीत दोपहर बारह बजे होनी थी, लेकिन बाद में इसे शाम पांच बजे के लिए टाल दिया गया था। सैन्य महानिदेशकों के बीच पहली बैठक पाकिस्तान के अनुरोध पर शनिवार को हुई थी, जिसमें सैन्य कार्रवाई को रोकने तथा इसे दीर्घावधि के लिए बढ़ाने पर सोमवार को दोबारा बातचीत की सहमति बनी थी।

पाकिस्तान के सैन्य संचालन महानिदेशक ने शनिवार को अपराह्न साढे तीन बजे अपने भारतीय समकक्ष के साथ हॉटलाइन पर बातचीत में उसी दिन शाम पांच बजे से सैन्य कार्रवाई रोकने की पेशकश की थी, जिसे भारत ने मान लिया था।

मोदी का देश...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बाद, ऑपरेशन सिंदूर हमारी सरकार की नीति है।"

प्रधानमंत्री के राष्ट्र के नाम इस संबोधन के बावजूद, विपक्ष नरमी दिखाने वाला नहीं है। अमेरिकी मध्यस्थता से युद्धविराम पर चुप्पी साधने की उनकी सोची-समझी रणनीति, अब विपक्ष को राष्ट्रीय हितों से समझौता करने के आरोपों के साथ, प्रधानमंत्री मोदी पर और अधिक आक्रामक होने का मौका दे रही है।

सीमावर्ती जिलों ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

स्कूल-कॉलेज, यूनिवर्सिटी, आंगनबाड़ी केन्द्र और कोचिंग सेंटर्स कल (13 मई) से खुलेंगे। सीमावर्ती जिले बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर में अब ब्लैकआउट नहीं होगा। जोधपुर, किशनगढ़ (अजमेर), बीकानेर एयरपोर्ट को तत्काल प्रभाव से ऑपरेशनल कर दिया गया है।

उधर, जैसलमेर से करीब 10 किमी दूर सोमवार दोपहर में बम मिला। सूचना पर सेना का बम निरोधक दस्ता मौके पर पहुंचा और बम को कब्जे में लेकर डिस्पोज किया।

जैसलमेर के रामगढ़ से तनोट बॉर्डर जाने वाले रास्ते पर दोपहर 3 बजे के बाद सभी लोगों के (लोकल छोड़कर) जाने पर रोक है।

श्रीगंगानगर और उसके चार उपखंडों के बॉर्डर से सटे 3 किमी के एरिया में किसी के भी आने-जाने पर शाम 7 से सुबह 6 बजे तक रोक रहेगी। टॉर्च और गाड़ियों की हेडलाइट जलाने पर भी पाबंदी है।

प्र.मंत्री नहीं ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अगली बैठक में नहीं आए तो कांग्रेस बैठक का बहिष्कार करेगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने यह घोषणा कर दी है कि अगली सर्वदलीय बैठक में मोदी नहीं आए तो हम बैठक में शामिल नहीं होंगे और बाहर आ जाएंगे और बैठक का बहिष्कार करेंगें। बघेल ने आतंकवाद के खिलाफ की गई कार्रवाई की सफलता से संबंधित एक सवाल पर कहा कि यदि यह सफल रहा है तो सरकार को सर्वदलीय बैठक के साथ ही संसद का विशेष सत्र बुलाना चाहिए और उसमें हमारे सवालों का जवाब देना चाहिए। उन्होंने कहा कि देश के बहुत सारे सवाल हैं।

पेपर लीक ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जाएगी। उस के बाद आगे का एक्शन लिया जाएगा। अनुसंधान से आये तथ्यों के आधार पर सामने आया कि उपनिरीक्षक भर्ती परीक्षा 2021 में आरोपी एस.आई. समेता कुमारी ने लिखित परीक्षा में अपने स्थान पर संगीता विश्नोई को डमी के रूप में बैठाकर लिखित परीक्षा दिलवाई, जिसके फलस्वरूप समेता कुमारी को उप निरीक्षक के पद पर चयनित किया गया है। इस मामले में आरोपी समेता कुमारी को आज गिरफ्तार किया है। गौरतलब है कि अब तक 51 प्रशिक्षु उप निरीक्षक सहित, कुल 103 अभियुक्त गिरफ्तार किये जा चुके हैं।

मोदी की नयी ''न्यूक्लियर...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त करने की संभावना तब नज़र आई, जब दोनों देशों के बीच संवाद शुरु हो गया था।

प्रधानमंत्री ने कहा कि युद्धविराम दोनों पक्षों के बीच बातचीत के बाद हुआ था

हालाँकि इन दावों और प्रतिदावों ने स्पष्ट रूप से भारत और अमेरिका को एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा कर दिया है। पाकिस्तान पहले ही अमेरिका की मध्यस्थता के लिए धन्यवाद दे चुका है, जबकि भारत इसका खंडन कर रहा है। भारत और अमेरिका के बीच दरार डालने में पाकिस्तान कोई कसर नहीं छोड़ रहा है।

दूसरी ओर चीन हिमालयी सीमा पर पहले से ही भारत के खिलाफ है और वह पाकिस्तान की मदद करना जारी रखेगा। चीन ने पहले ही पाकिस्तान में महत्वपूर्ण आर्थिक उपस्थिति प्राप्त कर ली है और अब वह इसे और बढ़ा सकेगा।

वहीं, यह भी देखा जा सकता है कि अमेरिकी राष्ट्रपति और उनकी टीम ने चीन के साथ एक व्यापार सौदा किया है, जिससे भारत वैश्विक भू-राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में कुछ हद तक अकेला पड़ सकता है। अमेरिका के वैश्विक भू-राजनीतिक दृष्टिकोण में अब भारत संभवतः एशिया में चीन के खिलाफ पसंदीदा विकल्प नहीं रहेगा। भारत को अब खुद को अकेले ही बचाना होगा।

महत्वपूर्ण यह है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पाकिस्तान द्वारा भारत में आतंकी कृत्य करने के कारण, भारत की प्रतिक्रिया को उचित ठहराया, लेकिन उन्होंने अमेरिका या किसी अन्य देश के हस्तक्षेप का एक बार भी उल्लेख नहीं किया।

भारत का स्थायी रुप से यही रुख रहा है कि कश्मीर मुद्दा दो द्विपक्षीय है और इसमें किसी तीसरे देश की मध्यस्थता की कोई आवश्यकता नहीं है।

इस स्थिति में, भारत को फिर से रूस की ओर रुख करना पड़ सकता है, जिसे एक विश्वासपात्र मित्र और हथियारों का आपूर्तिकर्ता माना जाता है, हालाँकि यूक्रेन युद्ध के बाद इस रिश्ते में कुछ दरार आई है। रूस ने भी भारत-पाक के बीच हुए इस टकराव पर तटस्थ रुख अपनाया है।

इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है कि यह देखा जाए कि चीन और अमेरिका के बीच वैश्विक प्रतिस्पर्धा को देखते हुए नवीनतम व्यापार सौहार्द कितना लंबा चलता है, क्योंकि दोनों देशों के बीच परस्पर शत्रुता विद्यमान है।

ट्रंप ने मोदी को अटपटी स्थिति...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

के एजेंडे पर ही आधारित होगी। उन्होंने कहा, "बातचीत और आतंकवाद साथ नहीं चल सकते, ठीक वैसे ही जैसे व्यापार और आतंकवाद या पानी और खून साथ नहीं बह सकते।"

मोदी ने पाकिस्तान को भारत के समकक्ष रखे जाने से हटाने की कोशिश की और पाकिस्तान के बहावलपुर और मुरिदके शहरों को वैश्विक आतंकवाद के केन्द्र के रुप में चित्रित किया, यहां तक कि उन्होंने 9/11 हमलों और लंदन ट्यूब बमबारी का भी उल्लेख किया।

ट्रंप के युद्ध रोकने के दावों का उल्लेख किए बिना, मोदी ने कहा कि पाकिस्तान के सेना प्रमुख ने युद्धविराम के लिए अपील की थी, जब भारतीय वायुसेना के सटीक हमलों के बाद पाकिस्तान की स्थिति कमजोर हो गई थी। उन्होंने भारत के सैन्य संस्थान की श्रेष्ठता का भी उल्लेख किया, खासकर नए युग के और "मेड इन इंडिया" सैन्य उपकरणों का जिक्र किया।

महेश जोशी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कि ईडी ने इस करोड़ों रुपए के घोटाले के मामले में जोशी की गिरफ्तारी की है। ईडी जांच में पता चला कि जोशी ने घोटाले में लिए रुपयों को अपने परिजनों की फर्म में लगाया है।

भारत-पाक युद्ध ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

है। यह कोई नई बात नहीं है, पहले भी अंतरराष्ट्रीय मीडिया भारत के प्रति शत्रुतापूर्ण रहा है।

इन प्रतिक्रियाओं के मद्देनज़र, भारत को अब अपनी युद्ध क्षमता को बढ़ाना चाहिए और युद्धभूमि में कुछ ठोस जीत दर्ज करे और विश्व को अपनी विश्व को अपनी वास्तविक ताकत बताए। अब समय आ गया है कि भारत को ऐसी रणनीति अपनानी चाहिए, जिसकी कोई सीमा न हो।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू (राज.) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2009/28296 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600